CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरलिपि

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सौ गीतों का स्वरलिपि-बद्ध संकलन

खण्ड-1

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

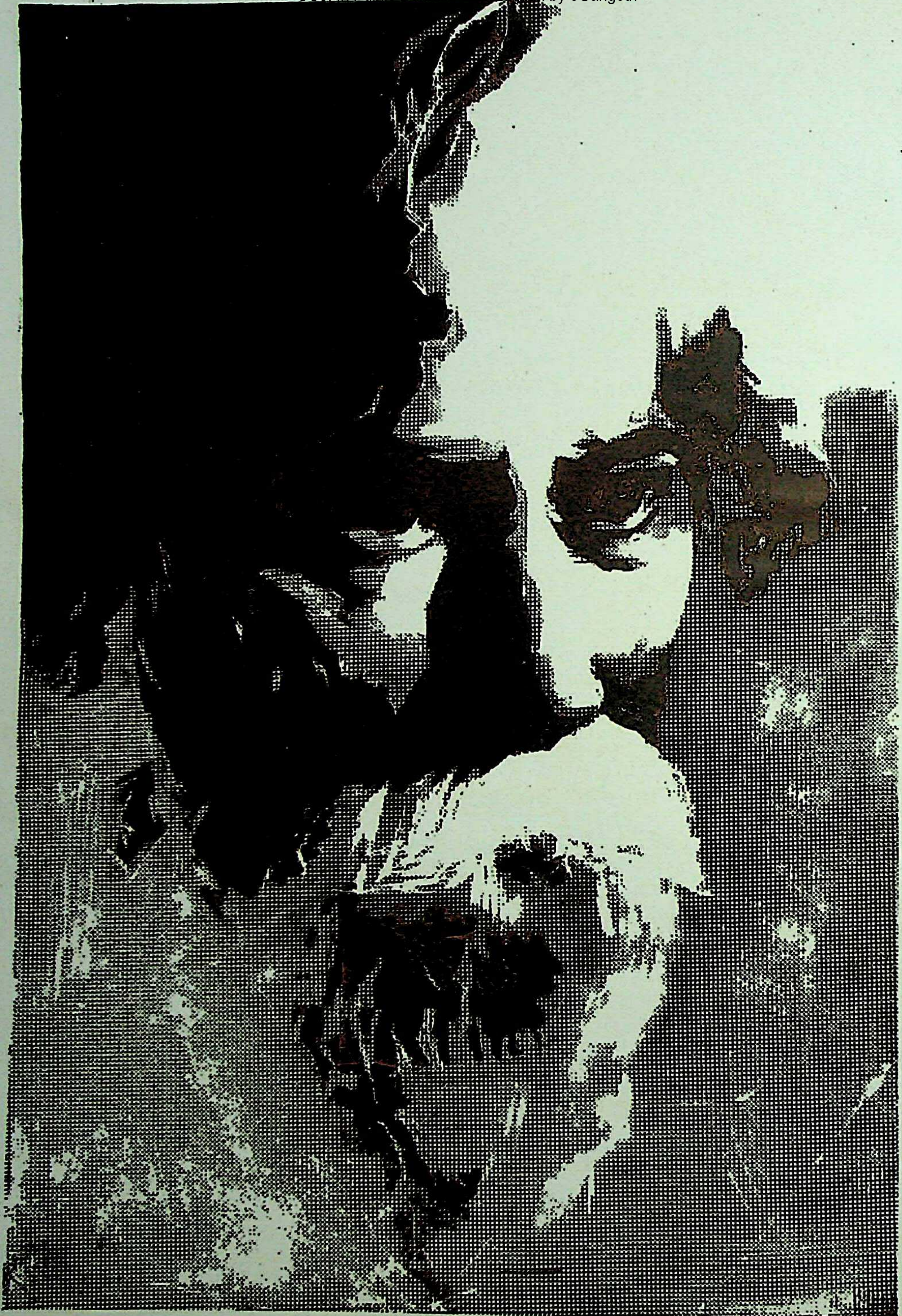

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरलिपि

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सौ गीतों का स्वरलिपि-बद्ध संकलन

खण्ड-1

संगीत नाटक अकादेमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

© संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली

प्रथम संस्करण 1961

मूल्य : 20 रुपया

संगीत नाटक अकादेमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित एवं प्रिंटर्स यूनाइटेड
दयानन्द रोड़, २१ दरियागंज, दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

के

सौ गीतों का

स्वरलिपि - बद्ध संकलन

खण्ड - 1

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्व-कवि

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

1861 - 1961

की

जन्म-शताब्दी की स्मृति में

संगीत नाटक अकादेमी

की

श्रद्धांजलि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राक्कथन

जयदेव, सूरदास, कबीर और मीरा की भाँति रवीन्द्रनाथ ठाकुर भारत के अमर गायक हैं। यही नहीं, अन्य अमर गायकों की तुलना में उनके गीतों का और उनके संगीत का विदेश में कहीं अधिक प्रसार हुआ है। उनके गीतों ने विश्व-भर के संगीतज्ञों और संगीत-प्रेमियों के हृदय में अपना स्थान बना लिया है।

अतएव, यह उचित ही है कि राष्ट्रीय संगीत-नाटक अकादेमी रवीन्द्र-शताब्दी समारोह के अवसर पर 'स्वर-लिपि' नामक उनके गीतों का यह संकलन प्रकाशित कर रही है।

इस संकलन में विश्व-कवि द्वारा रचित हज़ारों बल्कि असंख्य गीतों में से केवल एक सौ गीत समाविष्ट हुए हैं। संकलन का यह कार्य शांति-निकेतन की स्वर्गीया इंदिरा देवी चौधुरानी ने किया है और उन्हीं ने इन गीतों का वर्गीकरण और अनुक्रम तैयार किया है। संकलन में कवि के सर्वोत्तम गीत चुनने की अपेक्षा कवि की सर्वाधिक प्रतिनिधि रचनाएं प्रस्तुत करने की और अधिक ध्यान रखा गया है। यही कारण है कि इस संकलन में भक्ति-गीत, ऋतु-गीत, राष्ट्रीय गीत, पर्व-गीत आदि जन-साधारण के भाव-जीवन से सम्बन्धित विविध प्रकार के गीत एकत्रित हैं। यह संकलन ५०-५० गीतों के दो खण्डों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

राष्ट्रीय स्तर के ऐसे प्रकाशन के लिए एक राष्ट्रीय स्वर-लिपि की अनिवार्य आवश्यकता है। सम्प्रति देश में कई विभिन्न स्वर-लिपि प्रणालियाँ प्रचलित हैं। लिपियों की विविधता के अतिरिक्त उनमें और भी कई प्रकार के विभेद हैं। उनके पृथक-पृथक संकेत-चिन्ह हैं। इन कठिनाइयों के कारण बहुत दिनों से देवनागरी लिपि में एक प्रतिनिधि मानक स्वर-लिपि की आवश्कता का अनुभव किया जा रहा था। इसी उद्देश्य से संगीत नाटक अकादेमी ने भारतीय राष्ट्रीय स्वर-लिपि के निर्माण का कार्य अपने हाथ में लिया है। इस प्रयास के द्वारा संगीतात्मक अभिव्यक्ति की विभिन्न धाराओं के बीच सद्भावना के सेतु के निर्माण का कार्य तो सुगम होगा ही, साथ ही इसके माध्यम से विभिन्न प्रादेशिक संगीतों के लिपीकरण का कार्य भी सुगम हो जायेगा। विशेष रूप से लोक-संगीत की लिपि तैयार करने में इस मानक स्वर-लिपि से बहुत सहायता मिलेगी।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए संगीत नाटक अकादेमी ने विशेषज्ञों की एक विशेष समिति नियुक्त की थी जिनके परिश्रम के फलस्वरूप एक ऐसी स्वर-लिपि निर्धारित की जा सकी है जिसे देश भर में राष्ट्रीय स्तर पर मानक स्वरलिपि के रूप में व्यवहृत किया जा सकता है। इस लिपि में उन सभी स्वरलिपियों के सर्वश्रेष्ठ तत्व सम्मिलित कर लिये गये हैं जो इस समय देश के विविध अंचलों में प्रचलित हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अकादेमी की राष्ट्रीय स्वरलिपि के दो प्रधान तत्व ये हैं :—

अ— तीव्र और कोमल स्वर-युग्मों के अंतराल की श्रुतियों को संकेतित करने के लिए व्यवहृत ध्वनि-वर्ण-संकेत। इन संकेतों की आवश्यकता भारतीय संगीत के स्वरों के लिए ही नहीं, अपितु शुद्ध (untempered) पाश्चात्य संगीत के लिए भी है।

ब— आंशिक मात्राओं के यथोचित निर्धारण के लिए स्वरों के नीचे या ऊपर पड़ी रेखा का प्रयोग।

संगीत-नाटक अकादेमी का प्रस्तुत प्रकाशन अकादेमी द्वारा ग्रहीत राष्ट्रीय स्वरलिपि पद्धति का प्रथम प्रकाश है। इसका प्रथम प्रयोग रवीन्द्रनाथ की संगीत-रचनाओं को प्रस्तुत करने के लिए किया जा रहा है यह विशेष महत्व की बात है, क्योंकि रवीन्द्रनाथ राष्ट्र-पुरुष तो थे ही, उनके संगीत और गीतों के रूप में देश के जनों को उनसे अमर निधि भी प्राप्त हुई है।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि संगीत नाटक अकादेमी के आग्रह पर इस संकलन के लिए रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सौ गीतों का चयन शान्ति-निकेतन की स्वर्गीया श्रीमती इंदिरादेवी चौधुरानी ने किया था। संकलन का यह कार्य उन्होंने स्वर्गवास के कुछ ही दिनों पूर्व किया था। एक समय की बात है, रवीन्द्र-संगीत के विशेषज्ञ स्वर्गीय दीनेन्द्रनाथ ठाकुर और इंदिरादेवी में इस बात की होड़ लग गयी कि रवीन्द्र-संगीत का श्रेष्ठ ज्ञाता उन दोनों में से कौन है। दीनेन्द्रनाथ ठाकुर का दावा था कि रवीन्द्र-संगीत- विषयक उनका ज्ञान अधिक है। इंदिरादेवी इससे सहमत नहीं थीं, उनका कहना था कि उनका ज्ञान दीनेन्द्रनाथ ठाकुर के ज्ञान से बढ़कर है। बाद में दोनों में समझौता हो गया। यह तय पाया गया कि रविबाबू के परवर्ती गीतों के सम्बन्ध में दीनेन्द्रनाथ का ज्ञान इंदिरादेवी से बढ़-चढ़कर था लेकिन उनके प्रारंभिक गीतों का ज्ञान इंदिरादेवी को ही अधिक था। इसमें कोई संदेह नहीं कि रवीन्द्रनाथ के प्रारंभिक गीतों का सबसे अधिक ज्ञान इंदिरादेवी को ही था, और दीनेन्द्रनाथ के स्वर्गवास के बाद, रवीन्द्रनाथ के परवर्ती गीतों का ज्ञान भी उन्हीं को सबसे अधिक था। अतएव, मेरा विश्वास है कि उनके द्वारा प्रस्तुत रवीन्द्रनाथ के गीतों का यह संकलन सर्वाधिक संतोष दे सकेगा।

मैं समझता हूँ, पश्चिम को रवीन्द्रनाथ के गीतों का परिचय देने का अभी तक एक मात्र ही प्रयत्न हुआ है। यह प्रयत्न "दि ट्वेन्टी सिक्स सांग्स ऑफ रवीन्द्रनाथ टैगोर" नामक ग्रन्थ के रूप में किया गया है जिसका संपादन डा० आरनोल्ड ए० बाके और मो० फिलिप स्टर्न ने मिलकर किया है। पर केवल 26 गीतों के परिचय से किसी को संतोष नहीं हो सकता, क्योंकि रवीन्द्रनाथ ने अपने जीवन में ढाई हजार से भी अधिक गीतों की रचना की थी। यही कारण है कि मूल धुनों के साथ रवीन्द्रनाथ के गीतों का परिचय पाने की पश्चिम में निरंतर माँग की जाती रही है। साथ ही यह माँग भी की जाती रही है कि स्टाफ-स्वरलिपि में गीतों के लिप्यंतरण के अतिरिक्त उनका पाठानुवाद भी दिया जाना चाहिए। क्योंकि रवीन्द्र-संगीत की यह विशेषता है कि उसमें शब्द और स्वर अभिन्न रूप से मिले हुए हैं, और अर्थ-ज्ञान के बिना उनका स्वर-ज्ञान पूरा आनन्द नहीं दे सकता।

इसी उद्देश्य से संगीत नाटक अकादेमी ने रवीन्द्र शताब्दी समारोह के उपलक्ष में बँगला न जानने वाले जिज्ञासुओं को रवीन्द्र-संगीत का परिचय देने के लिए यह योजना तैयार की।

योजना की पूर्ति के लिए सबसे पहली आवश्यकता थी रवीन्द्र-संगीत के बृहद कोष में से उपयुक्त प्रतिनिधि गीतों का संकलन। संकलन करते समय इस बात पर दृष्टि रखना आवश्यक था कि रवीन्द्रनाथ ने जितने प्रकार के गीत रचे हैं उन सभी का सम्यक् प्रतिनिधित्व हो सके, यथा : भक्ति-गीत, प्रेम-गीत, ऋतु-गीत, राष्ट्रीय-गीत, पर्व-गीत आदि-आदि; साथ-ही, संकलित गीतों द्वारा रवीन्द्रनाथ की उस विशिष्ट प्रणाली का भी परिचय मिल सके जिसके आधार पर उन्होंने भारतीय संगीत के शास्त्रीय और लोक-तत्वों का समन्वय किया था। यही नहीं, यह भी आवश्यक था कि संकलित गीत रवीन्द्रनाथ के संगीत-प्रयोगों का और रूढ़ियों के प्रति उनके विद्रोह का भी सम्यक् आभास दे सकें क्योंकि ये दोनों तत्व रवीन्द्र-संगीत की मुख्य विशेषताओं में हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निस्संदेह यह दुस्तर कार्य था और यदि इंदिरादेवी जैसा उपयुक्त व्यक्ति न मिलता तो अकादेमी को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता। इंदिरादेवी में इस कार्य की अपूर्व क्षमता थी। एक ओर तो उन्हें पाश्चात्य और भारतीय संगीत का विस्तृत ज्ञान था, दूसरी ओर कवि की प्रिय भतीजी होने के नाते उन्हें रवीन्द्रनाथ की संगीत-प्रतिभा का घनिष्ठ परिचय प्राप्त हुआ था। सच तो यह है कि 19वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों तक वे ही रवीन्द्रनाथ के गीतों की विश्वस्त संरक्षिका थीं। जब तपोवन के आह्वान पर कवि शांति-निकेतन गये तभी उनके गीतों के संरक्षण का कार्य इंदिरादेवी के हाथों से निकलकर दीनेन्द्रनाथ ठाकुर के हाथ आया। फिर भी रवीन्द्र-संगीत में उनकी रुचि बराबर बनी रही और कुछ समय बाद वे फिर इन गीतों से घनिष्ठ सम्पर्क बना सकीं। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में तो वे शान्ति-निकेतन में ही आकर बस गयी थीं, जिसके फलस्वरूप कुछ वर्षों का यह व्यवधान भी मिट गया। कवि तो नहीं रहे पर उनके गीत अब भी गूंज रहे थे। शान्ति-निकेतन में जाकर बस जाने पर उन्होंने कवि के गीतों की इस गूंज को और भी गहरा और प्रभावोत्पादक बनाया।

गीतों का संकलन हो जाने के बाद अकादेमी ने योजना का अगला चरण उठाया और निश्चय किया कि :

1. संकलन 50-50 गीतों के दो खण्डों में प्रकाशित हो।

2. प्रत्येक खण्ड के दोनों रूपान्तरण प्रकाशित किये जायँ—एक रूपान्तरण पाश्चात्य पाठकों के लिए और दूसरा उन भारतीय पाठकों के लिए जो बँगला नहीं जानते।

3. पाश्चात्य पाठकों के लिए जो रूपान्तर प्रकाशित किया जाय उसमें बँगला अक्षरों को रोमन लिपि में लिखा जाय। साथ-ही, जो पाठक गीतों के भावों का आभास पाना चाहें उनकी सहायता के लिए स्वरलिपि के अन्त में गीतों का अंग्रेजी भावानुवाद भी प्रकाशित किया जाय।

4. बँगला न जानने वाले भारतीय पाठकों के लिए जो रूपान्तरण किया जाय उसमें मूल बँगला गीतों को देवनागरी लिपि में दिया जाय और गीतों की स्वरलिपि उस राष्ट्रीय प्रणाली में दी जाय जो अकादेमी ने विशेषज्ञों से परामर्श के उपरान्त निर्धारित की है।

क्या इन गीतों का कोई वर्गीकरण किया जा सकता है? ऐसे वर्गीकरण के केवल तीन ही प्रकार हैं : संगीतात्मक, चित्रात्मक और शब्दात्मक। यदि संगीतात्मक वर्गीकरण करना हो तो सर्वोत्तम उपाय यही है कि स्वरों पर आधारित स्वरलिपि के सहारे वर्गीकरण किया जाय। इसके लिए व्यंजनों का भी परित्याग करना पड़ेगा। इस प्रकार जो वर्गीकरण होगा वह राग और रागिनियों के रूप में होगा जिसमें मूलगत संगीत के लिए तालों का व्यवहार होगा। राग-रागिनियों के अनेक प्रकार हैं, कुछ शुद्ध और कुछ अशुद्ध। यदि वर्गीकरण रचनाक्रम से किया जाय तो वह संगीतात्मक वर्गीकरण के ढाँचे में नहीं बैठ सकेगा। यद्यपि प्रारम्भिक गीतों की रचना मुख्यतः शुद्ध रागों पर ही हुई थी और उनमें चौताल, दादरा, त्रिताल आदि तालों का ही व्यवहार हुआ है, फिर भी परवर्ती गीतों में अनन्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैविध्य है जिनमें क्रमशः 2, 3 या 4 मूल रागों का सम्मिश्रण है। रवीन्द्रनाथ के गीतों की आत्मा भारतीय रागों के अनुरूप होते हुए भी रवीन्द्रनाथ ने उनको नया रंग दे दिया है। इस कारण संगीतात्मक वर्गीकरण सचमुच बहुत कठिन लगता है और यदि केवल विशुद्ध संगीतात्मक वर्गीकरण को ध्यान में रखा जाय तो बहुत से गीतों को छोड़ देना पड़ेगा।

वर्गीकरण का दूसरा प्रकार है चित्रात्मक वर्गीकरण। चित्रात्मक वर्गीकरण से मेरा अर्थ है गीतों में वर्णित चित्रों से। वैसे यह कार्य असम्भव नहीं लगता। चित्रों को किसी न किसी क्रम में बैठाया अवश्य जा सकता है, चाहे काल-क्रमानुसार, अथवा उत्तर-दक्षिण प्रदेशों के अनुसार अथवा भाव-चित्रों के क्रमानुसार। पर इस वर्गीकरण में भी वही कठिनाई है। गीतों में भाँति-भाँति के असंख्य चित्र है और उनमें से बहुत-से ऐसे हैं जिन्हें किसी भी वर्गीकरण में समाविष्ट नहीं किया जा सकता। सच तो यह है कि चित्रात्मक वर्गीकरण में संगीतात्मक वर्गीकरण से भी अधिक कठिनाइयाँ है। हमारे युग में चित्र-व्यापार स्वर-व्यापार से अधिक प्रवल हैं

वर्गीकरण का तीसरा और अन्तिम प्रकार है—शब्दों और स्वरों के संश्लिष्ट रूप पर आधारित एक समन्वित वर्गीकरण। एक प्रकार से समस्त रवीन्द्र-संगीत का यही रूप है। कुछ गीत ऐसे अवश्य हैं जिनमें स्वरों का महत्व शब्दों से अधिक है, और बहुत-से ऐसे भी हैं जिनमें शब्दों का महत्व स्वरों से अधिक है पर शायद ही कोई ऐसा गीत हो जिसमें शब्द और अर्थ एक दूसरे से भिन्न हों। रवीन्द्रनाथ द्वारा रचित ढाई हजार से भी अधिक गीतों में से अधिकांश गीत शब्दों और स्वरों के मेल पर आधारित हैं। प्रस्तुत संकलन में जो सौ गीत एकत्रित हैं उनमें सभी प्रकार के गीत हैं—भक्ति-आल्हाद के, ग्रीष्म, पावस, शरद, हेमन्त, शिशिर और वसन्त आदि ऋतुओं के। इनके अतिरिक्त नटराज और शिव के गीत, जन–जन के जय–गीत, श्रमिक और कृषकों के गीत, यौवन के गीत, मातृ-भूमि के प्रति कवि के प्रेम के गीत, लोक-जीवन के नानाविध चित्रों और प्रणय के गीत। कम से कम चार गीत ऐसे भी हैं जो शास्त्रीय धुनों में बँधे हैं, दो गीत नयी धुनों के हैं, और चार गीत आल्हाद-प्रधान हैं। व्यक्तिगत रूप से मेरा मत है कि प्रयोग और अधिक देने चाहिए थे क्योंकि रवीन्द्रनाथ के लगभग एक सहस्र गीतों में प्रयोग है और उनमें कम से कम सौ गीत बड़े ही सुन्दर बन पड़े हैं। यदि भक्ति-गीतों को छोड़ दें तो स्वर-चित्र और चित्रों के समन्वित प्रभाव की दृष्टि से ऋतु-गीत सर्वोत्तम हैं।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि रवीन्द्रनाथ के केवल सौ गीत उपस्थित करना यथेष्ट नहीं है। उनके और भी कई ऐसे गीत हैं जिन्हें मैं इस संकलन में सम्मिलित करना चाहता। पर ऐसा एक भी गीत नहीं है जिसे छोड़ा जा सके। क्या यह श्रीमती इंदिरादेवी चौधुरानी के संकलन की श्रेष्ठता नहीं है?

—धूर्जटी प्रसाद मुकर्जी

१ अक्तुबर १९६१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आभार

इस संकलन के प्रकाशक के रूप में संगीत नाटक अकादेमी, नयी दिल्ली, गीतों के चयन के लिए स्वर्गीया श्रीमती इंदिरादेवी चौधुरानी के प्रति, प्राक्कथन के लिए श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय के प्रति और भूमिका के लिए स्वर्गीय प्रो० धूर्जटीप्रसाद मुकर्जी के प्रति अपना आभार प्रकट करती है।

हम प्रो० एंतशर लोबो के विशेष रूप से कृतज्ञ हैं जिन्होंने इस प्रकाशन को सर्वांग सम्पूर्ण बनाने के लिए हमें समय-समय पर अपना बहुमूल्य परामर्श दिया है। उन्हीं के परामर्श का यह फल है कि हम संगीत नाटक अकादेमी द्वारा निर्धारित राष्ट्रीय स्वरलिपि में यह प्रथम ग्रन्थ प्रकाशित कर सके हैं। उनके दिशा-निर्देश और अमूल्य परामर्श के बिना यह प्रकाशन सम्भव नहीं था।

हम डा० कुमारी ऋीना राय के प्रति भी कृतज्ञ हैं जिन्होंने रवीन्द्रनाथ के मूल गीतों की अकादेमी स्वरलिपि तैयार की है। श्री शान्तिदेव घोष ने स्वरलिपि की जाँच के लिए इन गीतों को मूल धुनों में गाकर सुनाने की कृपा की है और श्री भारतभूषण अग्रवाल और श्री कोमल कोठारी ने इस ग्रन्थ के प्राक्कथन, भूमिका और टिप्पणियों का मूल अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करने का कष्ट किया है। हम इस कृपा क लिए आभारी हैं। हम अपनी सहयोगिनी संस्था साहित्य अकादेमी के भी आभारी हैं जिन्होंने हमें अपने प्रकाशन 'गीतपंचशती' से रवीन्द्रनाथ के इन गीतों का शब्दार्थ सहित देवनागरी पाठ उद्धृत करने की अनुमति दी है और उसके परिशिष्ट का वह अंश उद्धृत करने की अनुमति दी है जिसमें बँगला शब्दों के उच्चारण की विशेषताएँ दी गई हैं। हम श्री युगजीत नवलपुरी के भी कृतज्ञ हैं जिन्होंने इस संकलन में समाविष्ट दस गीतों के शब्दार्थ देने की कृपा की है।

विश्वभारती विश्वविद्यालय ने हमें इन गीतों का उपयोग करने की अनुमति देकर और विश्व-भारती सोसाइटी के म्यूजिक बोर्ड ने अकादेमी स्वरलिपि पद्धति में रूपान्तरण के लिए अपनी स्वरलिपियों के उपयोग की अनुमति देकर हमें कृतार्थ किया है। हम उनके हृदय से आभारी हैं। मैसर्स प्रिन्टर्स यूनाइटेड, देहली ने इस जटिल प्रकाशन के मुद्रण में जो बहुमूल्य सहयोग दिया है उसका उल्लेख करना भी हम आवश्यक समझते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संगीत नाटक अकादेमी द्वारा स्वीकृत

राष्ट्रीय स्वरलिपि

स्वरलिपि की ध्वनि-वर्ण पद्धति

अकादेमी ने स्वरलिपि के लिए ध्वनि–वर्ण–पद्धति स्वीकार की है। इस पद्धति के अनुसार स्वर सप्तक में रिषभ, गंधार, मध्यम, धैवत और निषाद नामक स्वरों के चार भिन्न–भिन्न स्वरूप माने गये हैं। प्रत्येक स्वर के इन चार भिन्न रूपों को चढ़ाव के क्रम से व्यक्त करने के लिए ओ, आ, ए, ई मात्राओं के साथ लिखना स्वीकार किया गया है। चार रूप इस प्रकार हैं :—

			अतिकोमल	कोमल	तीव्र	तीव्रतर
रिषभ	...	...	रो	रा	रे	री
गंधार	...	...	गो	गा	गे	गी
मध्यम	...	...	मो	मा	मे	मी
धैवत	...	...	धो	धा	धे	धी
निषाद	...	...	नो	ना	ने	नी

ध्वनि–वर्ण–स्वरलिपि पद्धति के अनुसार किसी भी राग अथवा कृति में आने वाले स्वरों को राग–लक्षण के रूप में राग अथवा कृति के पूर्व ही लिख देना चाहिए। भारतीय संगीत के स्वरों को यदि हम मूल व्यंजन–रूप से देवनागरी में लिखें तो उनका स्वरूप स, र, ग, म, प, ध, न होगा। किन्तु इन्हीं स्वरों को ध्वनि–वर्ण–पद्धति के सप्तक में सा, रि, ग, म, प, ध, नि के रूप में उच्चारित किया जायेगा।

यदि किसी राग अथवा कृति में एक ही स्वर के कोमल और तीव्र स्वरूप एक सांथ आ जायें तो उसके असामान्य रूप को ध्वनि–वर्ण–पद्धति के द्वारा सहज ही व्यक्त किया जा सकता है।

किसी भी स्वर के कोमल–अतिकोमल एवं तीव्र–तीव्रतर रूप की स्थिति का अंतराल एक प्रमाण श्रुति (22 सेण्ट्स) होगा जबकि किसी भी स्वर के कोमल और तीव्र स्वर की स्थिति में 70 सेण्ट्स का अंतराल होगा। स्वरों के बीच का अन्य सामान्य अंतराल पैथोगोरियन लीमा (Pythagorean Limma) के अनुसार 90 सेण्ट्स रहेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस दृष्टि से श्रुतियों का स्वरूप यह होगा:–

स रो रा रे री गो गा गे गी मो

90 22 70 22 90 22 70 22 90

मो मा मे मी प

22 70 22 90

प धो धा धे धी नो ना ने नी सं

90 22 70 22 90 22 70 22 90

विशेष:—कुछ विशिष्ट स्थितियों में **स** और **प** के तुरन्त पहले दो श्रुतियों में कुछ परिवर्तन हो जाता है जैसे–तोड़ी और मारवा में।

2. सप्तक के चिन्ह

तार सप्तक को व्यक्त करने के लिए स्वरों के ऊपर एक बिन्दु का प्रयोग किया गया है जैसे सं, रं। इसी प्रकार मंद्रसप्तक में स्वरों के नीचे एक बिन्दु का प्रयोग किया गया है जैसे म़ प़। मध्यसप्तक के स्वरों पर कोई चिन्ह नहीं होगा। अति–तारसप्तक एवं अनुमंद्र सप्तक को व्यक्त करने के लिये दो बिन्दु ऊपर अथवा दो बिन्दु नीचे अंकित किये जायेंगे जैसे अतितार सप्तक:– स̈ र̈ अनुमंद्र सप्तक:– न॒॒।

3. स्वर का काल

(अ) स्वर स्वभावत: अपने काल की इकाई को व्यक्त करेगा जैसे **स** एक मात्रा है। आधी मात्रा के स्वर के नीचे एक पड़ी रेखा (जैसे स̲) एवं ¼ मात्रा को दो पड़ी रेखाओं (जैसे स̳) से और 1/8 मात्रा को तीन पड़ी रेखाओं (जैसे स≡) से व्यक्त किया जायेगा।

(ब) एक मात्रा से अधिक समय लेने वाले स्वर को अवग्रह चिन्ह ऽ से व्यक्त किया जायेगा। स्वर में जितनी मात्राएँ लगानी हों उतने ही अवग्रह चिन्ह देने होंगे। स्वरों के मात्रा–विभाजन की भाँति अवग्रह के नीचे एक पड़ी रेखा से वह आधी मात्रा का, दो पड़ी रेखाओं से ¼ मात्रा का, एवं तीन पड़ी रेखाओं से 1/8 मात्रा का हो जायेगा। जैसे–**स** ऽ दो मात्रा का है, **स** ऽ ऽ ऽ चार मात्रा का है और **स** ऽ ऽ̲ ढाई मात्रा का है। गीत के पाठ में स्वराकार का विकास बिन्दुओं से बनाया जायेगा जैसे– शा ० ० म।

स्पष्टीकरण के लिए कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं:—

1 मात्रा स

आधी मात्रा स र (½ ½) = एक मात्रा

चौथाई मात्रा स र ग म (¼ ¼ ¼ ¼) = एक मात्रा

⅛ मात्रा स र ग म प ध न स (⅛ ⅛ ⅛ ⅛ ⅛ ⅛ ⅛ ⅛) = एक मात्रा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इससे भी अधिक जटिल मात्रा–विभाजन को निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं:–

स र ग ($\frac{1}{4}$ $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{4}$) = एक मात्रा   स र ग ($\frac{1}{4}$ $\frac{1}{4}$ $\frac{1}{2}$) = एक मात्रा   स ऽग ($\frac{3}{4}$ $\frac{1}{4}$) = एक मात्रा

स र ग म प ध ($\frac{1}{8}$ $\frac{1}{8}$ $\frac{1}{8}$ $\frac{1}{8}$ $\frac{1}{4}$ $\frac{1}{4}$) = एक मात्रा

(ख) मात्राओं के कुछ अन्य विभाजन जैसे $\frac{1}{3}$ मात्रा, $\frac{1}{6}$ मात्रा, $\frac{1}{8}$ मात्रा अथवा $\frac{1}{12}$ मात्रा आदि के लिए निम्नलिखित चिह्न स्वीकार किये गये हैं: स्वरों के ऊपर एक पतली चंद्राकार रेखा होगी और उसपर मात्रा-विभाजन का अंक लिख दिया जायेगा और नीचे आवश्यकतानुसार पड़ी रेखायें दी जायेंगी जैसे:–

3
स र ग का अर्थ है प्रत्येक स्वर के लिये $\frac{1}{3}$ मात्रा–भाग

5
स र ग म प प्रत्येक स्वर के लिये $\frac{1}{5}$ मात्रा-भाग

6
स र ग म प ध प्रत्येक स्वर के लिये $\frac{1}{6}$ मात्रा भाग

12
स र ग म प ध न सं रं गं मं पं प्रत्येक स्वर के लिये $\frac{1}{12}$ मात्रा भाग

(द) मात्राओं के इससे भी जटिलतर विभाजन इस प्रकार लिखे जा सकते हैं :—

6
स ऽ र ग म प ($\frac{1}{3}$ $\frac{1}{6}$ $\frac{1}{6}$ $\frac{1}{6}$ $\frac{1}{6}$) = एक मात्रा

6
स र ऽ ग म ($\frac{1}{6}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{6}$) = एक मात्रा

3
स ऽ र ग म ($\frac{1}{3}$ $\frac{1}{6}$ $\frac{1}{4}$ $\frac{1}{4}$) = एक मात्रा

(पद्धति को समझाने के लिये इस उदाहरण में मात्रा-विभाजन के जो अंक यहाँ दिये हैं वे स्वरलिपि में नहीं लिखे जायेंगे)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

(इ) $\frac{2}{3}$ मात्रा को व्यक्त करने के लिये स्वर-त्रयी के नीचे पड़ी रेखा खींचने की बजाय स्वरों के ऊपर पतला वर्गाकार ब्रैकेट लगाकर अंक लिखना होगा जैसे :-

3
स र ग =2 मात्रा। प्रत्येक स्वर के लिये $\frac{2}{3}$ मात्रा।

विश्रांति के लिए 0 (शून्य) चिन्ह का प्रयोग करना चाहिए और जहाँ विश्रांति काल 1/2 अथवा 1/4 हो वहाँ स्वरों के मात्रा-विभाजन के अनुसार ही पड़ी रेखाओं का प्रयोग करना चाहिए। जैसे— 0 स ($\frac{1}{2}$ $\frac{1}{2}$) 0 स ($\frac{1}{4}$ $\frac{1}{4}$)

4. **सहज अलंकरण**

(अ) उल्लसित—ऊपर की ओर जाने वाले स्वरों की घसीट (Glide) / (नीचे से ऊपर) इस प्रकार की तिरछी रेखा द्वारा एवं नीचे की ओर जाने वाली घसीट इस प्रकार की \ (ऊपर से नीचे) तिरछी रेखा द्वारा व्यक्त करनी चाहिये।

(ब) मींड को व्यक्त करने के लिये स्वरों पर मोटी चंद्राकार रेखा अंकित करनी चाहिये। जिस स्वर से मींड लेनी है और जिस स्वर तक जाना है उनके ठीक ऊपर यह चंद्राकार रेखा होनी चाहिये जैसे—

स⌒प

(स) कम्पित गमक के लिए स्वर के ऊपर लहराती रेखा अंकित करनी चाहिए जैसे ग̃ अलंकरण-संबंधी अन्यान्य चिन्ह विकसित स्वरलिपि में बताये जायेंगे। कण स्वरों को छोटे टाइप में स्वर के बायें कोने पर अंकित किया जाना चाहिए जैसे—पम

जब हमें किसी स्वर को अपने स्वर-स्थान से पृथक जगह पर लगाना है तो धन (+) अथवा ऋण (—)चिन्ह से अंकित करना होगा। यदि हमें स्वर के ऊँचे स्तर पर जाना है तो धन (+) का चिन्ह होगा। इन चिन्हों की आवश्यकता मुख्यतया कर्नाटक संगीत को स्वर-लिपिबद्ध करते समय होती है।

5. **सम, ताली और खाली के चिन्ह**

अंक 1 (एक) सम को और 0 (शून्य) खाली को तथा ताली को ताल के क्रम एवं विभाजन के अनुसार 2, 3, 4 अंको में व्यक्त किया जायेगा। गीत अथवा रचना की लय (अर्थात विलंबित, मध्य एवं द्रुत) को रचना के प्रारंभ में ही लिख देना चाहिए। रचना की ताल को नाम से ही व्यक्त कर देना चाहिए। इसी प्रकार ताल-जाति, अंग और गति को भी उचित चिन्हों द्वारा बता देना चाहिए। जहाँ आवश्यक हो वहाँ लय को प्रति मिनिट की मेट्रोनोम (अर्थात दोलन संख्या) मात्रा के अनुसार लिख देना चाहिए जैसे 60 मेट्रोनोम मात्रा प्रति मिनिट अथवा 90 मेट्रोनोम मात्रा प्रति मिनिट।

अकादेमी ने अन्तर्राष्ट्रीय फिलहार्मोनिक पिच (International Philharmonic Pitch) को ध्यान में रखते हुए यह निश्चय किया है कि मध्य स्थायी षड्ज अथवा मध्य 'स' को 256 कंपन प्रति सैकंड का माना जाय।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अकादेमी की स्वरलिपि में प्रयुक्त शुद्ध स्वर, शुद्ध सप्तक (International Diatonic Scale Major) में व्यवहार किये जाने वाले स्वर हैं। स्वर सप्तक का यह स्वरूप हमें बिलावल थाट अथवा शंकराभरण मेल में मिलता है।

शुद्ध सप्तक (बिलावल) के शुद्ध स्वर, श्रुतियों और सेण्टों में नीचे दिये जा रहे हैं। साथ ही उनका अनुपात भी दिया जा रहा है।

		4		3		2		4		3		4		2	
श्रुतियाँ →	स		री		गे		मो		प		धे		ने		सं
सेण्ट्स →		204		182		112		204		182		204		112	
अनुपात →	1		$\frac{9}{8}$		$\frac{5}{4}$		$\frac{4}{3}$		$\frac{3}{2}$		$\frac{5}{3}$		$\frac{15}{8}$		$\frac{2}{1}$

उपरोक्त स्वरग्राम को तुलनात्मक दृष्टि से समझने के लिए निम्नलिखित भैरवी की श्रुतियों, सेण्टस एवं अनुपात को देखिए :—

		2		4		3		4		2		4		3	
श्रुतियाँ →	स		रा		गा		मो		प		धा		ना		सं
सेण्ट्स →		112		204		182		204		112		204		182	
अनुपात →	1		$\frac{16}{15}$		$\frac{6}{5}$		$\frac{4}{3}$		$\frac{3}{2}$		$\frac{8}{5}$		$\frac{9}{5}$		$\frac{2}{1}$

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरलिपि–परिचय

संगीत नाटक अकादेमी द्वारा ग्रहीत मानक स्वरलिपि की मुख्य विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत कृति में व्यवहृत सरगम स्वरों को उनके **स र ग म प ध न** मूल व्यंजनों से निर्देशित किया जाता है।

यदि किसी कृति में सप्तक नं० 0 यानी बिलावल थाट का प्रयोग हुआ है तो राग-लक्षण या संगीत-लक्षण में उसका ज्ञान 'सब स्वर शुद्ध' कथन से मिल जायेगा और स्वरलिपि में प्रयुक्त मूल व्यंजन उस सप्तक के सामान्य सात स्वरों का निर्देश करेंगे। (देखिए फलक नं० 5)

इसी प्रकार यदि किसी कृति में सप्तक नं० 4 यानी भैरवी थाट का प्रयोग हुआ है तो उसके लक्षण में 'रिषभ, गन्धार, धैवत् और निषाद कोमल' लिखा मिलेगा, और स्वरलिपि में व्यवहृत मूल व्यंजन उन्हीं सात स्वरों का निर्देश करेंगे जो सप्तक नं० 4 में सामान्यत: प्रयुक्त होते हैं और जिनमें चार स्वर कोमल होते हैं। अन्य सप्तकों के सम्बन्ध में भी यही सिद्धांत लागू होता है।

(देखिए फलक नं० 5)

परन्तु जब किसी राग या कृति में ऐसे स्वर प्रयुक्त होते हैं जिनका उसमें सामान्यतः व्यवहार नहीं होता, तो ऐसे स्वरों का ध्वनि-वर्णों द्वारा स्पष्ट संकेत कर दिया जायेगा। उदाहरण के लिए भैरवी में सामान्यतः व्यवहृत होने वाले सात स्वर मूल व्यंजन के रूप में ही लिखे जायेंगे, पर ऐसे अतिरिक्त स्वर जो सामान्यत: भैरवी सप्तक में प्रयुक्त नहीं होते, यथा तीव्रतर रिषभ, तीव्र गंधार और तीव्र निषाद, स्पष्टत: **री, गे** और **ने** के रूप में लिख दिए जायेंगे। प्रस्तुत प्रकाशन में ये अतिरिक्त स्वर मोटे टाइप में छापे गए हैं ताकि उन्हें सप्तक के मूल स्वरों से अलग पहचानने में कोई कठिनाई न हो। वैसे इन स्वरों को संकेत करने का यह सिद्धान्त समझ लेने के बाद इन अतिरिक्त स्वरों को सामान्य टाइप में भी छापा जा सकता है।

पंचमी-क्रम और गन्धार-क्रम पर आधारित कोमल-अतिकोमल और तीव्र-तीव्रतर स्वर-युग्मों के प्रमाण-श्रुति-भेद के अधिक स्पष्टीकरण के लिए फलक 1, 2, 3 और 4 देखें।

स्वरों का काल और लय

अकादेमी स्वरलिपि की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है: किसी मात्रा के आंशिक काल को संकेतित करने के लिए स्वरों के नीचे पड़ी रेखा का उपयोग। इस प्रकार स̲ और स̳ क्रमशः उस स्वर की आधी अथवा चोथाई मात्रा बताते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

स्वर के काल-प्रसार का संकेत करने के लिए अवग्रह ऽ का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार स ऽ और स ऽ ऽ क्रमशः स्वर की दो मात्रा और 2½ मात्रा बताते हैं। काल की अन्य जटिलताएँ 'राष्ट्रीय-स्वरलिपि' शीर्षक अध्याय में भली प्रकार समझा दी गई है।

कृति की लय मोटे तौर पर तीन वर्गों में विभाजित की गई है: विलम्बित लय, मध्य लय और द्रुत लय। प्रति मिनट 60 या उससे कम मात्राएँ विलम्बित लय कहलायेंगी। प्रति मिनट 60 मात्राओं से 120 मात्राओं तक मध्य लय होगी। 120 मात्राओं से ऊपर की लय द्रुत लय मानी जायेगी। संगीत लक्षण में लय का परिचय मेट्रोनोम के माप के अनुसार प्रति मिनिट मात्राओं में दिया जायेगा। यथा प्रसंगानुसार मम=60 मात्रा, मम=120 मात्रा, मम=200 मात्रा।

पुनरावृत्ति और समाप्ति के संकेत

यदि किसी कृति का कोई खण्ड दुहराया जाना होगा तो उस खण्ड के प्रारम्भ और अन्त में दुहरी खड़ी रेखायें दे दी जायेंगी। खण्ड के प्रारम्भ की खड़ी रेखाओं में पहली मोटी होगी और दूसरी पतली ‖ पर अन्त की खड़ी रेखाओं में पहली पतली होगी और दूसरी मोटी ‖

अगर किसी खण्ड की पहली समाप्ति दूसरी समाप्ति से भिन्न होगी तो समाप्ति के दोनों रूप इस प्रकार दिखाए जायेंगे :--

				1°				2°				
‖ स	र	ग	म	प	ऽ	ऽ	ऽ ‖	ग	ऽ	ऽ	ऽ	

इसी प्रकार यदि किसी खण्ड का पहला प्रारम्भ दूसरे प्रारम्भ से भिन्न होगा तो प्रारम्भ के दोनों रूप इस प्रकार दिखाये जायेंगे :—

1°				2°							
स	प	म	ग ‖	स	स	म	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ ‖

ताल के प्रारम्भ में मोटी खड़ी रेखा। का प्रयोग होगा। ताल के अन्य भागों के लिए पतली खड़ी रेखा । का प्रयोग किया जायेगा।

कृति के पूरे खण्ड के गायन की समाप्ति का संकेत देने के लिए उल्टे चन्द्र-अनुस्वार ͡ का प्रयोग किया जायगा।

अधिकतर कृतियां 'अ' 'ब' 'स' 'द' आदि खण्डों में विभाजित हैं। 'अ' खण्ड में साधारणः प्रधान और गौण कथा-वस्तु दी गई है।

जब कभी खण्ड 'ब' या 'द' के बाद खण्ड 'अ' गाना हो तो खण्ड 'अ' को दुहरी खड़ी रेखाओं के पुनरावृत्ति-चिन्हों का ख्याल किये बिना समाप्ति-सूचक चंन्द्र-अनुस्वार तक सिर्फ एक बार ही गाना चाहिए।

—एंतशर लोबो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

फलक 1

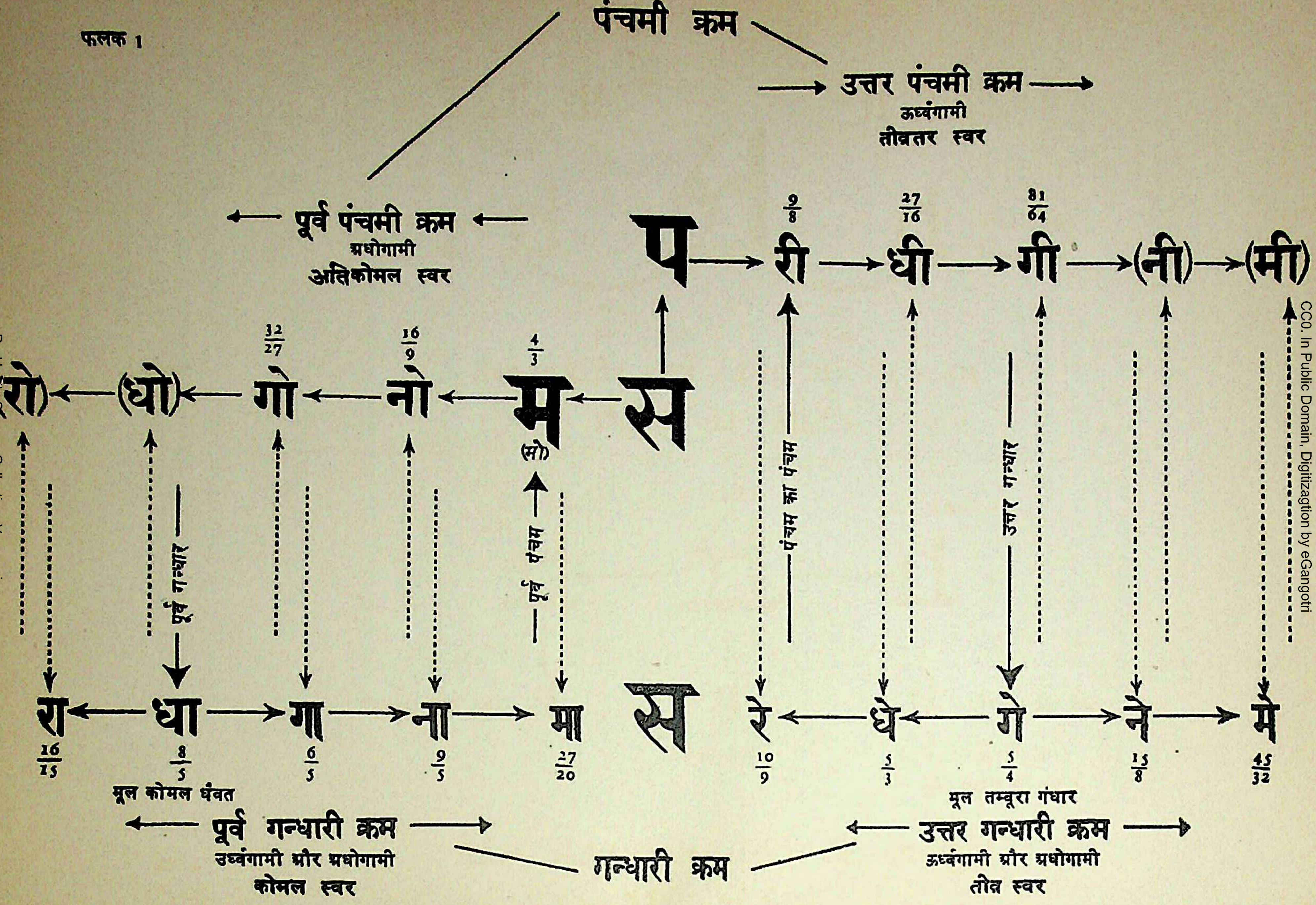

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फलक 2

शुद्ध सप्तक

षड़ज, पंचम और गंधार पर आधारित

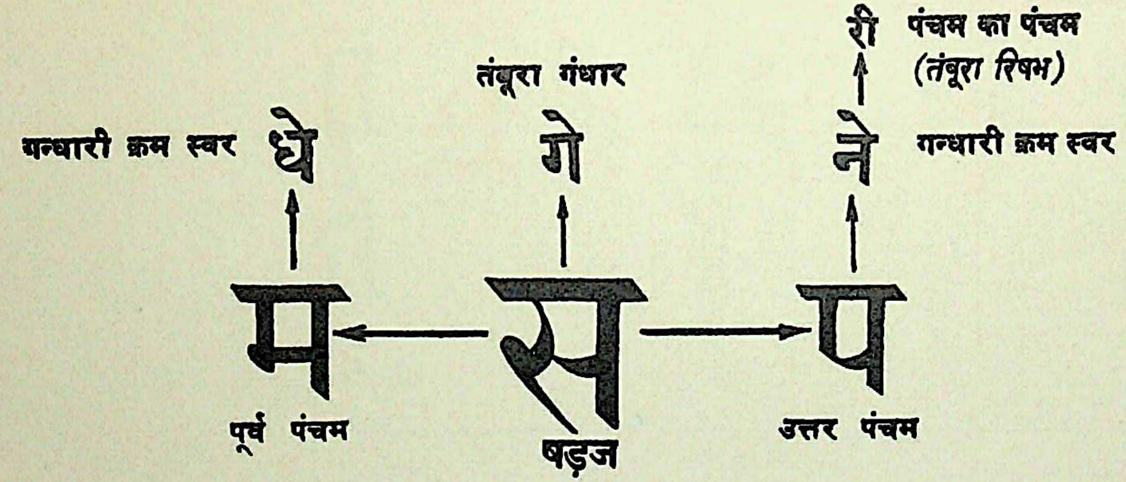

फलक 3

श्रुतियों का आधार

उत्तर और पूर्व पंचम, उत्तर और पूर्व गन्धार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

फलक 4

शुद्ध सप्तक

पंचमी क्रम और गन्धारी क्रम पर आधारित श्रुतियाँ

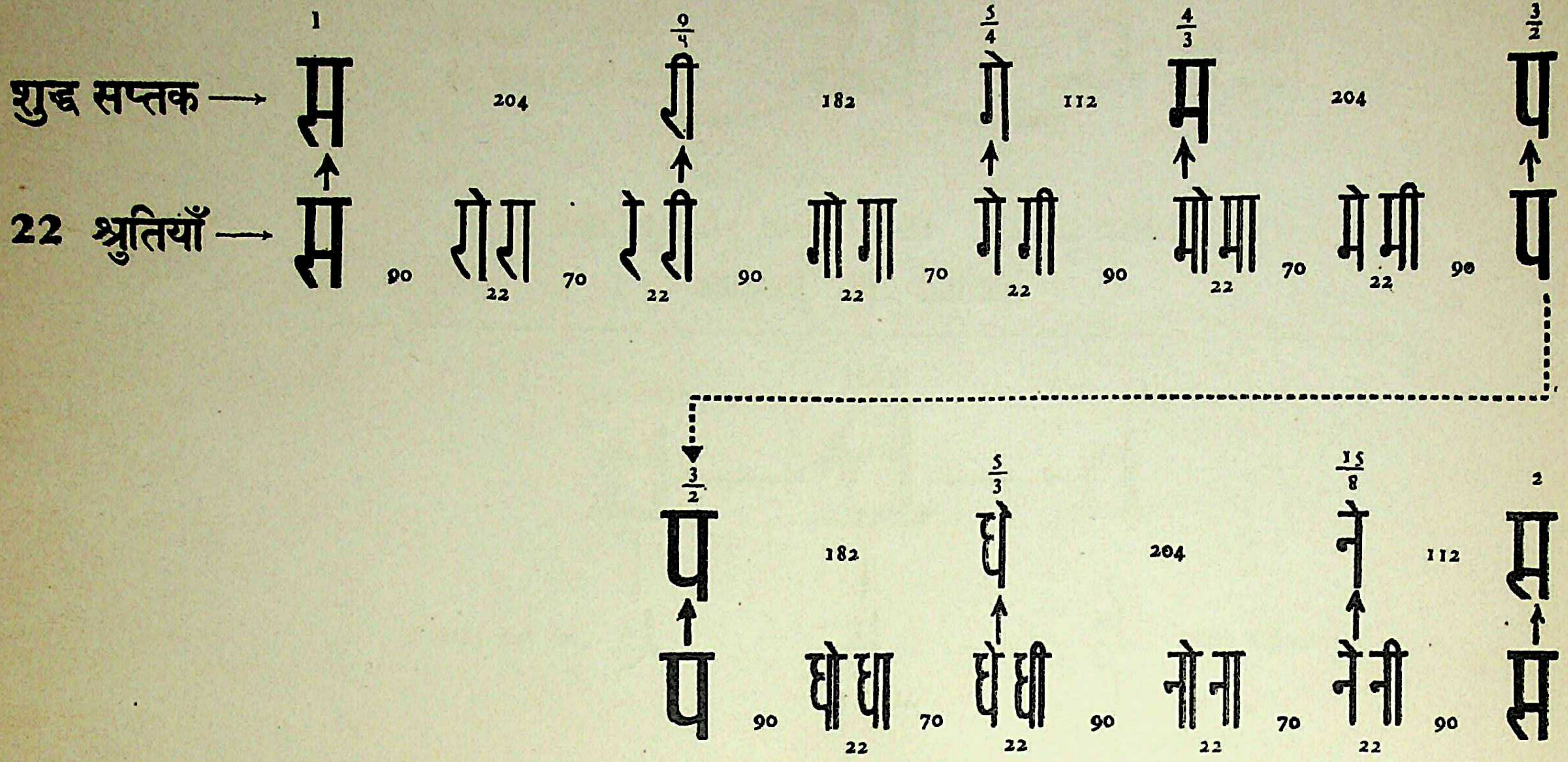

पंचमी क्रम के, रो, मी, धो, नी आदि स्वर साधारणतः 2 या 5 सेण्ट घटते बढ़ते रहते हैं

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्ध सप्तक और 6 सामान्य सप्तकों की तुलना

अतिकोमल-कोमल **गो-गा, नो-ना,** एवं तीव्र-तीव्रतर **रे-री, धे-धी** युग्मों का प्रमाण श्रुति-भेद

सप्तक नं० 0		स			री			गे	म		प		धे		ने	सं
शुद्ध (बिलावल)	स्वरलिपि→	स			र			ग	म		प		ध		न	सं
सप्तक नं० 1		स			री			गे	म		प		धे	नो		सं
1 अति कोमल (खमाज)	स्वरलिपि→	स			र			ग	म		प		ध	न		सं
सप्तक नं० 2		स		रे		गो			म		प		धे	नो		सं
2 अति कोमल (काफ़ी)	स्वरलिपि→	स		र		ग			म		प		ध	न		सं
सप्तक नं० 3		स			री		गा		म		प	धा			ना	सं
3 कोमल (आसावरी)	स्वरलिपि→	स			र		ग		म		प	ध			न	सं
सप्तक नं० 4		स	रा				गा		म		प	धा			ना	सं
4 कोमल (भैरवी)	स्वरलिपि→	स	र				ग		म		प	ध			न	सं
सप्तक नं० 5		स			री			गे		मे	प		धी		ने	सं
1 तीव्र (कल्याण)	स्वरलिपि→	स			र			ग		म	प		ध		न	सं
सप्तक नं० 6		स	रा					गे	म		प	धा			ने	सं
2 कोमल (भैरव)	स्वरलिपि→	स	र					ग	म		प	ध			न	सं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बँगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ

प्रस्तुत संकलन में विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के चुने हुए सौ गीतों का मूल पाठ नागराक्षरों में प्रकाशित किया जा रहा है। गीतों की स्वरलिपि संगीत नाटक अकादेमी द्वारा निर्धारित प्रणाली में दी गयी है। गीतों के मूल पाठ में बँगला में आये हुए शब्द हू-ब-हू ज्यों के त्यों देवनागरी में लिख दिये गये हैं। उनको पढ़ते समय बँगला उच्चारण का ध्यान रखना उचित होगा। बँगला उच्चारण की अपनी विशेषताएँ हैं। हिन्दी उच्चारण से वह भिन्न प्रकार का है। बँगला शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण के लिए उन विशेषताओं की जानकारी आवश्यक है। पाठकों के सुभीते के लिए बँगला उच्चारण की इन विशेषताओं का परिचय नीचे दिया जा रहा है।

(1) बँगला में 'अ' का उच्चारण हिन्दी के 'अ' जैसा नहीं होता। वह 'अ' और 'ओ' के बीच में होता है, जैसे अंग्रेजी के 'not' में 'o'। बँगला में लिखते हैं 'खाव', लेकिन पढ़ते हैं 'खावो' जैसा।

(2) ह्रस्व और दीर्घ इ, उ के उच्चारण में बँगला में काफ़ी स्वतन्त्रता है। यह लचीलापन हिन्दी में नहीं है। दीर्घ ई और ऊ अगर पद के आदि में हों तो उनका उच्चारण प्रायः ह्रस्व-जैसा होता है, जैसे, 'ईश्वर' का उच्चारण 'इश्वर' और 'पूजा' का 'पुजा' होगा।

(3) एकार का उच्चारण 'ए' और 'ऐ' के बीच जैसा होता है, जैसे बँगला 'एक' में 'ए' का उच्चारण हिन्दी के 'ऐसा' में 'ऐ' के समान होता है।

(4) ऐकार का उच्चारण 'ओइ' जैसा होता है, जैसे, 'ऐकतान'— ओइकतान।

(5) अनुस्वार के उच्चारण में 'ग' का अंश निहित रहता है, जैसे, हिमांशु—हिमांग्शु।

(6) हिन्दी के समान, पद का अन्त्य वर्ण प्रायः हलन्त उच्चरित होता है, जैसे, आमार—आमार्, आँधार—आँधार्। लेकिन कविता में छन्दानुरोध से 'अ' के उच्चारण का भी अनुसरण होता है, जैसे, 'बकुल-वागान' में 'वकुल' का उच्चारण बकुल (ो) जैसा भी हो सकता है।

(7) बँगला में 'क्ष' का उच्चारण पद के आदि में वरावर 'ख' होगा, जैसे, क्षिति—खिति; क्षमा—खमा। लेकिन अन्यत्र 'क्ष' का उच्चारण 'क्ख' होगा, जैसे, लक्षण—लक्खण।

(8) बँगला में 'ण' और 'न' दोनों का उचारण सदा 'न' ही होता है।

(9) बँगला में 'व' और 'व' का अन्तर नहीं है। ये दोनों ही 'ब' पढ़े जाते हैं। तत्सम शब्दों के लिखने में भले ही 'व' को 'व' ही लिखा जाय लेकिन उसका उच्चारण 'ब' होता है। जैसे लिखा तो 'विवश' जाता है लेकिन पढ़ा 'विवश' जाएगा।

(10) अगर किसी दूसरी भाषा का कोई शब्द अपनाना पड़े और उसमें 'व' का उच्चारण रहे तो उसके लिये बँगला में 'ओय' लिखते हैं, जैसे, 'तिवारी' का 'तिओयारी'; 'हवा' का 'हाओया'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(11) 'य' के उच्चारण में एक विशेषता है। जब 'य' पद के आदि में हो तो उसका उच्चारण 'ज' होता है, जैसे, यात्रा—जात्रा; योग—जोग। लेकिन 'य' अगर पद के मध्य या अन्त में हो तो उसे 'य' ही पढ़ेंगे। जैसे, नियम—नियम; नयन—नयन; समय—समय।

(12) बँगला में तीनों सकारों का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है। लेकिन दन्त्य 'स' के साथ अगर किसी व्यंजन वर्ण का योग हो तो उसका उच्चारण 'स' ही होता है, जैसे, स्तब्ध—स्तब्ध; स्निग्ध—स्निग्ध।

(13) अगर मकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व होकर मकार का लोप कर देता है, जैसे, छद्म—छद्दँ; पद्म—पद्दँ। लेकिन पद के आदि में ऐसा होने पर द्वित्व नहीं होता, जैसे, स्मरण—सँरण; स्मृति—सृँति।

(14) अगर यकार अथवा वकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह द्वित्व हो कर यकार-वकार का लोप कर देगा, जैसे, भृत्य—भृत्त; नित्य—नित्त; वाद्य—वाद्द। लेकिन पद के आदि में केवल वकार का लोप हो जाता है, जैसे, द्वार—दार; ज्वाला—जाला।

(15) अगर यकार में रेफ हो तो पद के मध्य अथवा अन्त मे रहने पर भी जकार हो जाता है, जैसे, सूर्य्य—सूर्ज्ज; धैर्य्य—धैर्ज्ज।

(16) प्रस्तुत संग्रह में 'व' के वदले 'ओय' ही लिखा हुआ है, अतएव जहाँ पर 'ओय' हो वहाँ 'व' ही पढ़ना चाहिए, जैसे, पाओया—पावा; खाओया—खावा; याओया—जावा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

अनुक्रम

				पृष्ठ-संख्या
प्राक्कथन	...	...	...	V
भूमिका	...	...	...	VII
आभार	...	...	...	X
राष्ट्रीय स्वरलिपि	...	...	...	XI
स्वरलिपि-परिचय	...	...	...	XVI
बँगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ		...	...	XXII

भक्ति गीत

1. आजि मम मन चाहे जीवनबन्धुरे	...	...	...	1
2. सुधा सागरतीरे हे	...	...	...	4
3. मंदिरे मम के आसिले हे	...	...	...	7
4. निविड़ घन आँधारे	...	...	...	9
5. अन्तर मम विकशित करो	...	...	...	11
6. ये-केह मोरे दियेछ सुख	...	...	...	14
7. जीवन यखन शुकाये याय	...	...	...	18
8. ओइ आसनतलेर माटिर	...	...	...	21
9. आछे दुःख, आछे मृत्यु	...	...	...	26
10. दुःखेर तिमिरे यदि ज्वले	...	...	...	29
11. ये ध्रुवपद दियेछ बाँधि	...	...	...	33
12. भेंगेछ दुयार, एसेछ ज्योतिर्मय	...	...	...	37
13. आजि प्रणमि तोमारे	...	...	...	41

ऋतु गीत

14. दारुण अग्निबाणे रे	...	...	...	44
15. शाङनगगने घोर घनघटा	...	...	...	47
16. वादल-वाउल वाजाय रे एकतारा	...	...	...	51
17. एसो नीपवने छायावीथितले	...	...	...	54
18. आमरा वेंधेछि काशेर गुच्छ	...	...	...	57
19. एइ शरत्-आलोर कमलवने	...	...	...	62
20. हाय हेमन्तलक्ष्मी, तोमार नयन केन ढाका		...	...	65
21. हिमेर राते ओइ गगनेर दीपगुलिरे	...	...	...	70
22. शीतेर हाओयार लागल नाचन	...	...	...	74
23. आजि वसन्त जाग्रत द्वारे	...	...	...	77
24. ओरे भाइ, फागुन लेगेछे वने वने	...	...	...	81

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रेम गीत पृष्ठ-संख्या

25. वड़ो वेदनार मतो वेजेछ तुमि 84
26. दे पड़े दे आमाय तोरा 88
27. आमार परान याहा चाय 92
28. तुमि येयो ना एखनि 95
29. रोदनभरा ए वसन्त 98

मातृभूमि गीत

30. हे मोर चित्त, पुण्य तीर्थे जागो रे धीरे 102
31. यदि तोर डाक शुने केउ ना आसे 110
32. अयि भुवनमनोमोहिनी 117
33. ओ आमार देशेर माटि 120
34. ओरे, नूतन युगेर भोरे 125

विविध गीत

गौरव गीत

35. मरण सागर पारे तोमरा अमर 129

उद्घाटन गीत

36. सवारे करि आह्वान 132

ग्राम पथ

37. ग्रामछाड़ा ओइ राङा माटिर पथ 135

उद्घाटन गीत

38. मातृमन्दिर-पुण्य-अंगन कर' 138

बुद्ध के प्रति उद्बोधन

39. हिंसाय उन्मत्त पृथ्वि 143

नटराज के प्रति उद्बोधन

40. नृत्येर ताले-ताले नटराज 150

यौवन के गीत

41. आमरा नूतन यौवनेरइ दूत 164
42. संकोचेर विह्वलता निजेरे अपमान 168

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

		पृष्ठ-संख्या
	यंत्र का गीत	
43.	नमो यन्त्र, नमो—यन्त्र	172
	प्रभाती	
44.	हे चिरनूतन, आजि ए दिनेर प्रथम गाने	176
	उद्घाटन गीत	
45.	शुभ कर्मपथे धर' निर्भय गान	179
	गृह प्रवेश	
46.	एसो हे गृहदेवता	182
	वन महोत्सव	
47.	आय आमादेर अंगने	186
	होली	
48.	ओरे गृहवासी, खोल् द्वार खोल्	189
	प्रभाती	
49.	ए दिन आजि कोन् घरे	192
	गौरव गीत	
50.	कोन् आलोते प्राणेर प्रदीप	196
	हिन्दी में शब्दार्थ	201
	प्रथम पंक्ति की सूची	211
	फलक I, II और III	XVIII-XIX
	फलक IV और V	XX-XXI

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरलिपि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1—आजि मम मन चाहे

आजि मम मन चाहे जीवनबन्धुरे,
सेइ जनमे मरणे नित्यसङ्गी
निशिदिन सुखे शोके—
सेइ चिर-आनन्द, विमल चिरसुधा,
युगे युगे कत नव नव लोके नियतशरण।
पराशान्ति, परमप्रेम, परामुक्ति, परमक्षेम,
सेइ अन्तरतम चिरसुन्दर प्रभु, चित्तसखा,
धर्म-अर्थ-काम-भरण राजा हृदयहरण॥

बहार—चौताल

गंधार और निषाद—अति कोमल। रिषभ—तीव्र

***कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र* ने**

द्रुत लय (मम=150 मात्रा)

(अ)

स	S	म	S	म	म	म	म	म	प	पम	मग
आ	॰	जि	॰	म	म	म	न	चा	॰	हे॰	जी॰
1		0		2		0		3		4	

मग	S	ग	म	न	S	न	संन	न	ध	ध	ने
॰	॰	व	न	ब	॰	न्	धु॰	रे	॰	से	इ
1		0		2		0				4	

ने	सं	सं	संने	रंसं	संन	न	ध	ध	नध	न	पम
ज	न	मे	म॰	र॰	णे॰	नि	॰	त्य	सं॰	॰	गी॰
1		0		2		0		3		4	

म	म	म	म	म	पम	प	Sम	म	ग	म	पम
नि	शि	दि	न	सु	खे॰	शो	॰	के	॰	से	इ॰
1		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मग	ग	(ग)म	र	ऽ(ग)	स	स	स	म	म	म	म
चि॰	र	आ	न	॰	न्द	वि	म	ल	चि	र	सु
1		0		2		0		3		4	

म	प	पध	मप	ग	म	न	ऽ	ऽ	सं	नध	नध
धा	॰	॰ ॰	॰ ॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰ ॰	॰ ॰
1		0		2		0		3		4	

ने	ने	सं	सं	सं	ऽ	सं	सं	सं	सं	सं	सं
यु	गे	॰	यु	गे	॰	क	त	न	व	न	व
1		0		2		0		3		4	

सं	ऽ(ने)	सं	रं	ऽ	गं	रं	सं	न	सं	न	ध
लो	॰	के	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰
1		0		2		0		3		4	

प	ऽ	म	ऽ	ग	ऽ	मग	मग	(ग)म	र	(र)स	स
॰	॰	॰	॰	॰	॰	नि॰	य॰	त	श	र	ण
1		0		2		0		3		4	

(ब)

संन	नध	नध	ने	सं	सं	सं	सं	सं	संने	सं	सं
प॰	रा॰	॰ ॰	शा	न्	ति	प	र	म	प्रे॰	॰	म
1		0		2		0		3		4	

संने	सं	ऽ	रं	गं	रंसं	संने	संने	रंसं	संने	संन	नध
प॰	रा	॰	मु	क्	ति॰	प॰	र॰	म॰	क्षे॰	॰ ॰	म॰
1		0		2		0		3		4	

ध	ने	सं	रं	रं	गं	रं	सं	न	सं	न	ध
सै	इ	अ	न्	त	र	त	म	चि	र	सु	न्
1		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न	प	म	म	ऽ	न	ऽ	न	ऽ	संन	नध	नध
द	र	प्र	भु	०	चि	०	त्त	०	स०	खा०	००
1		0		2		0		3		4	

ने	सं	सं	सं	ऽ	सं	सं	ऽ	सं	सं	सं	सं
ध	०	मं	श्र	०	थं	का	०	म	भ	र	ण
1		0		2		0		3		4	

सं	ऽने	सं	रं	ऽ	गं	रं	सं	न	सं	न	ध
रा	०	जा	०	०	०	०	०	०	०	०	०
1		0		2		0		3		4	

प	ऽ	म	ऽ	ग	ऽ	मग	मग	म	र	रस	स
०	०	०	०	०	०	ह०	द०	य	ह	र	ण
1		0		2		0		3		4	

गाइये (ब) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2—सुधा सागरतीरे

सुधा सागरतीरे हे, एसेछे नरनारी सुधारस-पियासे ।
शुभ विभावरी, शोभामयी धरणी,
निखिल गाहे आजि आकुल आश्वासे ।।
गगने विकाशे तव प्रेमपूर्णिमा,
मधुर वहे तव कृपासमीरण ।
आनन्दतरङ्ग उठे दश दिके,
मग्न मन प्राण अमृत-उच्छवासे ।।

नायकी कान्हडा—धमार

गंधार, धैवत और निषाद—कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर-तीव्र **ने**

मध्य लय (मम=108 मात्रा)

स	ऽ	र	ऽ
सु	०	धा	०
3			

(अ)

मग	ऽ	म	र	ऽस	स	र	ने़	स	ऽ	र	ऽ	प	ऽध
सा	०	०	ग	०	र	०	०	०	०	ती	०	रे	०
1			0		2		0			3			
मप	ऽ	ऽ	म	ऽ	ग	ऽ	म	ऽ	ऽ	र	ऽ	स	ऽ
हे	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
1			0		2		0			3			
म	म	पम	प	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	म	प	म	पम	प
ए	से	००	छे	०	०	०	न	०	०	०	०	र०	ना
1			0		2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पन	ऽ	ध	न	प	ध	म	प	म	ग	र	ऽ	न	ऽध
री	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सु	०	धा	०
1			0		2		0			3			

न	प	ऽ	म	प	मध	प	मप	मग	ऽ	र	स	र	ऽ
र	स	०	०	०	००	पि	या०	से	०	सु	०	धा	०
1			0		2		0			3			

मग	ऽ	म	र	ऽस	स	र	ऩे	स	ऽ	र	ऽ	प	ऽध
सा	०	०	ग	०	र	०	०	०	०	ती	०	रे	०
1			0		2		0			3			

मप	ऽ	ऽ	म	ऽ	ग	ऽ	म	ऽ	ऽ	र	ऽ	स	ऽ
हे	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
1			0		2		0			3			

(ब)

म	प	ऽ	न	ध	नध	ने	सं	ऽ	नेसं	सं	ऽ	सं	ऽ
शु	०	०	भ	०	००	वि	भा	०	००	व	०	री	०
1			0		2		0			3			

सं	सं	ऽने	रं	ऽसं	सं	ऽ	नेसं	संरं	सं	न	ध	न	प
शो	भा	०	म	०	यी	०	००	ध	र	णी	०	०	०
1			0		2		0			3			

म	प	ऽ	नध	नध	सं	ऽने	रंने	सं	ऽ	न	प	सं	ऽ
नि	खि	०	ल०	००	गा	०	००	हे	०	आ	०	जि	०
1			0		2		0			3			

न	प	ऽम	म	प	मध	प	मप	मग	ऽ	र	स	र	ऽ
आ	कु	०	ल	०	००	आ	स्वा	से	०	सु	०	धा	०
1			0		2		0			3			

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(स)

ऽ ऽ ऽ ‖	मग मग	म प	प ऽ म	प ऽ पम प
० ० ० ‖	ग० ग०	ने वि	का ० ०	० ० शे० तं
1	0	2	0	3

न ऽ ध	न धन	प ऽम	मप मध प	म ऽ ग ऽ
व ० ०	प्रे ०	म ०	पू० ०० णि	मा ० ० ०
1	0	2	0	3

ऽ ऽ ऽ	गर ग	म पम	म ग म	र ऽस स ऽ
० ० ०	म० धु	र ब०	हे ० ०	त ० व ०
1	0	2	0	3

स म ग	म ऽ	प ऽध	मप म ग	म ऽ र ऽस
कृ पा ०	सं ०	मी ०	र ० ०	० ० ० ०
1	0	2	0	3

स ऽ ऽ ‖	न प	नें नें	सं सं ऽ	नें सं सं सं
ण ० ० ‖	आ ०	न न्द	त रं ०	० ० ग उ
1	0	2	0	3

सं ऽ ऽनें	र ऽसं	सं ऽरं	नें सं ऽरं	न ध न प
ठे ० ०	द ०	श ०	दि ० ०	के ० ० ०
1	0	2	0	3

1° ऽ ऽ ऽ ‖	2° प रं सं	रं ऽसं	रं नें	सं नप नप	नें ऽ सं ऽ
० ० ० ‖	म ० ग्	न ०	प्रा ०	० ण० ००	म ० न ०
1	1	0	2	0	3

न प ऽम	म प	मध प	मप मग ऽ	र स र ऽ
अ मृ ०	त ०	० ० उ	च्छा से ०	सु ० धा ०
1	0	2	0	3

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3—मन्दिरे मम के

मंदिरे मम के आसिले हे।
सकल गगन अमृतमगन,
दिशि दिशि गेल मिशि अमानिशि दूरे दूरे ॥
सकल दुयार आपनि खुलिल
सकल प्रदीप आपनि ज्वलिल
सब वीणा बाजिल नव नव सुरे सुरे ॥

अडाना—एकताल

गंधार, धैवत और निषाद—कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **ने**

मध्य लय (मम = 120 मात्रा)

(अ)

						न	ऽ	प	मर	म	प
						म	न्	दि	रे॰	॰	म
						0			3		
न	म	प	पसं	ऽ	ऽ	न	पम	प	मग	म	र
म	॰	॰	के	॰	॰	आ	सि॰	ले	हे॰	॰	॰
1			2			0			3		
स	स	स	म	म	म	म	प	म	प	ग	म
स	क	ल	ग	ग	न	अ	मृ	त	म	ग	न
1			2			0			3		
न	ध	न	प	ध	म	प	प	न	प	न	सं
दि	शि	दि	शि	गे	ल	मि	शि	अ	मा	नि	शि
1			2			0			3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नप	नप	न	नसं	रं	सं	न	ऽ	प	मर	म	प
दू॰	॰॰	रे	दू॰	॰	रे	म	नू	दि	रे॰	॰	म
1			2			0			3		

न	म	प	पसं	ऽ	ऽ	न	पम	म	मग	म	र
म	॰	॰	के	॰	॰	आ	सि	ले	हे॰	॰	॰
1			2			0			3		

(ब)

म	प	प	नप	नप	न	न	सं	सं	नें	सं	सं
स	क	ल	दु॰	या॰	र	आ	प	नी	खु	लि	ल
1			2			0			3		

नें	सं	सं	सं	रं	सं	नें	सं	नप	नें	सं	सं
स	क	ल	प्र	दी	प	आ	प	नि	ज्व	लि	ल
1			2			0			3		

संनें	सं	मंगं	मं	रं	सं	नें	सं	नप	नप	न	सं
स	ब	वी	॰	णा	वा	जि	ल	न॰	वी॰	न	व
1			2			0			3		

नसं	रं	सं	नसं	रं	सं
सु॰	॰	रे	सु॰	॰	रे
1			2		

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

4—निबिड़ घन आँधारे

निबिड़ घन आँधारे ज्वलिछे ध्रुवतारा ।
मन रे मोर, पाथारे होस ने दिशेहारा ।।
विषादे हये म्रियमाण बन्ध ना करियो गान,
सफल करि तोलो प्राण टुटिया मोहकारा ।।
राखियो बल जीवने, राखियो चिर-आशा,
शोभन एइ भुवने राखियो भालोबासा ।
संसारेर सुखे दुखे चलिया येयो हासिमुखे,
भरिया सदा रेखो बुके ताँहारि सुधाधारा ।।

सहाना—नवताल

गंधार और निषाद—अतिकोमल । रिषभ—तीव्र

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **ने**

द्रुत लय (मम = 135 मात्रा)

(अ)

म प प	ध म	प ऽ	प प	ध ध न	ध प	म पम	म ग
नि बि ड़	घ न	आँ ०	धा रे	ज्व लि छे	ध्रु ०	ता ०	रा ०
1	2	3	4	1	2	3	4

ग ग म	र ऽ	र ऽस	स स	स सं सं	न प	मग ऽ	मर म
म न रे	मो र	पा ०	था रे	हो स ने	दि शे	हा ०	रा० ०
1	2	3	4	1	2	3	4

म प प	ध म	प ऽ	प प
नि वि ड	घ न	आँ ०	धा रे
1	2	3	4

(ब)

म प नप	ने ने	ने सं	सं ऽ	सं ऽ सं	सं सं	संने संन	न ध
वि षा दे०	ह ये	म्रि य	मा ण	ब न् ध	ना क	रि० यो०	गा न
1	2	3	4	1	2	3	4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध न ध	प प	ध म	प ऽ	स स स	र र	र ऽ	मग ऽ
स फ ल	क रि	तो लो	प्रा ए	टु टि या	मो ह	का ०	रा ०
1	2	3	4	1	2	3	4

ग ग म	र ऽ	र ऽस	स स	स सं सं	न प	मग ऽ	मर म
म न रे	मो र	पा ०	था रे	हो स ने	दि शे	हा ०	रा० ०
1	2	3	4	1	2	3	4

गाइये (अ) →

(स)

म प प	प प	ध न	ध प	म प प	ध प	म प	म ग
रा खि यो	ब ल	जी ०	व ने	रा खि यो	चि र	श्रा ०	शा ०
1	2	3	4	1	2	3	4

ग ग गम	र र	र ऽस	स स	र म म	म प	पध म	प ऽ
शो भ न	ए इ	भु ०	व ने	रा खि यो	भा लो	बा ०	सा ०
1	2	3	4	1	2	3	4

(द)

म प प	नप नें	नें सं	सं सं	सं सं सं	न ध	ध न	धं प
सं ० सा	रे० र	सु खे	दु खे	च लि या	ये यो	हा सि	मु खे
1	2	3	4	1	2	3	4

म प प	ध म	प प	प प	स स स	र र	र ऽ	मग ऽ
भ रि या	स दा	रे खो	बु के	ताँ हा रि	सु धा	धा ०	रा ०
1	2	3	4	1	2	3	4

ग ग म	र र	र ऽस	स स	स सं सं	न प	मग ऽ	मर म
म न रे	मो र	पा ०	था रे	हो स ने	दिं शे	हा ०	रा० ०
1	2	3	4	1	2	3	4

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5—अन्तर मम विकशित करो

अन्तर मम विकशित करो, अन्तरतर हे—
निर्मल करो, उज्ज्वल करो, सुन्दर करो हे ॥
जाग्रत करो, उद्यत करो, निर्भय करो हे ।
मङ्गल करो, निरलस निःसंशय करो हे ॥
युक्त करो हे सवार सङ्गे, मुक्त करो हे बन्ध ।
सञ्चार करो सकल कर्मे शान्त तोमार छन्द ॥
चरणपद्मे मम चित निस्पन्दित करो हे ।
नन्दित करो, नन्दित करो, नन्दित करो हे ॥

भैरवी—एकताल

रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद-कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर-तीव्रतर **री**

मध्य लय (मम=96—मात्रा)

(अ[1])

स	ऽ	म	म	म	म	प	धन	धप	म	गरी	ग
अ	न्	त	र	म	म	वि	क॰	शि॰	त	क॰	रो
1			2			0			3		

र	स	र	गम	ग	र	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
अ	न्	त	र॰	त	र	हे	॰	॰	॰	॰	॰
1			2			0			3		

ग	री	ग	ग	री	ग	रीग	मप	प	म	गरी	मगर
नि	र्	म	ल	क	रो	उ	॰॰	ज्ज्व	ल	क॰	रो॰
1			2			0			3		

									1°			2°		
स	र	सर	गम	ग	र	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
सु	न्	द॰	र॰	क	रो	हे	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰
1			2			0			3			3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स	ध	ध	ध	प	^मपग	पध	न	न	ध	मप	म
नि	र्	म	ल	क	रो॰	ऊ॰	॰	ज्ज्व	ल	क॰	रो
1			2			0			3		

म	प	ग	म	धप	म	ग	ऽ	ऽ	र	स	र
सु	न्	द	र	क॰	रो	हे	॰	॰	॰	॰	॰
1			2			0			3		

(अ²)

स	ऽ	म	म	म	म	प	धन	धप	म	गरी	ग
अ	न्	त	र	म	म	वि	क॰	शि॰	त	क॰	रो
1			2			0			3		

र	स	र	गम	ग	र	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
अ	न्	त	र॰	त	र	हे	॰	॰	॰	॰	॰
1			2			0			3		

(ब)

स	ध	ध	ध	ध	न	धन	सं	सं	सं	सं	संन
जा	॰	अ	त	क	रो	उ॰	॰	द्य	त	क	रो॰
1			2			0			3		

ध	गं	गं	गं	गंरीं	गंमं	गं	ऽ	रं	संनं	सं	ऽ
नि	र्	भ	य	क॰	रो॰	हे	॰	॰	॰॰	॰	॰
1			2			0			3		

ध	सं	सं	सं	रं	रंसं	न	सं	न	ध	पध	म
मं	॰	ग	ल	क	रो॰	नि	र	ल	स	निः॰	॰
1			2			0			3		

प	न	^नध	प	मग	म	ग	ऽ	ऽ	र	स	र
सं	॰	श	य	क॰	रो	हे	॰	॰	॰	॰	॰
1			2			0			3		

गाइये (अ²) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(स)

स	ऽ	स	स	स	र	ग	ग	ग	म	ऽ	म
यु	क्	त	क	रो	हे	स	वा	र	सं	०	गे
1			2			0			3		

म	प	ग	म	धप	म	मग	ऽ	र	स	ऽ	ऽ
मु	क्	त	क	रो०	हे	व	०	न्	ध	०	०
1			2			0			3		

स	ध	ध	प	मप	ग	प	पन	ध	पम	प	ग
स	न्	चा	र	क	रो	स	क०	ल	क०	र्	मे
1			2			0			3		

म	प	ग	म	धप	म	ग	ऽ	र	स	ऽ	ऽ
शा	न्	त	तो	मा०	र	छ	०	न्	द	०	०
1			2			0			3		

(द)

सध	ध	ध	ध	नध	न	न	सं	सं	सं	संन	सं
च०	र	ण	प	००	द्मे	म	म	चि	त्त	नि०	स्
1			2			0			3		

नध	गं	गं	गं	गंरीं	गंमं	गं	ऽ	रं	संन	सं	ऽ
प	न्	दि	त	क०	रो०	हे	०	०	००	०	०
1			2			0			3		

ध	सं	सं	सं	रं	रंसं	न	सं	न	ध	प	पम
न	न्	दि	त	क	रो०	न	न्	दि	त	क	रो०
1			2			0			3		

प	न	ध	प	मग	म	ग	ऽ	र	स	ऽ	र
न	न्	दि	त	क०	रो	हे	०	०	०	०	०
1			2			0			3		

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

6—ये-केह मोरे दियेछ सुख

ये-केह मोरे दियेछ सुख दियेछ ताँरि परिचय,
सवारे आमि नमि ।
ये-केह मोरे दियेछ दुख दियेछ ताँरि परिचय,
सवारे आमि नमि ।।
ये-केह मोरे वेसेछ भालो ज्वेलेछ घरे ताँहारि आलो,
ताँहारि माझे सवारइ आजि पेयेछि आमि परिचय,
सबारे आमि नमि ।।
या-किछु काछे एसेछे, आछे, एनेछे ताँरे प्राणे,
सवारे आमि नमि ।
या-किछु दूरे गियेछे छेड़े टेनेछे ताँरि पाने,
सवारे आमि नमि ।
जानि वा आमि नाहि वा जानि, मानि वा आमि नाहि वा मानि,
नयन मेलि निखिले आमि पेयेछि ताँरि परिचय,
सवारे आमि नमि ।।

काफी—ताल तेवरा

गंधार और निषाद—अति कोमल। रिषभ—तीव्र

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **गे** *और तीव्र* **ने**

द्रुत लय (मम=140 मात्रा)

(अ[1])

स	स	ऽ	र	ऽ	र	र	र	र	गे	म	ऽ	प	ऽ
ये	के	०	हृ	०	मो	रे	दि	ये	०	छ	०	सु	ख
1			2		3		1			2		3	

प	प	ध	पसं	न	ध	प	म	गे	रगे	पम	ऽ	ऽ	स
दि	ये	०	छ०	०	ताँ	रि	प	रि	०	च	०	०	य
1			2		3		1			2		3	

स	र	ग	रग	म	ग	ग	सर	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
स	बा	०	रे०	०	आ	मि	न	मि	०	०	०	०	०
1			2		3		1			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प संने	सं ऽ	सं संरं	नसं न ऽ	ध पध	पम ऽ
ये के ००	ह ०	मो रे०	दि ये ०	छ ०	दु ख
1	2	3	1	2	3

प प ध	पसं न	ध प	म गे रेगे	पम ऽ	ऽ स
दि ये ०	छ० ०	ताँ रि	प रि ०	च ०	० य
1	2	3	1	2	3

स र ग	रग म	ग ग	सर स ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
स बा ०	रे० ०	आ मि	न मि ०	० ०	० ०
1	2	3	1	2	

(अ²)

स स ऽ	र ऽ	र र	र र गे	म ऽ	प ऽ
ये के ०	ह ०	मो रे	दि छ ०	छ ०	सु ख
1	2	3	1	2	3

प प ध	पसं न	ध प	म गे रेगे	पम ऽ	ऽ स
दि ये ०	छ ०	ताँ रि	प रि ०	च ०	० य
1	2	3	1	2	3

स र ग	रग म	ग ग	सर स ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
स बा ०	रे० ०	आ मि	न मि ०	० ०	० ०
1	2	3	1	2	3

(ब)

पध म ऽ	प ऽ	प ध	ने ने ऽ	सं ऽने	सं सं
ये के ०	ह ०	मो रे	बे से ०	छ ०	भा लो
1	2	3	1	2	3

प प संने	सं नेसं	रं गं	रं सं ऽन	नसंन ऽ	ध प
ज्वे ले ००	छ ०	घ रे	ताँ हा ०	रि०० ०	आ लो
1	2	3	1	2	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प संने	सं ऽ	सं रं	सं संन ऽ	ध पध	प म
ताँ हृा ० ०	रि ०	मा झे	स वा ०	र ०	आ जि
1	2	3	1	2	3

प प ध	पसं न	ध प	म गे रेगे	पम ऽ	ऽ स
पे ये ०	छि० ०	आ मि	प रि ०	च ०	० य
1	2	3	1	2	3

स र ग	रग म	ग ग	सर स ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
स बा ०	रे० ०	आ मि	न मि ०	० ०	० ०
1	2	3	1	2	3

गाइये (अ1)+(अ2) →

(स)

स स ऽ	र ऽ	र र	र र गे	म ऽ	प प
या कि ०	छु ०	का छे	ए से ०	छे ०	आ छे
1	2	3	1	2	3

प प ध	पसं न	ध प	म गे रेगे	म ऽ	ऽ स
ए ने ०	छे० ०	ताँ रे	प्रा ० ०	णे ०	० ०
1	2	3	1	2	3

स र ग	रग म	ग ग	सर स ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
स बा ०	रे० ०	आ जि	न मि ०	० ०	० ०
1	2	3	1	2	3

प प संने	सं ऽ	सं रं	नसं न ऽ	ध पध	प म
या कि ० ०	छु ०	दु रे	गि ये ०	छे ०	छे ड़े
1	2	3	1	2	3

प प ध	पसं न	ध प	म गे रेगे	म ऽ	ऽ स
टे ने ०	छे० ०	ताँ रि	पा ० ०	ने ०	० ०
1	2	3	1	2	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स र ग	रग म	ग ग	सर स ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
स वा ०	रे० ०	आ मि	न मि ०	० ०	० ०
1	2	3	1	2	3

(द)

पध म ऽ	प ऽ	प ध	नें नें ऽ	सं ऽनें	सं सं
जा नि ०	वा ०	आ मि	ना हि ०	वा ०	जा नि
1	2	3	1	2	3

प प संनें	सं नेंसं	रं गं	रं सं ऽन	नसंन (3) ऽ	ध प
मा नि ००	वा ०	आ मि	ना हि ०	वा०० ०	मा नि
1	2	3	1	2	3

प प संनें	सं ऽ	सं रं	सं संन ऽ	ध पध	प म
न य ००	न ०	मे लि	नि खि ०	ले ०	आ मि
1	2	3	1	2	3

प प ध	पसं न	ध प	म गे रेगे	पम ऽ	ऽ स
पे ये ०	छि० ०	ताँ रि	प रि ०	च ०	० य
1	2	3	1	2	3

स र ग	रग म	ग ग	सर स ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
स बा ०	रे० ०	आ मि	न मि ०	० ०	० ०
1	2	3	1	2	3

गाइये (अ¹)+(अ²) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७—जीवन यखन शुकाये याय

जीवन यखन शुकाये याय करुणाधाराय एसो ।
सकल माधुरी लुकाये याय, गीतासुधारसे एसो ॥
कर्म यखन प्रबल-आकार गरजि उठिया ढाके चारि धार
हृदयप्रान्ते हे जीवननाथ, शान्त चरणे एसो ॥
आपनारे यबे करिया कृपण कोणे पड़े थाके दीनहीन मन
दुयार खुलिया हे उदार नाथ, राजसमारोहे एसो ।
वासना यखन विपुल धुलाय अन्ध करिया अबोधे भुलाय
ओहे पवित्र, ओहे अनिद्र, रुद्र आलोके एसो

जयजयवन्ती—एकताल

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - कोमल **गा** *और अति कोमल* **नो**

मध्य लय (मम=96 मात्रा)

(अ1)

म	म	म	गमग	ग	र	स	नसर	र	र	ऽ	र
जी	व	न	य॰	ख	न	शु	का॰॰	ये	या	॰	य
1			2			0			3		

गर	ग	म	प	पध	मग	रग	रग	म	म	ऽ	ऽ
क	रु	णा	धा	रा॰	॰य	ए॰	॰॰	॰	सो	॰	॰
1			2			0			3		

म	म	मग	रगम	गर	स	रम	म	पन	न	ऽ	सं
स	क	ल॰	मा॰॰	धु॰	री	लु॰	का	ये॰	या	॰	य
1			2			0			3		

नसंरं	संरंसं	नसंनो	नोध	पधनोध	धप	मग	रग	रग	म	ऽ	ऽ
गी॰॰	त॰	सु॰	धा॰	र॰॰॰	से॰	ए॰	॰॰	॰॰	सो	॰	॰
1			2			0			3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अ²)

म म म	ᵍमग ग र	स नसर(3) र	र ऽ र
जी व न	य॰ ख न	शु का॰॰ ये	या ॰ य
1	2	0	3

ᵍर ग म	प पध मग	रग रग म	म ऽ ऽ
क रु णा	धा रा॰ ॰य	ए॰ ॰॰ ॰	सो ॰ ॰
1	2	0	3

(ब)

1° म प पन	2° न ऽ न	न न न	सं सं सं	संन सं सं
क र् म॰	क र् म	य ख न	प्र ब ल	आ॰ का र
1	1	2	0	3

सं सं सं	सं सं संन	ध धरं रं	रं रं गांन
ग र जि	उ ठि या॰	ढा के॰ चा	रि धा ॰र
1	2	0	3

न न न	सं न सं	संरं ˢंरंसं सं	नो ˢंनो धप
हृ द य	प्रा न् ते	हे॰ जी॰ व	न ना ॰थ
1	2	0	3

प ध ᵖधप	प म मग	रग रग रगम(3)	म ऽ ऽ
शा न् त॰	च र णे॰	ए॰ ॰॰ ॰॰॰	सो ॰ ॰
1	2	0	3

गाइये (अ¹)+(अ²) →

(स)

म म ग	गम र स	ᴺस स नसर(3)	र र र
आ प ना	रे॰ य के	क रि या॰॰	कृ प ण
1	2	0	3

ᴿगर ग म	प ᵖध प	म ग ᴿगर	ग म म
को॰ णे प	ड़े था के	दी न ही॰	न म न
1	2	0	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	ᴳम	र	म	प	प	म	प	पन	न	सं	सं
दु	या	र	खु	लि	या	हे	उ	दा०	र	ना	थ
1			2			0			3		

(3) नसंरं	संरंसं	संनो	नोध	ध	प	म	ऽग	(3) रगम	म	ऽ	ऽ
रा००	ज०	स०	मा०	रो	हे	ए	००	०००	सो	०	०
1			2			0			3		

(द)

1°			2°														
म	प	प	न	न	न	न	न	न	न	सं	रंसं	न	सं	सं
वा	स	ना	वा	स	ना	य	ख	न	वि	पु	ल०	धु	ला	य
1			1			2			0			3		

ᴾसं	सं	सं	सं	सं	संन	ध	धरं	रं	संन	रं	संन
अ	न्	ध	क	रि	या०	अ	बो०	धे	भु०	ला	०य
1			2			0			3		

न	न	न	सं	ऽन	सं	न	संरं	सं	संरं	सं	नोध
ओ	हे	प	वि	००	त्र	ओ	हे०	अ	नि०	०	द्र०
1			2			0			3		

प	ध	प	म	म	ग	रग	रग	(3) रगम	म	ऽ	ऽ
रु	ऽ	द्र	आ	लो	के	ए०	००	०००	सो	०	०
1			2			0			3		

गाइये (अ1)+(अ2) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४—ओइ आसनतलेर

ओइ आसनतलेर माटिर 'परे लुटिये रब,
तोमार चरण-धुलाय धुलाय धूसर हब ॥
केन आमाय मान दिये आर दूरे राख ?
चिरजनम एमन क'रे भुलियो नाको ।
असम्माने आनो टेने पाये तव ।
तोमार चरण-धुलाय धुलाय धूसर हब ॥
आमि तोमार यात्रीदलेर रब पिछे,
स्थान दियो हे आमाय तुमि सबार नीचे ।
प्रसाद लागि कत लोके आसे धेये,
आमि किछुइ चाइब ना तो, रइब चेये —
सबार शेषे या बाकि रय ताहाइ लब ।
तोमार चरण-धुलाय धुलाय धूसर हब ॥

(सुर कीर्तन)—कव्वाली

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर—कोमल **धा,** *कोमल* **ना** *और अति कोमल* **नो**

द्रुतलय (मम=192 मात्रा)

(अ1)

र	ग	म	ऽ	प	प	मप	ध	प	ऽ
ओ	इ	आ	०	स	न	त०	०	ले	०
		1				0			

ऽ	ध	म	प	ग	म	र	ग	म	ऽ	प	प	मप	ध	प	प
०	०	०	०	०	र	ओ	इ	आ	०	स	न	त०	०	ले	र
1				0				1				0			

(अ2)

प	ध	न	संन	ध	नध	प	ध	ध	सं	सं	ऽ	न	संध	ध	नोध
मा	०	टि	०र	प	००	रे	०	लु	०	टि	०	ये	००	र	००
1				0				1				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ध	म	प	ग	म	र	ग	म	ऽ	प	ऽ	मप	ध	प	ऽ
ब	०	०	०	०	०	ओ	इ	आ	०	स	न	त०	०	ले	०
1				0				1				0			

ऽ	ध	म	प	ग	म	र	ग	म	ऽ	प	ऽ	मप	ध	प	प
०	०	०	०	०	र	ओ	इ	आ	०	स	न	त०	०	ले	र
1				0				1				0			

सं	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	सं	सं	रं	सं	रं	सं	रं	सं	सं	न
तो	०	मा	र	च	०	र	ण	धु	०	ला	य	धु	०	ला	य
1				0				1				0			

न	सं	सं	ऽ	न	संन	ध	नोध	प	ध	म	प	ग	म	र	ग
घू	०	स	०	र	००	ह	००	ब	०	०	०	०	०	ओ	इ
1				0				1				0			

गाइये (अ1) →

(ब)

सं	ऽ	सं	ऽ	सं	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	ऽरं	सं	सं	ऽ	सं	रंसं
के	०	न	०	आ	०	मा	य	मा	०	न०	दि	ये	०	आ	०र
1				0				1				0			

न	सं	न	धप	प	ध	पध	सं	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	धप	ऽ
दू	०	रे	००	रा	०	००	०	ख	०	०	०	०	०	००	०
1				0				1				0			

प	ऽ	पध	नसं	न	ऽ	धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प
चि	०	र०	००	ज	०	न०	०	०	०	०	०	०	म	औ	हे
1				0				1				0			

प	ऽ	पध	नसं	संन	ऽ	धप	प	प	ध	ध	ध	ध	ऽ	धन	धप
चि	०	र०	००	ज	०	न०	म	ए	०	म	न	क	०	रे	००
1				0				1				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	न	न	संन	ध	नोध	प	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
मु	०	लि	००	यो	००	ना	०	को	०	०	०	०	०	०	०
1				0				1				0			

ग	म	म	प	प	ऽ	प	ऽ	प	ऽ	पधा	पम	प	धा	धाना	प
अ	०	स	म्	मा	०	ने	०	आ	०	नो०	००	टे	०	ने०	०
1				0				1				0			

प	ऽ	ऽ	धा	ना	ऽधा	ना	धाप	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
पा	०	०	०	ये	००	त	००	ब	०	०	०	०	०	०	०
1				0				1				0			

सं	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	सं	सं	रं	सं	रं	सं	रं	सं	सं	न
तो	०	मा	र	च	०	र	ण	घु	०	ला	य	घु	०	ला	य
1				0				1				0			

न	सं	सं	ऽ	न	संन	ध	नोध	प	ध	म	प	ग	म	र	ग
घू	०	स	०	र	००	ह	००	ब	०	०	०	०	०	ओ	इ
1				0				1				0			

गाइये (अ¹)+(अ²)+(अ¹) →

(स)

स	ऽ	स	ऽ	र	ऽ	र	ग	म	ऽ	ऽ	ध	प	धप	म	प
आ	०	मि	०	तो	०	मा	र	या	०	०	श्री	द	००	ले	र
1				0				1				0			

ग	ऽ	ऽ	म	म	ऽ	म	प	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	०	०	०	ब	०	पि	०	छे	०	०	०	०	०	०	०
1				0				1				0			

पध	नसं	सं	सं	न	ऽ	धप	ऽ	प	ध	ध	ऽ	ऽ	ऽ	न	धप
स्था०	००	न	दि	यो	०	हे	०	आ	०	मा	०	०	०	०	०य
1				0				1				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पध	नसं	सं	सं	संन	ऽ	धप	ऽ	म	ध	ध	ध	ध	ऽ	ध	ऽ
स्था०	००	न	दि	यो	०	हे	०	आ	०	मा	य	तु	०	मि	०
1				0				1				0			
स	ऽ	स	ऽ	र	ग	म	प	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
स	०	बा	०	र	०	नी	०	चे	०	०	०	०	०	०	०
1				0				1				0			
सं	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	सं	ऽ	सं	रं	सं	सं	सं	ऽ	सं	रंसं
प्र	०	सा	द	ला	०	गि	०	क	०	त	इ	लो	०	के	००
1				0				1				0			
न	सं	न	धप	प	ध	पध	नसं	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	धप	ऽ
आ	०	से	००	घे	०	००	००	ये	०	०	०	०	०	००	०
1				0				1				0			
प	ऽ	पध	नसं	न	ऽ	धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प
आ	०	मि०	००	कि	०	छु	०	०	०	०	०	०	०	ओ	हे
1				0				1				0			
प	ऽ	पध	नसं	न	ऽ	धप	ऽ	प	ध	ऽ	ध	ध	ऽ	धन	धप
आ	०	मि०	००	कि	०	छु	०	चा	इ	०	ब	ना	०	तो	००
1				0				1				0			
प	न	न	संन	ध	ऽ	ऽ	नध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	इ	ब	००	चे	०	०	००	ये	०	०	०	०	०	०	०
1				0				1				0			
ग	म	म	म	प	ऽ	प	ऽ	प	ऽ	धा	म	प	धा	धाना	प
स	०	बा	र	झे	०	बे	०	या	०	०	बा	कि	०	र ०	य
1				0				1				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ऽ	ऽ	धा	ना	ऽधा	ना	धाप	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
त्ता	०	०	०	हा	०इ	ल	००	ब	०	०	०	०	०	०	०
1				0				1				0			

सं	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	सं	सं	रं	सं	रं	सं	रं	सं	सं	सं
तो	०	मा	र	च	०	र	ण	धु	०	ला	य	धु	०	ला	य
1				0				1				0			

न	सं	सं	ऽ	न	संन	ध	नोध	प	ध	म	प	ग	म	र	ग
धू	०	स	०	र	००	ह	००	ब	०	०	०	०	०	ओ	इ
1				0				1				0			

गाइये (अ)+(अ²)+(अ¹) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

9—आछे दुःख, आछे मृत्यु

आछे दुःख, आछे मृत्यु, विरहदहन लागे ।
तबुओ शान्ति, तबु आनन्द, तबु अनन्त जागे ॥
तबु प्राण नित्यधारा, हासे सूर्य चन्द्र तारा,
वसन्त निकुञ्जे आसे विचित्र रागे ॥
तरङ्ग मिलाये याय, तरङ्ग उठे;
कुसुम झरिया पड़े, कुसुम फुटे ।
नाहि क्षय, नाहि शेष नाहि नाहि दैन्यलेश—
सेइ पूर्णतार पाये मन स्थान मागे ॥

मिश्र जोगिया—एकताल

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - कोमल **रा**, *कोमल* **गा**, *कोमल* **धा** *कोमल* **ना** *और तीव्रतर* **मी**

मध्य लय (मम=108 मात्रा)

(अ1)

	3						3				
सर	सरग	ग	ग	ऽ	रस	सर	सरग	ग	(ग)र	ऽ	स
आ ०	० ० ०	छे	दुः	०	ख ०	आ ०	० ० ०	छे	मृ	०	त्यु
1			2			0			3		

स	र	म	म	म	म	म	ऽ	गप	(प)म	ग	ऽ
वि	र	ह	द	ह	न	ला	०	० ०	गे	०	०
1			2			0			3		

							3				
प	धा	(धा)सं	सं	सं	रां	(रां)सं	संरांगां	रां	सं	नाधा	धा
त	बु	ओ	शा	न्	ति	त	बु ० ०	आ	न्	० न	द
1			2			0			3		

	3							3			
(धा)प	पधाना	(ना)धा	प	प	प	प	ऽ	मीपधा	धा	ऽ	ऽ
त	बु ० ०	अ	न्	न	त	जा	०	० ० ०	गे	०	०
1			2			0			3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अ^{2})

सर	सरग (3)	ग	ग	ऽ	रस	सर	सरग (3)	ग	^{ग}र	ऽ	स
आ०	०००	छे	बु:	०	ख०	आ०	०००	छे	मृ	०	त्यु
1			2			0			3		

स	र	म	म	म	म	म	ऽ	गप	^{प}म	ग	ऽ
वि	र	ह	द	ह	न	ला	०	००	गे	०	०
1			2			0			3		

(ब)

प	पधा	म	^{म}पधा	सं	सं	$^{सं}$रांसं	ऽ	सं	संन	सं	सं
त	बु०	०	प्रा०	०	ण	नि०	०	त्य	धा०	०	रा
1			2			0			3		

सं	रां	ऽ	रां	संरांगां (3)	$^{गं}$रां	रां	सं	सं	$^{सं}$ना	धा	प
हा	से	०	सू	००र्	य	च	न्	द्र	ता	०	रा
1			2			0			3		

प	प	धा	धा	रां	$^{रां}$सं	सं	ना	ना	$^{ना}$धा	प	प
ब	स	न्	त	०	नि	कु	न्	जे	आ	०	से
1			2			0			3		

प	पधा	ना	$^{ना}$धा	प	मपधा (3)	धा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
वि	चि०	०	त्र	रा	०००	गे	०	०	०	०	०
1			2			0			3		

गाइये (अ^{1})+(अ^{2}) →

(स)

स	र	म	म	ऽ	म	म	ऽ	म	^{प}म	ग	ऽ
त	रं	०	ग	०	मि	ला	०	ये	या	०	य
1			2			0			3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(गम)म	म	ग	म	ना	ना	(ना)धा	ऽ	ऽ	प	ऽ	धाप
त	रं	०	ग	०	उ	ठे	०	०	०	०	००
1			2			0			3		

(पम)म	ग	ऽ	सर	गम	(मग)ग	ग	र	ग	र	स	ऽ
कु	सु	०	म०	००	भ्र	रि	या	०	प	ड़े	०
1			2			0			3		

स	स	रा	ग	म	मी	(मी)म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
कु	सु	०	म	०	फु	टे	०	०	०	०	०
1			2			0			3		

(द)

प	धा	(प)म	पधा	सं	सं	(सं)रां	(रां)सं	सं	संन	सं	सं
ना	०	हि	क्ष०	०	य	ना	०	हि	शे०	०	ष
1			2			0			3		

सं	रां	रां	संरां	गां	(गां)रां	सं	नासं	(सं)ना	(ना)धा	प	प
ना	०	हि	ना०	०	हि	दै	००	न्य	ले	०	श
1			2			0			3		

प	धा	धा	धा	रां	(रां)सं	नासं	ना	ना	(ना)धा	प	प
से	०	इ	पू	र्	ण	ता०	०	र	पा	०	ये
1			2			0			3		

प	पधाना (3)	ऽ	(ना)धा	प	पमी	(मी)प	ऽ	मींपधा (3)	धा	ऽ	ऽ
म	न००	०	स्था	०	न०	मा	०	०००	गे	०	०
1			2			0			3		

गाइये (अ¹)+(अ²) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

10—दुःखेर तिमिरे यदि

दुःखेर तिमिरे यदि ज्वले तव मङ्गल—आलोक
तवे ताइ होक ।
मृत्यु यदि काछे आने तोमार अमृतमय लोक
तबे ताइ होक ॥
पूजार प्रदीपे तव ज्वले यदि मम दीप्त शोक
तवे ताइ होक ।
अश्रु-आँखि-' परे यदि फुटे ओठे तव स्नेहचोख
तवे ताइ होक ॥

ताल—दादरा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **मे**

द्रुत लय (मम=126 मात्रा)

(अ[1])

स	ग	ग	ग	ग	ऽ	ग	ग	ऽ	ग	ग	ऽ
दुः	०	खे	र	ति	०	मि	रे	०	य	दि	०
1			0			1			0		

ग	ऽ	र	र	म	ऽ	ग	ऽ	ऽ	**मे**	प	**मे**
ज्व	०	०	ले	०	०	०	०	०	त	व	०
1			0			1			0		

प	न	न	ध	प	**मे**	धप	**मे**	प	म	ग	म
मं	०	ग	ल	आ	०	लो०	०	क	य	दि	ऽ
1			0			1			0		

र	ऽ	गम	मग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं	सं	न
ज्व	०	००	ले	०	०	०	०	०	त	वे	०
1			0			1			0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सं	ऽ	गं	|	रं	सं	ऽ	|	ऽ	ऽ	सं	|	सं	सं	न
ता	०	इ	|	हो	०	०	|	०	०	क	|	त	वे	०
1				0				1				0		

ध	ऽ	नसं	|	न	ऽ	ऽ	|	धन	ध	प	|	मेप	ऽ	प
ता	•	इ	|	हो	०	०	|	०	०	०	|	०	०	क
1				0				1				0		

(अ²)

स	ग	ग	|	ग	ग	ऽ	|	ग	ग	ऽ	|	ग	ग	ऽ
दुः	०	खे	|	र	ति	०	|	मि	रे	०	|	य	दि	०
1				0				1				0		

ग	ऽ	र	|	र	म	ऽ	|	ग	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ
ज्व	०	०	|	ले	०	०	|	०	०	०	|	०	०	०
1				0				1				0		

(ब)

प	ऽ	प	|	न	ध	न	|	सं	सं	ऽ	|	सं	सं	न
मृ	०	त्यु	|	य	दि	०	|	का	छे	०	|	आ	ने	०
1				0				1				0		

ध	न	ध	|	ध	सं	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	सं
तो	०	०	|	मा	०	०	|	०	०	०	|	०	०	र
1				0				1				0		

सं	संगं	गं	|	रं	ऽ	रं	|	सं	ऽ	ऽ	|	सं	सं	न
अ	मृ०	त	|	म	ऽ	य	|	लो	क	०	|	त	बे	०
1				0				1				0		

ध	ऽ	सं	|	न	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	न	|	ध	ध	प
ता	०	इ	|	हो	०	०	|	०	०	क	|	त	बे	०
1				0				1				0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	मे	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
ता	०	इ	हो	०	०	०	०	०	०	०	०
1			0			1			0		

गाइये (अ^1)+(अ^2) →

(स)

गप	प	प	प	प	प	प	ऽ	ऽ	प	मे	ग
पू	जा	र	प्र	दी	पे	त	०	०	व	०	०
1			0			1			0		

ग	ऽ	मे	ग	मेप	मे	ग	ऽ	ऽ	ग	ग	स
ज्व	०	०	ले	००	य	दि	०	०	म	म	०
1			0			1			0		

ग	ऽ	स	प	प	ग	रस	ऽ	स	स	स	र
दि	०	०	०	प्	त	शो	०	क	त	वे	०
1			0			1					

ग	ऽ	स	प	ऽ	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
ता	०	०	०	०	इ	हो	०	०	०	०	क
1			0			1			0		

प	ऽ	ग	प	प	ध	धसं	सं	ऽ	सं	सं	ऽ
अ	०	श्रु	आँ	खि	०	प	रे	०	य	दि	०
1			0			1			0		

सं	रं	ऽ	सं	रं	गं	रंसं	ऽ	ऽ	सं	सं	न
फु	टे	०	ओ	०	०	ठे	०	०	त	व	०
1			0			1			0		

ध	ऽ	न	ध	सं	न	धप	ऽ	प	प	प	मे
स्ने	०	०	०	०	ह	चो	०	ख	त	वे	०
1			0			1			0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	ऽ	मे	प	ऽ	न	धप	ऽ	प	मे	ग	ऽ
ता	•	॰	॰	॰	इ	हो॰	॰	क	त	वे	॰
1			0			1			0		

ग	ऽ	स	प	ऽ	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
ता	॰	॰	॰	॰	इ	हो॰	॰	॰	॰	॰	क
1			0			1			0		

गाइये (अ^1)+(अ^2) ⟶

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

11—ये ध्रुवपद दियेछ बाँधि

ये ध्रुवपद दियेछ बाँधि विश्वताने
मिलाव ताइ जीवनगाने।
गगने तव विमल नीलहृदये लव ताहारि मिल—
शान्तिमयी गभीर वाणी नीरव प्राणे॥
बजाय उषा निशीथकूले ये गीतभाषा
से ध्वनि निये जागिवे मोर नवीन आशा।
फुलेर मतो सहज सुरे प्रभात मम उठिवे पूरे,
सन्ध्या मम से सुरे येन भरिते जाने॥

ताल—झंपक

गंधार और निषाद—अति कोमल। रिषभ—तीव्र

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **ने**

द्रुत लय (मम=150 मात्रा)

(अ)

ध	ध	न	नध	प	प	प	प	पध	म
ये	ध्रु	व	प	द	दि	ये	छ	बाँ॰	॰
प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	पम	प	मप
धि	॰	॰	॰	॰	वि	॰	श्व॰	ता	॰॰
प	सं	ऽ	ऽ	ऽ	सं	संने	सं	ने	सं
ने	॰	॰	॰	॰	मि	ला	व	ता	॰
न	ध	न	नध	न	नध	धप	प	मप	धप
॰	॰	॰	॰	इ	जी	व	न	गा॰	॰॰

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ध	न	नध	प
ने॰	॰	॰	॰	॰	ये	ध्रु	व	प	द
प	प	प	पध	म	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
दि	ये	छ	वाँ॰	धि	॰	॰	॰	॰	॰

(ब)

पने	ने	ने	ने	ऽ	धने	ऽ	ऽ	प	ने
ग॰	ग	ने	त	॰	व	॰	॰	॰	॰
ने	सं	सं	रंसं	ने	सं	ऽ	ऽ	ऽ	सं
वि	म	ल	नी॰	॰	॰	॰	॰	॰	ल
ने	सं	रं	रंसं	रं	मंगं	ऽ	ऽ	रं	सं
हृ	द	य	ल॰	॰	ब॰	॰	॰	॰	॰
संने	नेरं	रंसं	सं	न	ध	ध	न	नध	प
ता॰	हा॰	रि	मि	ल	शा	न्	ति	म	यी
प	प	प	पधम	प	प	सं	ऽ	ऽ	ऽ
ग	भी	र	वा॰॰	॰	णी	॰	॰	॰	॰
स	स	स	रप	मप	मग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नी	र	व	प्रा॰	॰॰	णे॰	॰	॰	॰	॰

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(स)

र	र	ग	गर	स	र	र	ग	र	स
वा	जा	य	उ	षा	नि	शी	थ	कू	ले
र	ऩ	स	रप	मप	म	ग	ऽ	ऽ	ऽ
ये	गी	त	भा०	००	षा	०	०	०	०
म	प	प	प	पम	पन	न	नध	न	न
से	ध्व	नि	नि	ये०	जा०	गि	वे	मो	र
ध	न	ध	पध	नध	1° धप	ऽ	म	ग	रस
न	वी	न	भ्रा०	००	शा	०	०	०	००

(द)

2° धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ने	ने	ने	ने	ने
शा	०	०	०	०	फु	ले	र	म	तो
ने	सं	सं	रंसं	ने	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
स	ह	ज	सु०	०	रे	०	०	०	०
संने	सं	रंगं	गंरं	सं	संने	नेरं	रंसं	सं	न
प्र	भा	त०	म	म	उ०	ठि०	त्रे	पू	०
1° न	ऽ	ऽ	ऽ	सं	2° न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	०	०	०	०	रे	०	०	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	ऽ	न	नध	प	प	प	प	पध	म
स	न्	ध्या	म	न	से	सु	रे	यें ०	०
प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	स	स	रप	मप
न	०	०	०	०	भ	रि	ते	जा ०	० ०
मग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ					
नें ०	०	०	०	०					

गाइये (अ) ⟶

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

12—भेङ्गेछ दुयार

भेङ्गेछ दुयार, एसेछ ज्योतिर्मय, तोमारि हउक जय।
तिमिरविदार उदार अभ्युदय, तोमारि हउक जय॥
हे विजयी वीर, नव जीवनेर प्राते
नवीन आशार खड्ग तोमार हाते—
जीर्ण आवेश काटो सुकठोर घाते, बन्धन होक क्षय॥
एसो दुःसह, एसो एसो निर्दय, तोमारि हउक जय।
एसो निर्मल, एसो एसो निर्भय, तोमारि हउक जय।
प्रभातसूर्य, एसेछ रुद्रसाजे,
दुःखेर पथे तोमार तूर्य वाजे—
अरुणवह्नि ज्वालाओ चित्तमाझे, मृत्युर होक लय॥

भैरवी—ताल दादरा

रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद - कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्रतर **री**

द्रुत लय (मम=240 मात्रा)

(अ[1])

ऩ	स	ग	म	प	प	मध	ध	ध	न	न	ऽसं
भें	ङ्ग	छ	दु	या	र	ए	से	छ.	ज्यो	ति	०र्
1			0			1			0		

सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं	स	सग	ग	गर	ऽ	गर
म	०	०	०	०	य	तो	मा०	रि	हो०	उ	क
1			0			1			0		

स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	मध	ध	ध	न	सं	सं
ज	०	०	०	०	य	ति	मि	र	वि	दा	र
1			0			1			0		

ध	धगं	गं	गंरं	ऽ	गंरं	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं
उ	दा०	र	अ०	०	म्यु	द	०	०	०	०	य
1			0			1			0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स	सग	ग	गर	र	गर	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
तो	मा॰	रि	ह॰	उ	क	ज	॰	॰	॰	॰	य
1			0			1			0		

(अ²)

ऩ	स	ग	म	प	प	मध	ध	ध	न	न	ऽसं
झे	ञ्जे	छ	डु	या	र	ए	से	छ	ज्यो	ति	॰र्
1			0			1			0		
सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं	स	सग	ग	गर	ऽ	गर
म	॰	॰	॰	॰	य	तो	मा॰	रि	हों॰	उ	क
1			0			1			0		
स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स						
ज	॰	॰	॰	॰	य						
1			0								

(व)

ध	ध	ध	न	सं	सं	ध	ध	न	सं	रं	रंसं
हे	वि	ज	यी	वी	र	न	व	जी	व	ने	र
1			0			1			0		
न	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	धगं	ऽ	रं	सं	ऽ
आ	ते	॰	॰	॰	॰	आ	ते॰	॰	॰	॰	॰
1			0			1			0		
ध	धगं	गं	रं	सं	सं	ध	ध	धगं	गं	रं	गंरं
न	वी॰	न	आ	शा	र	ख	ड़	ग॰	तो	मा	र
1			0			1			0		
रं	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	संगं	गं	गं	गं	गंरीं	गं
हा	ते	॰	॰	॰	॰	जी॰	र्	ण	आ	॰वे	श
1			0			1			0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रीं	रीं	गं	रीं	गं	गं	रीं	मंगं	ऽ	रं	सं	रंसं
का	टो	सु	क	ठो	र	घा	ते	०	०	०	००
1			0			1			0		

संन	न	गं	गं	गंरं	गंरं	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं
ब	न्	ध	न	हो	०क	क्ष	०	०	०	०	य
1			0			1			0		

स	सग	ग	गर	र	गर	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
तो	मा०	रि	ह	उ	क	ज	०	०	०	०	य
1			0			1			0		

गाइये (अ¹)+(अ²) →

(स)

ध़	ऩ	स	ऽ	स	सऩ	सग	ग	ग	ग	ग	री
ए	सो	दुः	०	स	ह०	ए०	सो	ए	सो	नि	र्
1			0			1			0		

ग	ऽ	ऽ	र	स	स,	स	सग	ग	गर	र	गर
द	०	०	०	०	य	तो	मा०	रि	ह	उ	क
1			0			1			0		

स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऩ	स	ग	ग	म	म
ज	०	०	०	०	य	ए	सो	नि	र्	म	ल
1			0			1			0		

प	प	ध	ध	न	न	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं
ए	सो	ए	सौ	नि	र्	म	०	०	०	०	य
1			0			1			0		

स	सग	ग	गर	र	गर	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
तो	मा	रि	ह	उ	क	ज	०	०	०	०	य
1			0			1			0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(द)

ध	ध	ध	न	न	सं	ध	ध	न	सं	सं	रंसं
प्र	भा	त	सू	र्	य	ए	से	छ	रु	०	द्र
1			0			1			0		

न	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	धगं	गं	रं	सं
सा	जे	०	०	०	०	दुः	०	खे ०	र	प	थे
1			0			1			0		

ध	ध	न	सं	गं	गं	रं	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
तो	मा	र	तु	र्	य	वा	जे	०	०	०	०
1			0			1			0		

संगं	गं	गं	गंरीं	ऽ	गं	रीं	गं	गं	गं	ऽरीं	गं
अ	रु	ण	व	०	ह्नि	ज्वा	ला	ओ	चि	० ०	त्त
1			0			1			0		

गंरीं	मंगं	ऽ	रं	सं	रंसं	न	ऽ	गं	गं	गंरं	गंरं
मा ०	झे	०	०	०	० ०	मृ	०	त्यु	र	हो	क
1			0			1			0		

सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं	स	सग	ग	गर	र	गर
ल	०	०	०	०	य	तो	मा ०	रि	ह	उ	क
1			0			1			0		

स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
ज	०	०	०	०	य
1			0		

गाइये (अ¹)+(अ²) ⟶

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

13—आजि प्रणमि तोमारे

आजि प्रणमि तोमारे चलिब, नाथ, संसारकाजे ।
तुमि आमार नयने नयन रेखो अन्तरमाझे ।।
हृदयदेवता रयेछ प्राणे मन येन ताहा नियत जाने,
पापेर चिन्ता मरे येन दहि दुःसह लाजे ।।
सब कलरवे सारा दिनमान शुनि अनादि संगीतगान,
सबार सङ्गे येन अविरत तोमार सङ्ग राजे ।
निमेषे निमेषे नयने वचने, सकल कर्मे, सकल मनने,
सकल हृदयतन्त्रे येन मंगल बाजे ।।

विभास—एकताल

सब स्वर शुद्ध

मध्य लय (मम=102 मात्रा)

०	स	स
०	आ	जि
3		

(अ1)

स	ध	धप	प	पधन (3)	नध	धप	प	पग	ग	प	ग
प्र	ण	मि०	तो	मा००	रे०	च०	.लि	ब०	ना	०	थ
1			2			0			3		

									1°			2°		
स	ऽ	र	सर	ग	र	स	ऽ	ऽ	ऽ	स	स	ऽ	प	प
सं	०	सा	र०	०	का	जे	०	०	०	आ	जि	०	तु	मि
1			2			0			3			3		

प	ध	सं	सं	रंसं	संन	न	संन	नध	ध	ध	नधप (3)
आ	मा	र	न	य०	ने०	न	य०	न०	रे	खो	०००
1			2			0			3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ऽ	ध	पध	न	ध	प	ऽ	ग	प	ग	र
अ	॰	न्त	र॰	॰	मा	झे	॰	॰	॰	आ	जि
1			2			0			3		

(अ²)

स	ध	धप	प	पधन	नध	धप	प	पग	ग	प	ग
प्र	ण	मि॰	तो	मा॰॰	रे॰	च॰	लि	ब॰	ना	॰	थ
1			2			0			3		

स	ऽ	र	सर	ग	र	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सं	॰	सा	र॰	॰	का	जे	॰	॰	॰	॰	॰
1			2			0			3		

(ब)

प	प	ग	प	प	ध	सं	सं	सं	रंसं	ऽ	सं
हृ	द	य	दे	व	ता	र	ये	छ	प्रा	॰	णे
1			2			0			3		

सं	रं	रं	रं	रं	संरंगं	गंरं	रंसं	संन	नध	ध	नध
म	न	ये	न	ता	हा॰॰	नि॰	य॰	त॰	जा॰	॰	ने॰
1			2			0			3		

प	ध	ध	ध	सं	सं	प	ध	ध	धसं	सं	सं
पा	पे	र	चि	न्	ता	म	रे	ये	न	द	हि
1			2			0			3		

प	ऽ	ध	पध	न	ध	प	ऽ	ग	प	ग	र
हु;	॰	स	ह॰	॰	ला	जे	॰	॰	॰	आ	जि
1			2			0			3		

गाइये (अ²) →

(स)

स	ध	ध	धप	प	पधन	नध	धप	पग	ग	ग	प
स	ब	क	ल॰	र	वे॰॰	सा॰	रा॰	दि॰	न	मा	न
1			2			0			3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	ग	गर	सर	ग	ग	र	ग	र	रस	स	स
शु	नि	अ॰	ना॰	॰	दि	सं	॰	गी	त॰	गा	न
1			2			0			3		

प	ध	ध	पध	सं	सं	न	संन	नध	ध	ध	नधप (3)
स	वा	र	सं॰	॰	गे	थे	न॰	अ॰	वि	र	त॰॰
1			2			0			3		

प	पधन (3)	नध	धप	ग	गप	ग	ऽ	र	स	ऽ	ऽ
तो	मा॰॰	र॰	सं॰	॰	ग	रा	॰	॰	जे	॰	॰
1			2			0			3		

(द)

प	प	ग	प	प	ध	धसं	सं	सं	सं	सं	सं
नि	मे	षे	नि	मे	षे	न॰	य	ने	व	च	ने
1			2			0			3		

सं	रं	रं	संरं	गं	गंरं	रं	रंसं	संन	नध	ध	धनध
स	क	ल	क॰	र	मे॰	स	क॰	ल॰	म॰	न	ने॰
1			2			0			3		

प	ध	ध	धसं	सं	सं	प	ध	ध	पसं	सं	सं
स	क	ल	हृ॰	द	य	त	न्	त्रे	॰॰	ये	न
1			2			0			3		

प	ऽ	ध	पध	न	ध	प	ऽ	ग	प	ग	र
मं	॰	ग	ला॰	॰	वा	जे	॰	॰	॰	आ	जि
1			2			0			3		

गाइये (अ¹)—(अ²) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

14—दारुण अग्निबाणे

दारुण अग्निबाणे रे हृदय तृषाय हाने रे।
रजनी निद्राहीन, दीर्घ दग्ध दिन
आराम नाहि ये जाने रे ॥
शुष्क काननशाखे क्लान्त कपोत डाके
करुण कातर गाने रे ॥
भय नाहि, भय नाहि। गगने रयेछि चाहि।
जानि झंझार वेशे दिबे देखा तुमि एसे
एकदा तापित प्राणे रे ॥

ताल कहरवा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - अति कोमल **नो**

द्रुत लय (मम=216 मात्रा)

(अ)

म	ऽ	र	र	स	ऽ	सर	ऽ	ऩ	स	र	स	सप	ऽ	ऽ	ऽ
दा	०	रु	ण	अ	०	ग्नि	०	बा	०	णे	०	रे०	०	०	०

स	ऽ	र	र	रम	ऽ	र	र	रस	ऽ	र	ऽ	रम	ऽ	र	ऽ
हृ	०	द	य	तृ०	०	षा	य	हा	०	ने	०	रे०	०	०	०

स	र	म	प	पनो	ध	नो	प	म	ऽ	र	र	स	ऽ	सर	ऽ
हा	०	०	०	० ०	०	ने	०	दा	०	रु	ण	अ	०	ग्नि०	०

(ब)

ऩ	स	र	स	सप	ऽ	ऽ	ऽ	म	प	प	ऽ	पनो	ध	नो	ध
वा	०	णे	०	रे०	०	०	०	र	ज	नी	०	नि०	०	द्रा	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धनो ऽ ऽ ऽ	प ऽ ऽ प	म ऽ प ऽ	म ऽ प ऽ
ह्रीं० ० ० ०	० ० ० न	दी ० र्घ ०	द ० ग्ध ०

पम ऽ प ऽ	ऽ ऽ ऽ प	पम ऽ प ऽ	पनो ऽ ध प
दि ० ० ०	० ० ० न	आ ० रा म	ना० ० हि ये

पम ऽ प ध	धम प र ऽ	स र म प	पनो ध नो प
जा ० ने ०	रे ० ० ०	जा ० ० ०	०० ० ने ०

गाइये (अ) →

(स)

म म प ऽ	पनो प न न	न ऽ सं ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
शु ष् क ०	का० ० न न	शा ० खे ०	० ० ० ०

संरं रं मं मं	मंरं ऽ ऽ सं	पनो धनो नोप ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
क्ला० न् त क	पो ० ० त	डा० ०० के ०	० ० ० ०

म नोध नो ध	धनो धनो प प	पस ऽ म ऽ	रप ऽ ऽ ऽ
क रु० ण ०	का० ०० त र	गा ० ने ०	रे० ० ० ०

(द)

स र म प	पनो ध नो प	स स स ऽ	ऩ ऽ प़ ऩ
गा ० ० ०	०० ० ने ०	भ य ना ०	हि ० भ य

← गाइये (अ)

स ऽ र ऽ	प ऽ म म	र ऽ स ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ना ० हि ०	० ० भ य	ना ० हि ०	० ० ० ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	प	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पनो	ध	धनो	ऽ	प	ऽ	ऽ	ध
ग	ग	ने	०	०	०	०	०	र०	ये	छि०	०	०	०	०	०
पम	पम	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	परं	संरं	सं	नो	प	म	र	र
चा	००	हि	०	०	०	०	०	चा०	००	०	०	हि	०	भ	य
स	ऽ	ऩ	ऽ	प़	ऩ	स	ऽ	र	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ	म	म
ना	०	हि	०	भ	य	ना	०	हि	०	०	०	०	०	भ	य
र	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	न	न	न	न	ऽ	ऽ	सं
ना	०	हि	०	०	०	०	०	जा	नि	झ	न्	झा	०	०	र
रंसं	न	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	सं	रं	ऽ	रंमं	ऽ	रं	सं
वे०	०	शे	०	०	०	०	०	दि	बे	दे	०	खा०	०	तु	मि
पनो	धनो	नोप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	नोध	नो	ध	धनो	धनो	प	प
ए०	००	से	०	०	०	०	०	ए	क०	दा	०	ता०	००	पि	त
स	ऽ	र	ऽ	रप	ऽ	ऽ	ऽ	स	र	म	प़	पनो	ध	नो	प
प्रा	०	णो	०	रे०	०	०	०	प्रा	०	०	०	००	०	णो	०

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

15—शङ्‌नगगने

शाङ्‌नगगने घोर घनघटा, निशीथयामिनी रे।
कुञ्जपथे सखि, कैसे याम्रोव ग्रबला कामिनी रे।
उन्मद पवने यमुना तर्जित, घन घन गर्जित मेह।
दमकत विद्युत, पथतरु लुण्ठित, थरहर कम्पित देह।
घन घन रिम्झिम् रिम्झिम् बरखत नीरदपुञ्ज।
शाल-पियाले ताल-तमाले निविड़तिमिरमय कुञ्ज।
कह रे सजनी, ए दुरुयोगे कुञ्जे निरदय कान
दारुण बाँशी काह बजायत सकरुण राधा नाम।
मोतिम हारे वेश बना दे सीँथि लगा दे भाले।
उरहि विलुण्ठित लोल चिकुर मम बाँधह चम्पकमाले।
गहन रयनमे न याम्रो बाला, नम्रोलकिशोरक पाश।
गरजे घन घन, बहु डर पाम्रोब, कहे भानु तव दास॥

त्रिताल

गंधार और निषाद - अति कोमल। रिषभ तीव्र

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **गे** *और तीव्र* **ने**

द्रुत लय (मम=188 मात्रा)

(अ[1])

र	प	पम	प	पग	र	मग	र	रस	रग	गर	स	र	ने	स	ऽ
श	०	ड़	न	ग	ग	ने०	०	घो	००	र	घ	न	घ	टा	०

(अ[2])

म	म	प	प	प	म	मन	न	नग	ऽ	ऽ	ऽ	र	स	र	ऽ
नि	शी	०	थ	या	०	मि०	नी	रे	०	०	०	०	०	०	०

र	प	पम	प	पग	र	मग	र	रस	रग	गर	स	र	ने	स	ऽ
श	०	ड़	न	ग	ग	ने०	०	घो	००	र	घ	न	घ	टा	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	प	प	प	प	ऽ	प	प	पन	ऽ	नध	न	नध	न	ध	प
कु	न्	ज	प	थे	॰	स	खि	कै	॰	से	॰	या	॰	औ	व

म	म	प	म	प	ऽ	प	पसं	नसं	नसं	न	ध	प	म	गर	स
अ	ब	ला	॰	का	॰	मि	नी॰	रे॰	॰॰	॰	॰	॰	॰	॰॰	॰

गाइये (अ1)—→

(ब)

म	प	प	प	प	प	प	नें	नें	नें	नें	सं	रंसं	सं	सं	सं
उ	न्	म	द	प	व	ने	॰	य	मु	ना	॰	त	र्	जि	त

म	म	प	प	प	प	प	ध	धन	ऽ	धप	ध	धप	ऽ	ऽ	ऽ
घ	न	घ	न	ग	र्	जि	त	मे	॰	॰॰	॰	ह	॰	॰	॰

म	प	प	प	प	ऽ	प	प	म	प	प	पनें	नें	सं	सं	सं
द	म	क	त	वि	॰	द्यु	त	प	थ	त	रु॰	लु	ण्	ठि	त

नें	नेंरं	रंसं	न	ध	ध	प	पध	धम	ऽ	पधप (3)	मप	पग	ऽ	ऽ	ऽ
थ	र॰	ह	र	क	म्	पि	त॰	दे	॰	॰॰॰	॰॰	ह	॰	॰	॰

गे	गे	गे	गे	गे	गे	गे	गे	म	म	म	म	पम	गे	म	म
घ	न	घ	न	रि	म	झि	म	रि	म	झि	म	रि॰	म	झि	म

गे	म	प	प	प	ऽ	प	पध	धम	ऽ	पधप (3)	मप	पग	ऽ	रस	र
ब	र	ख	त	नी	॰	र	द॰	पु	॰	॰॰॰	न्॰	ज	॰	॰॰	॰

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गे	ऽ	गे	गे	पम	गे	म	ऽ	गेम	प	पम	गर	मग	र	स	ऽ
शा	०	ल	पि	या	०	ले	०	ता०	०	ल	त०	मा०	०	ले	०

र	प	पम	प	पम	मग	गर	स	रस	ऩे	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	वि	ड़	ति	मि	र०	म	य	कु०	न्	ज	०	०	०	०	०

म	प	प	ने	ने	ने	ने	ऽ	पने	ऽ	सं	रं	रंने	ऽ	सं	ऽ
क	ह	रे	०	स	ज	नी	०	ए०	दु	रु	०	यो	०	गे	०

सं	रं	संरं	सं	संन	न	धप	ध	संन	ऽ	धप	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ
कु	न्	जे०	०	नि	र	द०	य	का०	०	००	०	न	०	०	०

मप	ऽ	प	प	प	ऽ	प	म	प	न	नध	न	संन	ऽ	ध	प
दा०	०	रु	ण	बाँ	०	शी	०	का	०	ह	ब	जा	०	य	त

पम	म	प	पध	धम	ऽ	पध	मप	मग	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	स	स
स	क	रु	ण०	रा	०	धा०	००	ना	०	०	०	०	०	०	म

सऩे	ऽ	प़	ऩे	ऩे	स	स	ऽ	सऩे	ऽ	प	ऩे	ऩे	स	स	ऽ
मों०	०	ति	म	हा	०	रे	०	वे०	०	श	ब	ना	०	दे	०

सऩे	ऽ	स	र	र	ऽ	र	स	रस	र	मग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सीं०	०	थि	ल	भा	०	दे	०	मा०	०	ले	०	०	०	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	म	प	प	प	प	प	प	म	प	प	पन	पन	न	प	प
उ	र	हिं	वि	लु	ए	ठि	त	लो	०	ल	चि०	कु०	र	म	म

पम	ऽ	प	प	पसं	सं	मग	गम	मग	ऽ	ऽ	म	र	ग	स	ऽ
बाँ	०	ध	ह	च०	म्	प	क०	मा	०	०	०	ले	०	०	०

म	प	पने	ने	ने	ने	ने	ऽ	नेप	ने	ऽ	संरं	रंने	ऽ	सं	ऽ
ग	ह	न०	र	य	न	मे	०	न	या	०	ओ०	बा	०	ला	०

सं	नेरं	रंसं	नध	न	ऽ	धप	ध	संन	ऽ	ऽ	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ
न	०ओ	ल	कि०	शो	०	र०	क	पा	०	०	०	श	०	०	०

पन	न	न	ऽ	नध	न	नधप	ध	ध	रं	रंसं	रं	रंन	ऽ	ध	प
ग०	र	जे	०	घ	न	घ०	न	व	हु	ड	र	पा	०	ओ	व

पम	म	ऽ	प	ऽ	प	पध	धप	मग	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	स	ऽ
क	हे	०	भा	०	नु	त०	व	दा	०	०	०	स	०	०	०

गाइये (अ^{1})+(अ^{2})+(अ^{1}) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

16—बादल-बाउल बाजाय

बादल-बाउल बाजाय रे एकतारा—
सारा वेला ध'रे झरो झरो झरो धारा ॥
जामेर वने धानेर खेते आपन ताने आपनि मेते
नेचे नेचे हल सारा ॥
घन जटार घटा घनाय आँधार आकाश-माझे,
पाताय पाताय टुपुर टुपुर नूपुर मधुर बाजे ।
घर-छाड़ानो आकुल सुरे उदास हये वेड़ाय घुरे
पुवे हाओया गृहहारा ॥

ताल कहरवा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर तीव्र **मे** *और अति कोमल* **नो**

द्रुत लय (मम=240 मात्रा)

(अ[1])

स	ऽ	ग	ग	ग	म	धप	प	[प]ग	ऽ	म	ऽ	[म]ग	ऽ	पम	ग
वा	०	द	ल	बा	०	उ०	ल	बा	०	जा	य	वा	०	जा०	य
[ग]र	ऽ	गप	[प]म	[म]ग	ऽ	ऽ	ऽ	गप	मे	प	न	[न]ध	न	[न]प	प
वा	०	जा०	य	रे	०	०	०	बा०	०	जा	य	रे	०	ए	क
प	ध	म	प	[प]ग	म	र	ग	स	ऽ	ग	ग	ग	म	धप	प
ता	०	०	०	रा	०	०	०	बा	०	द	ल	बा	०	उ०	ल
[प]ग	ऽ	म	म	[म]ग	ऽ	पम	ग	[ग]र	ऽ	गप	[प]म	[म]ग	ऽ	प	ऽ
बा	०	जा	य	वा	०	जा०	य	बा	०	जा०	य	रे	०	सा	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| प न ऽ न | न सं ऽ संन | धन ऽ प ऽ | ऽ ऽ प मे |
| रा ० ० वे | ला ० ० ध० | रे० ० ० ० | ० ० झ रो |

| प सं संन सं | नध न नप ऽ | प ध म प | पग म र ग ||
| झ ० रो ० | झ ० रो ० | धा ० ० ० | रा ० ० ० ||

(अ^2)

| स ऽ ग ग | ग म धप प | पग ऽ म ऽ | मग ऽ पम ग |
| बा ० द ल | बा ० उ० ल | बा ० जा य | बा ० जा० य |

| गर ऽ गप पम | मग ऽ ऽ ऽ |
| बा ० जा० य | रे ० ० ० |

(ब)

|| प मे ध प | पन नध न ऽ | नसं ऽ सं सं | सं ऽ सं ऽ |
|| जा ० मे र | ब० ० ने ० | धा० ० ने र | खे ० ते ० |

| पसं ऽ सं न | नध न सं ऽ | सं न रं संन | धन ऽ धप ऽ |
| आ० ० प न | ता ० ने ० | आ ० प नि० | मे० ० ते० ० |

| प सं ऽ नो | नो ऽ नो ध | धप ध धप ऽ | पम पम मग ऽ |
| ० ० ० ० | ने ० चे ० | ने ० चे ० | ने ०० खे ० |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(स)

स	ऽ	ग	ऽ	ग	म	प	ऽ	स	ऽ	स	ऽ	स	ऽ	सन्	न्
ह	०	ल	०	सा	०	रा	०	घ	०	न	०	ज	०	टा	र

← गाइये (अ^1)+(अ^2)

स़	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	रस	ऩ	स	ऽ	ग	ग	गम	ऽ	प	ग
घ	०	टा	०	घ	०	ना	य	आँ	०	धा	र	आ०	०	का	श
गम	र	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गप	मे	प	मे	मेप	मेप	ग	मे
मा	०	झें	०	०	०	०	०	पा०	०	ता	य	पा०	००	ता	य
प	न	नध	ध	धप	मे	प	प	पमेप	ध	धप	ऽ	पम	ऽ	ग	ग
दु	०	पु	र	दु	०	पु	र	नू०	०	पु	र	म	०	धु	र
गर	पम	मग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गसं	ऽ	गं	गंरं	रं	ऽ	सं	ऽ
बा	००	जे	०	०	०	०	०	घ०	०	र	छा	ड़ा	०	नो	०
सं	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	सं	न	नध	न	सं	ऽ	ऽ	सं	सं	न
आ	०	कु	ल	सु	०	रे	०	उ	०	दा	०	०	स	ह	ये
नध	न	सं	न	धन	ऽ	धप	ऽ	न	ऽ	नसं	संन	नध	न	धप	ऽ
वे	०	ड़ा	य	धु०	०	रे०	०	पु	०	बे०	०	हा	ओ	या०	०
प	सं	ऽ	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ध	धप	ऽ	ध	प	पम	ऽ	प	ऽ
०	०	०	०	०	०	०	०	गृ	०	ह	०	हा	०	रा	०

गाइये (अ^1)+(अ^2) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

17—एसो नीपवने

एसो नीपवने छायावीथितले,
एसो करो स्नान नवधाराजले ॥
दाओ आकुलिया घन कालो केश, परो देह घेरि मेधनील वेश—
काजल नयने, यूथीमाला गले, एसो नीपवने छायावीथितले ॥
आजि क्षणे क्षणे हासिखानि सखी,
अधरे नयने उठुक चमकि ।
मल्लारगाने तव मधुस्वरे दिक् वाणी आनि वनमर्मरे ।
घनवरिषने जल-कलकले एसो नीपवने छायावीथितले ॥

ताल—(2+2)

गंधार और निषाद अति - कोमल। रिषभ - तीव्र

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **गे,** *तीव्र* **ने**

द्रुत लय (मम=204 मात्रा)

(अ[1])

स	सने	स	प	प	मर	मग	ऽ	र	स
ए	सो॰	नीं	॰	प	व॰	ने॰	॰	॰	॰

(अ[2])

स	र	ग	र	रस	र	स	ने	स	प	प	ऽ
छा	या	वी	थि	त	ले	ए	सो	क	॰	रो	॰

(अ[3])

प	ध	न	ध	धप	ध	म	प	गे	गे	म	प
स्ना	॰	॰	न	न	व	धा	रा	ज	ले	ए	सो

मप	म	ग	गर	मग	ऽ	र	स	स	र	ग	र
नी॰	॰	प	व॰	ने॰	॰	॰	॰	छा	या	वि	थि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ब)

स	र	सं	सं	सं	ऽ	रं	रं	रंगं	ऽ	ऽ	ऽ
त	ले	दा	ओ	आ	०	कु	लि	या	०	०	०

गंरं	रंमं	गं	रं	सं	सं	संने	सं	संने	रं	सं	नध
घ	न०	का	लो	के	श	प०	रो	दे०	०	ह	धे०

										1°		2°	
न	ऽ	ऽ	ऽ	नध	सं	न	ध	प	ऽ	सं	ऽ	पध	म
रि	०	०	०	मे	घ	नी	ल	वे	श	दा	ओ	का०	०

प	ध	न	ध	संन	ऽ	ध	प	प	ध	म	प
ज	ल	न	य	ने०	०	०	०	यू	थी	मा	ला

म	गे
ग	ले

गाइये (अ¹)+(अ²)+(अ³) →

(स)

स	ने	ने	ऽ	नेप	ने
आ	जि	क्ष	०	ऐ०	०

ने	ऽ	स	ऽ	स	सप	प	प	पध	म	प	ध
क्ष	०	ऐ	०	ह्रा	सि	खा	नि	स	खि	अ	ध

धन	प	प	प	पध	ऽ	गे	ऽ	गे	गेम	म	धप
रे०	०	न	य	ने०	०	०	०	उ	ठु०	क	च०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	ग	र	स	ऩे	ऽ	पऩे	ऩे	ऩे	ऽ	स	ऽ
म	कि	आ	जि	क्ष	०	णे०	०	क्ष	०	णे	०

(द)

ऽ	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	रं	रं	रंगं	ऽ	ऽ	ऽ
०	०	म	ल्	ला	०	र	गा	ने०	०	०	०

गंरं	रंमं	गं	रं	सं	ने	सं	सं	संने	रं	सं	ऽ
न	व०	म	धु	स्व	रे	दि	क्	वा०	०	णी	०

न	ध	न	ऽ	नध	धसं	न	न	ध	प	पध	म
आ	०	नि	०	ब	न०	म	र्	म	रे	घ०	न

प	ध	न	ध	संन	ऽ	ध	प	प	ध	म	प
ब	०	रि	ष	ने०	०	०	०	ज	ल	क	ल

म	गे
क	ले

गाइये (अ³)+(अ²)+(अ³) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

18—आमरा बेँधेछि काशेर गुच्छ

आमरा बेँधेछी काशेर गुच्छ, आमरा गेँथेछि शेफालिमाला—
नवीन धानेर मञ्जरी दिये साजिये एनेछि डाला ॥
एसो गो शारदलक्ष्मी, तोमार शुभ्र मेघेर रथे,
एसो निर्मल नील-पथे
एसो धौत-श्यामल आलो-झलमल वनगिरि-पर्वते—
एसो मुकुटे परिया श्वेत शतदल शीतल-शिशिर-ढाला ॥
झरा मालतीर फुले
आसन बिछानो निभृत कुञ्जे भरा गङ्गार कूले,
फिरिछे मराल डाना पातिबारे तोमार चरणमूले ।
गुञ्जरतान तुलियो तोमार सोनार वीणार तारे
मृदुमधु झंकारे,
हासि—ढाला सुर गलिया पड़िबे क्षणिक अश्रुधारे ।
रहिया रहिया ये परशमणि झलके अलककोणे
पलकेर तरे सकरुण करे बुलायो बुलायो मने—
सोना हये याबे सकल भावना, आँधार हइबे आला ॥

एकताल

रिषभ और धैवत—कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - कोमल **गा** *कोमल* **ना** *और तीव्रतर* **री**

द्रुत लय (मम=144 मात्रा)

(अ)

र	म	म	म	मग	म	प	प	प	धप	स	स
बेँ	धे	छि	का	शे	र	गु	च्	छ	आ	म	रा

र	म	म	म	मग	म	प	प	ध	प	प	प
बेँ	धे	छि	का	शे	र	गु	च्	छ	आ	म	रा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पम	ध	ध	न	सं	रंसं	नसं	प	ध	न	ऽ	ऽ
गें	थे	छि	शे	फा	लि	मा	०	०	ला	०	०

नध	न	न	सं	सं	संरं	संन	सं	संन	ध	धप	पम
न	वी	न	धा	ने	०र	म	न्	ज	री	दि	ये०

मप	प	पना	नाध	प	म	मग	ऽ	म	मना	ऽ	ध
सा	जि	ये०	ए	ने	छि	डा	०	०	ला	०	०

नाध	ध	प	म	मग	म	प	प	प	ऽ	ऽ	ऽ
वें	धे	छि	का	शे	र	गु	च्	छ	०	०	०

(ब)

पध	ध	ध	न	सं	सं	संरं	रं	रंसं	संन	सं	सं
ए	सो	गो	शा	र	द	ल	क्ष्	मी	तो	मा	र

सं	ऽ	संगां	गारं	सं	सं	संन	सं	न	नध	प	ऽ
शु	०	भ्र	मे	घे	र	र	थे	०	ए	सो	०

पसं	सं	सं	सं	संरं	रंसं	संन	सं	न	नध	प	ध
नि	र्	म	ल	नी	ल	प	थे	०	ए	सो	०

धसं	ऽ	सं	सं	संरं	रंसं	संन	सं	न	नध	प	पम
धौ	०	त	श्या	म	ल	आ	लो	क	ल	म	ल०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मप	पना	नाध	़प	पम	ग	़म	प	ऽ	ऽ	स	स
व	न ॰	गि	रि	प	र्	व	ते	॰	॰	ए	सो

री	म	म	म	मग	म	प	प	प	प	प	प
मु	कु	टे	प	रि	या	श्वे	त	श	त	द	ल

पध	ध	धरं	रंसं	सं	न	नप	ऽ	ध	न	ऽ	सं
शी	त	ल	शि	शि	र	ढ़ा	॰	॰	ला	॰	॰

नाध	ध	प
बें	धे	छि

गाइये (अ) ⟶

(स)

स	र	म	म	म	म	म	गम	पध	मप	ऽ	ऽ
झ	रा	मा	ल	ती	र	फु	॰॰	॰॰	ले	॰	॰

पध	ध	ध	ध	ध	ध	प	प	पना	नाध	ध	प
आ	स	न	वि	छा	नो	नि	भृ	त ॰	कु	न्	जे

प	ध	धप	म	म	म	म	गम	पध	मप	ऽ	ऽ
भ	रा	गं	॰	गा	र	क्	॰॰	॰॰	ले	॰	॰

प	ध	न	नसं	सं	सं	संन	सं	न	ध	धप	पम
फि	रि	छे	म	रा	ल	डा	ना	पा	ति	बा	रे॰

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मप	प	पना	धना	ध	प	पम	ऽ	गप	पम	ऽ	ग
तो	मा	र	च०	र	ण	मू	०	००	ले	०	०

गस	ग	ग	गर	र	र	स	स	स	स	स	स
गु	न्	ज	र	ता	न	तु	लि	यो	तो	मा	र

स	सर	र	र	र	र	र	ऽ	सन्	स	ऽ	ऽ
सो	ना	र	वी	णा	र	ता	०	००	रे	०	०

									1°			2°		
स	र	ग	म	म	ऽ	म	ऽ	गप	पम	ग	र	पम	ग	ऽ
मृ	दु	म	धु	ऋं	०	का	०	००	रे	०	०	रे	०	०

प	ध	धसं	सं	सं	सं	संन	सं	न	ध	प	पम
हां	सि	ढा	ला	सु	र	ग	लि	या	प	ड़ि	बे०

मप	प	पना	नाध	ऽ	प	म	गम	पध	मप	ऽ	ऽ
क्ष	णि	क०	अ	०	श्रु	धा	००	००	रे	०	०

ध	धं	ध	न	सं	सं	संरं	रं	रं	संन	सं	सं
र	हिं	या	र	हि	बा	ये	प	र	श०	म	णि

सं	सं	संगां	गांरं	रं	सं	संन	ऽ	संरं	नसं	ध	ऽ
झ	ल	के०	अ	ल	क	को	०	००	णे	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धरं	सं	सं	सं	रं	सं	संन	सं	संन	नध	प	पम
प	ल	के	र	त	रे	स	क	रु	ण	क	रे॰

पना	नाध	प	पना	नाध	प	पम	गम	पध	धप	ऽ	ऽ
बु	ला	यो	बु	ला	यो	म	००	००	ने	०	०

स	र	रम	म	मग	म	प	प	प	प	प	प
सो	ना	हृ	ये	या॰	वे	स	क	ल	भा	व	ना

पध	ध	धरं	रंसं	सं	न	नप	ऽ	ध	न	ऽ	सं
आँ	धा	र	ह	इ	बे	आ	०	०	ला	०	०

नाध	ध	प
बें	धे	छि

गाइये (अ) ⟶

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

19—एइ शरत्-आलोर कमलवने

एइ शरत्-आलोर कमलवने
बाहिर हये विहार करे ये छिल मोर मने मने ।।
तारि सोनार काँकन बाजे आजि प्रभात-किरण माझे,
हाओयाय काँपे आँचलखानि—छड़ाय छाया क्षणे क्षणे ।।
आकुल केशेर परिमले
शिउलिवनेर उदास वायु पड़े थाके तरुर तले ।।
हृदय-माझे हृदय दुलाय, बाहिरे से भुवन भुलाय—
आजि से तार चोखेर चाओया छड़िये दिल नील गगने ।।

ताल रूपक

रिषभ और धैवत - कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्रतर **रीं,** *कोमल* **गा** *और कोमल* **ना**

मध्यलय (*मम=120 मात्रा*)

(अ)

मग	म	प	नाध	ऽ	प	ऽ	ध	पम	प	ध	मप	धप	मग	ऽ	ऽ
श	र	त्	आ	०	लो	०	र	क	म	ल	व०	००	ने	०	०

ग	म	म	म	ऽ	म	ऽ	ऽ	मग	म	प	गम	पध	ध	ऽ	ऽ
वा	हि	र	ह	०	ये	०	०	वि	हा	र	क०	००	रे	०	०

धन	ऽ	सं	संरं	रंसं	नसं	ध	ऽ	ध	रं	रंसंन	नध	ऽ	प	ऽ	मग
ये	०	छि	ल	०	मो०	०	र	म	०	नें०	म	०	ने	०	००

मग	म	पं	नाध	ऽ	प	ऽ	ध	पम	प	ध	मप	धप	मग	ऽ	ऽ
श	र	त्	आ	०	लो	०	र	क	म	ल	व०	००	ने	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ब)

ध	ध	ऽ	|	पध	ऽ	|	धसं	ऽ	न	|	नध	धसं	न	|	नध	ऽ	|	प	ऽ ऽ
ता	रि	०	|	सो	०	|	ना	०	र	|	काँ	क	न	|	वा	०	|	जे	० ०

पम	ध	ऽ	|	पध	नापध	|	म	ग	ग	|	म	नाध	व	|	न	ऽ	|	सं	ऽ ऽ
आ	जि	०	|	प्र०	० ००	|	भा	०	त	|	कि	र	ण	|	मा	०	|	झे	० ०

संगां	गां	ऽ	|	गां	रीं	|	गां	ऽ	ऽ	|	गांमं	मंगां	गां	|	गांरं	ऽ	|	सं	ऽ ऽ
हा ओ	या	य	|	काँ	०	|	पे	०	०	|	आँ	च	ल	|	खा	०	|	नि	० ०

संरं	सं	सं	|	ना	ध	|	ध	प	ऽ	|	प	पध	संन	|	नध	ऽ	|	प	ऽ मग
छ	ड़ा	या	|	छा	०	|	या	०	०	|	क्ष	णे०	००	|	क्ष	०	|	णे	० ००

गाइये (अ) →

(स)

स	र	म	|	म	ऽ	|	म	ऽ	म	|	मग	म	ऽ	|	गम	पध	|	ध	ऽ ऽ
आ	कु	ल	|	के	०	|	शे	०	र	|	प	रि	०	|	म०	००	|	ले	० ०

धन	न	सं	|	संरं	ऽ	|	रंसं	ऽ	सं	|	न	सं	सं	|	सं	न	|	सं	ऽ ना
शि	उ	लि	|	व	०	|	ने	०	र	|	उ	दा	स	|	वा	०	|	यु	० ०

संना	ना	ध	|	ध	ऽ	|	प	ऽ	ध	|	धम	प	ध	|	मप	धप	|	मग	ऽ ऽ
प	ड़े	०	|	था	०	|	के	०	०	|	त्त	रु	र	|	त०	००	|	ले	० ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(द)

गध	ध	ध	न	ऽ	सं	ऽ	ऽ	संरं	रं	सं	रंसं	न	सं	ऽ	ऽ
हृ	द	य	मा	०	झे	०	०	हृ	द	य	दु०	०	ला	०	य

सं	गां	गांरीं	मगां	ऽ	रं	सं	ऽ	संन	सं	रंसं	नसं	न	ध	ऽ	ध
वा	०	हि०	रे	०	से	०	०	भु	व	न०	भु	०	ला	०	य

धसं	संन	सं	संरं	ऽ	सं	ऽ	सं	संरं	सं	ना	संना	ना	ध	प	ऽ
आ०	०	जि	से	०	ता	०	र	चो	खे	र	चा	ओ	या	०	०

पगां	गां	गांरीं	मंगां	ऽ	रं	सं	ऽ	म	र	ग	म	प	नाध	ऽ	ऽ
छ	ड़ि	ये०	दि	०	ल	०	०	नी	ल	ग	ग	०	ने	०	०

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

20—हाय हेमन्तलक्ष्मी

हाय हेमन्तलक्ष्मी, तोमार नयन केन ढाका—
हिमेर घन घोमटाखानि धूमल रङे आँका ॥
सन्ध्याप्रदीप तोमार हाते मलिन हेरि कुयाशाते,
कण्ठे तोमार वाणी येन करुण वाष्पे माखा ॥
धरार आँचल भरे दिले प्रचुर सोनार धाने ।
दिगङ्गनार अङ्गन आज पूर्ण तोमार दाने ।
आपन दानेर आड़ालेते रइले केन आसन पेते,
आपनाके एइ केमन तोमार गोपन क'रे राखा ।

ताल कहरवा

सब स्वर शुद्ध

कमी कमी अतिरिक्त स्वर - कोमल **धा** *और अतिकोमल* **नो**

द्रुतलय (मम=240 मात्रा)

ध	ऽ	रं	रं	रंसं	सं	सं	ऽ	सं	न	रंसं	ऽ	ऽ	ऽ	प	ध
हा	०	य	हे	म	न्	त	०	ल	क्ष्	मी०	०	०	०	०	०

ध	ऽ	रं	रं	रंसं	सं	सं	ऽ	संन	ऽ	रंसं	ऽ	संन	ऽ	सं	न
हा	०	य	हे	म	न्	त	०	ल	०	क्ष्मी०	०	तो	०	मा	र

नध	न	धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	धप	प	पम	ऽ	ग	म
न	०	य०	०	०	०	०	०	०	०	०	न	तो	०	मा	र

मर	ऽ	ग	ग	ग	ऽ	ग	म	म	प	प	ऽ	ध	ऽ	न	प
न	०	य	न	के	०	न	०	ढा	०	का	०	०	०	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	ऽ	रं	रं	रंसं	सं	स	ऽ	सं	न	रंसं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
हा	०	य	हे	म	न्	त	०	ल	क्ष्	मी०	०	०	०	०	०

प	ऽ	न	न	नध	ऽ	न	ऽ	नप	प	ध	ऽ	धम	ऽ	प	ऽ
हि	०	मे	र	घ	०	न	०	घो	म	टा	०	खा	०	नि	०

पम	ऽ	ध	ध	धप	ऽ	पध	धप	पम	प	पग	ऽ	ग	ऽ	ग	म
धू	०	म	ल	र	०	ङ्के०	०	आँ	०	का	०	तो	०	मा	र

गर	ऽ	ग	ग	ग	ऽ	ग	म	म	ऽ	प	ऽ	ध	ऽ	न	प
न	०	य	न	के	०	न	०	ढा	०	का	०	०	०	०	०

ध	ऽ	रं	रं	रंसं	सं	सं	ऽ	सं	न	रंसं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
हा	०	य	हे	म	न्	त	०	ल	क्ष्	मी०	०	०	०	०	०

प	ऽ	प	प	पन	ऽ	न	सं	सं	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	सं	ऽ
स	०	न्	ध्या	प्र०	०	दी	प	तो	०	मा	र	हा	०	ते	०

सं	ऽ	संन	सं	संध	ऽ	न	सं	संन	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	न	ऽ
म	०	लि	न	हे	०	०	०	रि	०	०	०	के	०	न	०

न	सं	सं	सं	सं	ऽ	रंसं	ऽ	संन	ऽ	सं	संन	नधन	ऽ	धप	ऽ
म	०	लि	न	हे	०	रि०	०	कु	०	या	०	शा०	०	ते०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	ऽ	रं	रंसं	|	संनो	ध	संनो	ध	|	धप	ऽ	ध	प	|	पम	ऽ	प	म़
क	०	ण्	ठे	|	तो	०	मा०	र	|	वा	०	णी	०	|	ये	०	न	०
मग	ऽ	म	ग	|	गर	र	ग	ऽ	|	म	ऽ	प	ऽ	|	ध	ऽ	न	सं
क	०	रु	ण	|	वा	ष्	पे	०	|	मा	०	खा	०	|	तो	०	मा	र्
संधन	ऽ	धप	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽध	ऽ	धप	प	|	म	ऽ	मग	म
न०	०	य०	०	|	०	०	०	०	|	००	०	०	न	|	तो	०	मा	र
गर	ऽ	ग	ग	|	ग	ऽ	ग	म	|	म	ऽ	प	ऽ	|	ध	ऽ	न	प
न	०	य	न	|	के	०	न	०	|	ढा	०	का	०	|	०	०	०	०
ध	ऽ	रं	रं	|	रंसं	सं	सं	ऽ	|	सं	न	रंसं	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
हा	०	य	हे	|	म	न्	त	०	|	ल	क्ष्	मी	०	|	०	०	०	०
स	ऽ	स	स	|	सर	ऽ	र	र	|	र	ऽ	ग	र	|	ग	ऽ	ग	म
ध	०	रा	र	|	आँ०	०	च	ल	|	भ	०	रे		|	दि	०	ले	०
म	ऽ	प	प	|	पग	ऽ	ग	म	|	म	ऽ	प	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प्र	०	चु	र	|	सो	०	ना	र	|	धा	०	ने	०	|	०	०	०	०
प	धा	धा	ऽ	|	धा	ऽ	नाधा	प	|	प	ऽ	ऽ	धा	|	धाप	ऽ	प	म
दि	०	गं	०	|	ग	०	ना०	र	|	अं	०	ग	०	|	न	०	आ	ज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ऽ	न	न	नधा	ऽ	प	धा	धामप	ऽ	मग	ऽ	ग	ऽ	ग	म
पू	०	र्	ण	तो	०	मा	र	दा०	०	ने०	०	प्र	०	चु	र

प	ऽ	प	न	न	ऽ	नध	न	नध	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सो	०	ना	र	धा	०	ने	०	धा	०	ने	०	०	०	०	०

प	ऽ	प	प	पन	ऽ	न	सं	सं	ऽ	सं	ऽ	सं	ऽ	सं	ऽ
आ	०	प	न	दा०	०	ने	र	आ	०	ड़ा	०	ले	०	ते	०

पसं	ऽ	सं	संन	नध	ऽ	न	सं	संन	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	न	ऽ
र०	०	इ	ले	के	०	०	०	न	०	०	०	तु	०	भि	०

नसं	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	रंसं	ऽ	संन	ऽ	सं	न	धन	ऽ	धप	ऽ
र०	०	इ	ल	के	०	न०	०	आ	०	स	न	पे०	०	ते०	०

ध	ऽ	रं	रंसं	संनो	ध	संनो	ध	धप	ऽ	ध	प	पम	ऽ	प	म
आ	०	प	ना	के	०	ए०	इ	के	०	म	न	तो	०	मा	र

मग	ऽ	म	ग	गर	ऽ	ग	ऽ	म	ऽ	प	ऽ	ध	ऽ	न	न
गो	०	प	न	क	०	रे	०	रा	०	खा	०	तो	०	मा	र

धन	ऽ	धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽध	ऽ	प	प	म	ऽ	ग	म
न०	०	य०	०	०	०	०	०	००	०	०	न	तो	०	मा	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

र	ऽ	ग	ग	ग	ऽ	ग	म	म	ऽ	प	ऽ	ध	ऽ	न	प
न	०	य	न	के	०	न	०	ढा	०	का	०	०	०	०	०

ध	ऽ	रं	रं	रंसं	सं	सं	ऽ	सं	न	रंसं	ऽ	ऽ	ऽ	प	ध
हा	०	य	हे	म	न्	त	०	ल	क्ष्	मी०	०	०	०	०	०

ध	ऽ	रं	रं	रंसं	सं	सं	ऽ	सं	न	रंसं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
हा	०	य	हे	म	न्	त	०	ल	०	क्ष्मी	०	०	०	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

21—हिमेर राते ओइ गगनेर

हिमेर राते ओइ गगनेर दीपगुलिरे
हेमन्तिका करल गोपन आँचल घिरे ॥
घरे घरे डाक पाठालो—'दीपालिकाय ज्वालाओ आलो,
ज्वालाओ आलो, आपन आलो, साजाओ आलोय धरित्रीरे ।'
शून्य एखन फुलेर बागान, दोयेल कोकिल गाहे ना गान,
काश झरे याय नदीर तीरे ।
याक अवसाद विषाद कालो, दीपालिकाय ज्वालाओ आलो—
ज्वालाओ आलो, आंपन आलो, शुनाओ आलोर जयवाणीरे ॥
देवतारा आज आछे चेये—जागो धरार छेले मेये,
आलोय जागाओ यामिनीरे ।
एल आँधार, दिन फुरालो, दीपालिकाय ज्वालाओ आलो—
ज्वालाओ आलो, आपन आलो, जय करो एइ तामसीरे ॥

ताल दादरा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **मे** *और अति कोमल* **नो**

द्रुत लय (मम=156 मात्रा)

(अ[1])

स	र	ग	ग	ग	ऽ	ग	ग	ग	ग	ग	म
हि	मे	र	रा	ते	०	ओ	इ	ग	ग	ने	र

रग	र	ग	ग	ग	प	पग	पम	म	ग	रस	ऩ
दी०	प	गु	लि	रे	०	हे	म०	न्	ति	का०	०

स	स	ग	म	प	प	स	सग	ग	म	प	ऽ
क	र	ल	गो	प	न	आँ	च०	ल	घि	रे	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

(अ²)

पग	पम	ऽ	ग	रस	ऩ	स	र	ग	ग	ग	ऽ
घि	रे॰	॰	घि	रे॰	॰	हि	मे	र	रा	ते	॰

ग	ग	ग	ग	ग	म	रग	र	ग	ग	ग	प
ओ	इ	ग	ग	ने	र	दी॰	प	गु	लि	रे	॰

(ब)

सं	सं	गं	गंरं	रं	ऽ	सं	सं	सं	सं	सं	ऽ
घ	रे	॰	घ	रे	॰	डा	क	पा	ठा	लो	॰

संन	न	रं	सं	सं	सं	संन	ध	सं	न	धप	ऽ
दि	पा	॰	लि	का	य	ज्वा	ला	ओ	आ	लो॰	॰

पसं	सं	सं	संन	धप	ऽ	पसं	सं	सं	संन	धप	ऽ
ज्वा	ला	ओ	आ	लो॰	॰	आ॰	प	न	आ	लो॰	॰

पसं	संनो	नो	ध	प	धप	पग	पम	ऽ	मग	रस	ऩ
सा॰	जा॰	ओ	आ	लो	॰य	ध	रि॰	॰	श्री	रे॰	॰

गाइये (अ¹)+(अ²) →

(स)

स	प	प	प	प	प	प	प	मे	प	मे	ध
शू	॰	न्य	ए	ख	न	फु	ले	र	बा	॰	॰

धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽम	म	म	म	म	म	म
गा	॰	॰	॰	॰	न	दो	ये	ल	को	कि	ल

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	म	ग	गर	ऽ	गम	मग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग
गा	हे	०	ना	०	००	गा	०	०	०	०	न

स	स	स	सग	ग	ऽ	ऽ	ग	ग	गम	म	ऽ
का	श	भ्र	रे०	०	०	०	य	भ्र	रे०	०	०

ऽ	म	म	मप	प	प	पम	ग	र	रम	मग	ऽ
०	य	भ्र	रे:०	या	य	न	दी	र	ती०	रे	०

(द)

सं	गं	रं	रं	रं	रं	सं	सं	सं	सं	सं	सं
या	क	अ	व	सा	द	वि	षा	द	का	लो	०

संन	न	रं	रंसं	सं	सं	संन	ध	सं	संन	धप	ऽ
दी	पा	०	लि	का	य	ज्वा	ला	ओ	आ	लो०	०

पसं	सं	सं	संन	धप	ऽ	पसं	सं	सं	संन	धप	ऽ
ज्वा	ला	ओ	आ	लो	०	आ०	प	न	आ	लो०	०

पसं	संनो	नो	ध	प	प	पग	प	पम	ग	रस	न
शु०	ना	ओ	आ	लो	र	ज	य	वा	णी	रे०	०

गाइये (अ[1])+(अ[2]) →

(ए)

स	प	प	प	प	प	प	प	ऽ	प	प	मे
दे	व	ता	रा	आ	ज	आ	छे	०	चे	मे	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	मे	न	धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	म	ग
जा	०	०	गो०	०	०	०	०	०	ध	रा	र
गर	र	म	म	मग	म	मर	ऽ	गम	मग	ऽ	ऽ
छे	ले	०	मे	ये	०	जा	०	००	गो	०	०
ग	म	ग	गर	ऽ	गम	मग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग
आ	लो	य	जा	०	००	गा	०	०	०	०	ओ
ग	ग	र	सन्	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ग	ऽ	मप
या	मि	०	नी०	०	०	रे	०	०	०	०	००
गप	पम	ग	गर	ऽ	गम	मग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग
आ०	लो	य	जा	०	००	गा	०	०	०	०	ओ

(फ)

सं	सं	गं	गंरं	रं	ऽसं	सं	सं	सं	सं	सं	ऽ
ए	ल	०	आँ	धा	०र	दि	न	फु	रा	लो	०
संन	न	रं	रंसं	सं	सं	संन	ध	सं	न	धप	ऽ
दी	पा	०	लि	का	य	ज्वा	ला	ओ	आ	लो०	०
पसं	सं	सं	संन	धप	ऽ	पसं	सं	सं	न	धप	ऽ
ज्वा	ला	ओ	आ	लो	०	आ०	प	न	आ	लो०	०
प	सं	संनो	ध	धप	धप	पग	पम	ऽ	ग	रस	न्
ज	ब	क	रो	ए	०इ	ता	म०	०	सी	रे०	०

गाइये (अ[1])+(अ[2]) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

22—शीतेर हाओयार लागल नाचन

शीतेर हाओयार लागल नाचन आम्लकिर एइ डाले डाले।
पातागुलि शिर्शिरिये झरिये दिल ताले ताले ।।
उड़िये देबार मातन एसे काङाल तारे करल शेषे,
तखन ताहार फलेर बाहार रइल ना आर अन्तराले ।।
शून्य करे भरे देओया याहार खेला तारि लागि रइनु वसे सकल वेला
शीतेर परश थेके थेके याय बुझि ओइ डेके डेके,
सब खोओयाबार समय आमार हबे कखन कोन् सकाले ।।

ताल दादरा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **मे**

द्रुत लय (मम=282 मात्रा)

(अ1)

गं	गं	गं	गंरं	सं	सं	संन	न	सं	संरं	रंसं	सं
शी	ते	र	हाओ	या	र	ला	ग	ल	ना॰	च	न

प	प	मे	धमे	धप	प	प	प	म	गग	गर	र
ला	ग	ल	ना॰	च	न	आ	म	ल	किर	ए	इ

ग	ग	म	म	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
डा	ले	॰	डा	ले	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰

(अ2)

मे	प	ऽ	ध	न	ऽ	नसं	सं	रं	रं	गं	ऽ
पा	ता	॰	गु	लि	॰	शि॰	र	शि	रि	ये	॰

संगं	गं	गं	गं	गं	ऽ	गंरं	रं	रं	रंसं	सं	ऽ
शि॰	र	शि	रि	ये	॰	झ	रि	ये	दि	ल	॰

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ब)

संन	न	ऽ	ध	प	ऽ	मे	मे	प	ध	न	न
ता	ले	०	ता	ले	०	उ	ड़ि	ये	दे	बा	र

← गाइये (अ^{1})

सं	रं	रं	रं	गं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
मा	त	न	ए	से	०	०	०	०	०	०	०

गंपं	पं	पं	पंमं	गं	ऽ	गंरं	रं	मं	मंगं	रंसं	ऽ
का०	ङा	ल	ता	रे	०	क	र	ल	शे	वे०	०

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	प	पमे	प	प
०	०	०	०	०	०	त	ख	न	ता	हा	र

मे	प	प	पध	धप	प	पमे	मे	प	ध	न	सं
फ	ले	र	बा०	हा	र	र	इ	ल	ना	आ	र

(स)

सं	गं	गं	गंरं	सं	ऽ	प	ऽ	प	पमे	प	ऽ
अ	न्	त	रा	ले	०	शू	न्य	०	क	रे	०

← गाइये (अ^{1})

पध	धप	ऽ	मम	ग	म	र	ग	ग	म	प	ऽ
भ०	रे	०	देओ	०	या	या	हां	र	खे	ला	०

र	ग	ऽ	म	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं
ता	रि	०	ला	गि	०	०	०	०	०	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नसं	सं	संन	ध	प	ऽ	पध	धप	ऽ	म	ग	म
र॰	इ	नु	ब	से	॰	स	क	ल	वे	ला	॰

र	ग	ऽ	म	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ता	रि	॰	ला	गि	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰

(द)

मे	प	प	ध	न	न	सं	रं	ऽ	रं	गं	ऽ
शी	ते	र	प	र	श	थे	के	॰	थे	के	॰
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गं	पं	पं	पंमं	गं	गं
॰	॰	॰	॰	॰	॰	या	य	बु	झि	ओ	इ
रं	रं	मं	मंगं	रंसं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
डे	के	॰	डे	के॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰

प	प	पप	पमे	प	प	पमे	प	प	पध	धप	प
स	व	खोओ	या	वा	र	स	म	य	आ॰	मा	र
मे	प	प	ध	न	सं	सं	गं	गं	गंरं	सं	ऽ
ह	बे	॰	क	ख	न	को	न	स	का	ले	॰

गाइये (अ¹)+(अ²)+(अ¹) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

23—आजि वसन्त जाग्रत द्वारे

आजि वसन्त जाग्रत द्वारे ।
तव अवगुण्ठित कुण्ठित जीवने
कोरो ना विड़म्बित तारे ॥
आजि खुलियो हृदयदल खुलियो,
आजि भुलियो आपन पर भुलियो,
एइ संगीतमुखरित गगने
तव गन्ध तरङ्गिया तुलियो ।
एइ वाहिर-भुवने दिशा हाराये
दियो छड़ाये माधुरी भारे भारे ॥
एकि निविड़ वेदना वन-माझे
आजि पल्लवे पल्लवे बाजे—
दूरे गगने काहार पथ चाहिया
आजि व्याकुल वसुन्धरा साजे ।
मोर पराने दखिनवायु लागिछे,
कारे द्वारे द्वारे कर हानि मागिछे —
एइ सौरभविह्वल रजनी
कार चरणे धरणीतले जागिछे ।
ओहे सुन्दर, वल्लभ, कान्त,
तव गम्भीर आह्वान कारे ॥

मिश्र बहार — त्रिताल

गंधार और निषाद - अति कोमल। रिषभ - तीव्र

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **गे** *और तीव्र* **ने**

द्रुत लय (मम= 152 मात्रा)

०	०	न	ध
०	०	आ	जि
3			

(अ)

धन	धन	प	म	पधप (3)	ऽ	मग	म	न	ऽ	ऽ	सं	ध	संने	सं	न
व	स	न्	त	जा००	०	ग्र०	त	द्वा	०	०	०	०	००	रे	०
1				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धन धन प म	पधप(3) ऽ मग म	न ऽ ऽ सं	प संने सं न
व स न् त	जा०० ० ग्र० त	द्वा • ० ०	० ०० रे ०
1	2	0	3

ध ने ने सं	सं सं सं सं	संने संरं सं सं	संन सं न धन
त व ग्र व	गु ए् ठि त	कु ०ए् ठि त	जी व ने ००
1	2	0	3

प पसं ध प	मग ग मग म	मन ऽ ध नध	प संने सं ऽन ‖
को रो० ना वि	ड़ म् बि० त	ता ० ० ००	० ०० रे ००
1	2	0	3

(ब)

धन धन प म	पधप(3) ऽ मग म	न ऽ ध नध	प संने सं धने
व स न् त	जा०० ० ग्र० त	द्वा ० ० ००	० ०० रे आजि
1	2	0	3

‖ ने सं सं सं	सं संने नेरं संरं	ने ने सं ऽ	ऽ ऽ सं सं
खु लि यो ह	द य० द ल०	खु लि यो ०	० ० आ जि
1	2	0	3

संने सं रं रं	रं रंगं रं संरं	संने ऽ सं संरं	1° सं न ध धने ‖	2° सं न धन प
मु लि यो आ	प न० प र०	मु ० ० लि०	यो ० आ जि०	यो ० ए० इ
1	2	0	3	3

पसं ऽ न पम	मप प मग ग	गम ऽ र ऽ	स ऽ स सप
सं ० गी त०	मु ख रि० त	ग ० ग ०	ने ० त व०
1	2	0	3

गम म म म	पधप(3) ऽ मग म	मन ऽ नध संने	सं ऽन ध न
ग न् ध त	रं०० ० गि या	तु ० ०० लि०	यो ०० ए इ
1	2	0	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सं	गें	गें	गें	गें	गें	मं	पं	मंपं	मं	गें	ऽ	ऽ	ऽ	गें	गें
बा	हि	र	भु	व	ने	दि	शा	हा॰	रा	ये	॰	॰	॰	दि	यो
1				2				0				3			

गें	मं	मं	मं	गें	रं	सं	नेसं	ध	सं	ने	रं	सं	ऽ	न	ध
छ	ड़ा	ये	मा	धु	री	भा	रें॰	भा	॰	॰	॰	रे	॰	आ	जि
1				2				0				3			

गाइये (अ) →

(स)

सम
एकि

म	म	म	म	म	म	म	म	म	गेप	म	ऽ	ऽ	ऽ	म	म
नि	वि	ड़	वे	द	ना	ब	न	मा	॰	झे	॰	॰	॰	आ	जि
1				2				0				3			

												1°				2°			
म	प	प	प	म	प	म	ग	म	ध	प	न	ध	ऽ	स	सम	ध	ऽ	ध	धने
प	ल्	ल	वे	प	ल्	ल	वे	बा	॰	॰	॰	जे	॰	ए	कि॰	जे	॰	दू	रे॰
1				2				0				3				3			

ने	सं	सं	सं	सं	संने	रं	संरं	ने	ने	सं	ऽ	ऽ	ऽ	सं	सं
ग	ग	ने	का	हा	र॰	प	थ॰	चा	हि	या	॰	॰	॰	आ	जि
1				2				0				3			

संन	सं	नध	प	मग	ग	म	प	ग	म	मग	र	स	ऽ	ध	ने
व्या	कु	ल॰	व	सु	त्	ध	रा	सा	॰	॰	॰	जे	॰	मो	र
1				2				0				3			

ने	सं	सं	सं	सं	संने	रं	संरं	ने	ने	सं	ऽ	ऽ	ऽ	सं	सं
प	रा	ने	द	खि	न॰	वा	यु॰	ला	गि	छे	॰	॰	॰	का	रे
1				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| संने सं रं रं | रं रंगं रं संरं | संने ऽ सं संरं | सं न ‖ धन प |
| द्वा रे द्वा रे | क र॰ हा ति॰ | मा ॰ ॰ गि॰ | छे ॰ ‖ ए॰ इ॰ |
1 2 0

| पसं ऽ न पम | मप ऽ मग म | ग म र ऽ | स ऽ स म |
| सौ ॰ र भ॰ | वि ॰ ह्व॰ ल | र ॰ ज ॰ | नी ॰ का र |
1 2 0 3

| म म म म | मध प मग म | मन ऽध पसं ने | सं ऽन ध न |
| च र णे ध | र॰ णी त॰ ले | जा ॰॰ ॰॰ गि | छे ॰॰ ओ हे |
1 2 0 3

| सं गें गें गें | गें गें मं मंपं | मं ऽ ऽ गेंमंपं | मं गें गें गें |
| सु न् द र | ब ल ल भ॰ | का ॰ ॰ ॰॰न् | त ॰ त व |
1 2 0 3

| गें मं मं मं | गें रं सं नेसं | ध सं ने रं | सं ऽ नध न |
| ग म् भी र | आ ॰ ह्वा न॰ | का ॰ ॰ ॰ | रे ॰ ॰आ जि" |
1 2 0 3

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

24—ओरे भाइ, फागुन लेगेछे

ओरे भाइ, फागुन लेगेछे वने वने—
डाले डाले फुले फले पाताय पाताय रे,
आड़ाले आड़ाले कोणे कोणे ॥
रङे रङे रङिल आकाश, गाने गाने निखिल उदास—
येन चल चञ्चल नव पल्लवदल मर्मरे मोर मने मने ॥
हेरो हेरो अवनीर रङ्ग,
गगनेर करे तपोभङ्ग ।
हासिर आघाते तार मौन रहे ना आर,
केँपे केँपे ओठे खने खने ।
वातास छुटिछे वनमय रे, फुलेर ना जाने परिचय रे ।
ताइ बुझि बारे बारे कुञ्जेर द्वारे द्वारे
शुधाये फिरिछे जने जने ॥

त्रिताल

रिषभ और धैवत-कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - कोमल **ना**

द्रुत लय (मम=220 मात्रा)

सं	न	सं	सं
ओ	रे	भा	इ

(अ)

												1°				2°			
प	नाध	ध	ध	प	म	प	ध	न	ऽ	सं	ऽ	सं	न	सं	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
फा	गु	न	ले	गे	छे	व	ने	व	०	ने	०	ओ	रे	भा	इ	०	०	०	०

सं	न	सं	संरं	सं	न	ध	प	म	प	प	धप	म	प	म	ग
डा	ले	डा	ले	फु	ले	फ	ले	पा	ता	य	पा.	ता	य	रे	.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

| म ध ध ध | न न सं संरं | संन ऽ सं ऽ | सं न सं सं |
| आ ड़ा ले आ | ड़ा ले को ऐ॰ | को ॰ ऐ ॰ | ओ रे भा इ |

| सं गं गं गंपं | मं गं रं सं | संरं न सं ऽ | सं न सं सं |
| फा गु न ले | गे छे व ने | व॰ ॰ ने ॰ | ओ रे भा इ |

| प नाध ध ध | प म प ध | न ऽ सं ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ |
| फा गु न ले | गे छे व ने | व ॰ ने ॰ | ॰ ॰ ॰ ॰ |

(ब)

| 1° पध ध ध ध || 2° संन ध ध ध | न न सं संरं | संन ऽ सं ऽ | ऽ ऽ ऽ स |
| र ड़े र ड़े || र ड़े र ड़े | र ड़ि ल आ॰ | का ॰ ॰ ॰ | ॰ ॰ ॰ श |

| संन ध ध ध | ध धन न न | न ऽ ऽ ऽ | 1° ऽ ऽ सं रं || 2° ऽ ऽ ऽ न |
| गा ने गा ने | नि खि॰ ल उ | दा ॰ ॰ ॰ | ॰ ॰ ॰ स || ॰ ॰ ॰ स |

| स सम म म | म म म ग | म मना ध ध | प प म ग |
| ये न च ल | च न् च ल | न ब॰ प ल् | ल व द ल |

| म ध ध ध | न न सं संरं | संन ऽ सं ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ |
| म र् म रे | मो र म ने॰ | म ॰ ने ॰ | ॰ ॰ ॰ ॰ |

| सं गं गं गंपं | मं गं रं सं | संरं न सं ऽ | सं न सं सं |
| फा गु न ल | गे छे व ने | व ॰ ने ॰ | ओ रे भा इ |

गाइये (अ) →

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(स)

‖ स [म]म म म | म म म म | म ग प म | ऽ ऽ ऽ प |
‖ हे रो हे रो | अ व नी र | रं ० ० ग | ० ० ० ० |

| [म]ग ग [र]स र | ग म [म]प म | ग र स ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ ‖
| ग ग ने र | क रे त पो | भं ० ग ० | ० ० ० ० ‖

‖ स [स]म म म | म म म ग | म [ना]ध ध ध | प प म ग ‖
‖ हा सि र आ | घा ते ता र | मौ ० न र | हे ना आ र ‖

| [म]ग ग [र]स र | ग म [म]प म | ग र स ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ |
| कँ पे कँ पे | ओ ठे ख ने | ख ० ने ० | ० ० ० ० |

| 1° [प]ध ध ध ध ‖ 2° न ध ध ध | न न सं संरं | [सं]न न सं ऽ | ऽ ऽ ऽ र |
| वा ता स छु ‖ वा ता स छु | टि छे व न० | म य रे ० | ० ० ० ० |

| [सं]न न न ध | ध [ध]न न न | न न न ऽ | 1° ऽ ऽ ऽ संरं ‖ 2° ऽ ऽ ऽ ऽ |
| फु ले र ना | जा ने प रि | च य रे ० | ० ० ० ०० ‖ ० ० ० ० |

‖ स म म म | म म म मग | म नाध ध ध | प प म ग ‖
‖ ता इ बु झि | बा रे बा रे० | कु ०न् जे र | द्वा रे द्वा रे ‖

| म ध ध ध | न न सं संरं | [सं]न ऽ सं ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ |
| शु धा ये फि | रि छे ज ने० | ज ० ने ० | ० ० ० ० |

| सं गं गं [गं]पं | मं गं रं सं | [सं]रं न सं ऽ | सं न सं ऽ |
| फा गु न ले | गे छे व ने | व ० ने ० | "ओ रे आ ई" |

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

25—बड़ो वेदनार मतो

बड़ो वेदनार मतो बेजेछ तुमि हे आमार प्राणे;
मन ये केमन करे मने मने ताहा मनइ जाने ॥

तोमारे हृदये क'रे आछि निशिदिन ध'रे;
चेये थाकि आँखि भ'रे मुखेर पाने ॥

बड़ो आशा, बड़ो तृषा, बड़ो आकिञ्चन तोमारि लागि।
बड़ो सुखे, बड़ो दुखे, बड़ो अनुरागे रयछे जागि।

ए जन्मेर मतो आर हये गेछे या हवार,
भेसे गेछे मन प्राण मरण-टाने ॥

एकताल

गंधार, धैवत और निषाद - कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **गे, धे, ने** *और कोमल* **रा**

मध्य लय (मम=108 मात्रा)

									०	सं	सं
									०	ब	ड़ो

(अ[1])

सं	[सं]ने	ने	पध	नेसं	सं	[सं]ने	ध	ऽ	प	ऽ	ध
वे	०	द	ना०	००	र	म	०	०	तो	०	०
[ध]म	न	ध	प	ऽ	ध	[ध]म	ऽऽपध	मप	[प]गे	ऽ	ऽ
बे	०	जे	छ	०	तु	मि	००००	००	हे	०	०
गे	ऽ	म	पध	नेसं	सं	नेसं	ध	ऽ	पध	नेसं	रां
आ	०	०	मा०	००	र	प्रा	०	०	णे०	००	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रांसं	संने	ने	पध	नेसं	सं	संने	ध	ऽ	प ’	(ऽ)	(ऽ)
वे	०	द	ना०	००	र	म	०	०	तो	०	०

(अ²)

सं	ऽ	संगं	गंरं	ऽ	रं	रं	सं	रं	मंगं	रं	संने
म	०	न०	ये	०	के	म	०	न	क	०	रे०

सं	ऽ	संमं	गं	ऽ	रं	रं	सं	रं	मंगं	रं	संने
म	०	न०	ये	०	के	म	०	न	क	०	रे०

ने	ऽ	सं	सं	सं	नेरं	रंसं	ने	ऽ	ऽ	प	प
म	०	०	ने	म	००	ने	०	०	०	ता	ह्रा

प	ऽ	ध	नेसं	रंसंने (3)	नेध	प	ऽ	ऽ	ऽ ’	सं	सं
म	०	०	न ०	००इ	जा	ने	०	०	०	“ब	ड़ो”

गाइये (अ¹) ⟶

(ब)

सं
तो

सं	सं	सं	सं	सं	नेरं	रंसं	सं	रंसं	संने	ऽ	सं
मा	रे	ह्र	द	ये	००	क	रे	००	०	०	म्रा

संने	प	ध	ने	सं	संने	नेध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
छि	नि	शि	दि	०	न	ध	रे	०	०	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सं	सं	नेमं	मंगं	रं	ऽ	रंसं	रं	ऽ	रंमं	मंगं	रं
चे	ये	००	था	कि	०	आँ०	खि	०	भ०	रे	०

रं	रं	गं	गंरं	सं	नेरं	रंसं	ने	ऽ	ऽ'	सं	सं
मु	खे	०	र	पा	००	ने	०	०	०	"ब	ड़ो"

गाइये (अ¹) →

(स)

गे	म
ब	ड़ो

म	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	न	नधे	न	ध
आ	आ	०	०	०	०	०	ब	ड़ो	तृ	पा	०

नध	प	ऽ	प	प	म	प	ऽ	धे	ने	ऽ	ऽ
ब	ड़ो	०	आ	कि	न्	च	०	०	न	०	०

प	सं	ऽ	सं	ऽ	रंसं	नेसं	ध	ऽ	पध	नसं	ने
तो	०	०	मा	०	रि०	ला०	०	०	गि०	००	०

नेध	प	गेम	म	प	ऽ	संने	सं	मं	मंगं	रं	ऽ
ब	ड़ो	००	आ	आ	०	ब०	ड़ो	०	मु	खे	०

रंमं	रं	ऽ	रंमं	गं	रं	रं	रं	गं	गंरं	सं	ऽ
ब०	ड़ो	०	दु	ने	०	ब	ड़ो	०	अ	नु	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सं	ऽ	नेरं	रंसं	ने	ऽ	सं	ने	ध	पध	नेसंने	नेध
रा	०	००	गे	०	०	र	ये	०	छि०	०००	जा

प	ऽ	सं	संसं	सं	सं	सं	संने	रं	सं	ने	ने
गि	०	ए	जन्	मे	र	म	तो	०	आ	०	र

ऽ	ऽ	सं	संने	प	ध	नेसं	रसंने	ध	प	ऽ	प
०	०	ह	ये	गे	छे	या०	०००	ह	बा	०	र

सं	सं	मं	मंगं	रं	ऽ	रंसं	रं	ऽ	रंमं	रंगं	रं
भे	से	०	गे	छे	०	म०	न	०	प्रा०	ण	०

रं	रं	गं	गंरं	सं	नेरं	रंसं	ने	ऽ	ऽ'	सं	सं
म	र	०	ए	टा	००	ने	०	०	०	"ब	ड़ो"

गाइये (अ[1]) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

26—दे पड़े दे

दे पड़े दे आमाय तोरा की कथा आज लिखेछे से ।
तार दूरेर वाणीर परशमानिक लागुक आमार प्राणे एसे ।।
शस्यखेतेर गन्धखानि एकला घरे दिक से आनि,
क्लान्तगमन पान्थ हाओया लागुक आमार मुक्तकेशे ।।
नील आकाशेर सुरटि निये बाजाक आमार विजन मने,
धूसर पथेर उदास बरन मेलुक आमार वातायने ।
सूर्य डोबार राङा वेलाय छड़ाब प्राण रङेर खेलाय,
आपन-मने चोखेर कोणे अश्रु-आभास उठबे भेसे ।।

ताल दादरा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - कोमल **धा** *और कोमल* **ना**

द्रुत लय (मम=156 मात्रा)

(अ¹)

म	ध	ध	प	प	ध	मप	(प)म	म	ग	र	ग
दे	०	प	ड़े	दे	०	आ०	मा	य	तो	रा	०

स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ग	म	प	ध
०	०	०	०	०	०	की	०	क	था	आ	ज

(अ²)

गप	(प)म	ऽ	ग	र	ग	म	प	ऽ	ऽ,	प	प
लि०	खे	०	छे	से	०	दे	०	०	०	ता	र

प	प	ध	ध	ध	न	प	प	सं	संन	धप	ऽ
दू	रे	र	वा	णी	र	प	र	श	मा	नि०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1°						2°					
ऽ	ऽ	ऽ	प	प	प	ध	न	नध	प	ऽ	प
०	०	०	क	ता	र	०	०	०	०	०	क

पसं	संन	न	ध	प	प	पध	धप	ऽ	मग	र	ग
ला०	गु	क	आ	मा	र	प्रा०	णे	०	ए०	से	०

म	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
दे	०	०	०	०	०

गाइये (अ¹) →

(ब)

प	ऽ	धसं	सं	सं	सं	सं	न	रं	रं	सं	ऽ
श	०	स्य०	खे	ते	र	ग	न्	ध	खा	नि	०

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	प	प	ध	ध	न	ऽ
०	०	०	०	०	०	ए	क	ला	ध	रे	०

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं	ध	सं	सं	न	धप	ऽ
०	०	०	०	०	०	दि	क	से	आ	नि०	०

प	ऽ	धा	प	धा	धा	प	प	धा	पप	नाधा	प
क्ला	०	न्त	ग	म	न	पा	न्	थ	हाओ	या०	०

म	प	प	पना	नाधा	प	म	म	धा	धाप	म	ग
ला	गु	क	आ०	मा	र	मु	क्	त	के	शे	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
दे	०	०	०	०	०

गाइये (अ^1)+(अ^2)+(अ^1) →

(स)

स	स	स	र	र	र	र	र	ग	ग	ग	ऽ
नी	ल	आ	का	शे	र	सु	र	टि	नि	ये	०
गम	म	म	म	म	म	म	म	प	प	प	ऽ
वा०	जा	क	आ	मा	र	वि	ज	न	म	ने	०
प	प	धा	धा	धा	ना	प	प	धा	धा	प	धा
धू	स	र	प	थे	र	उ	दा	स	ब	र	न
धाम	प	प	पना	नाधा	प	म	मग	ऽ	र	स	ऽ
मे	लु	क	आ०	मा	र	वा	ता	०	य	ने	०
स	स	स	र	र	र	र	र	ग	ग	ग	ऽ
नी	ल	आ	का	शे	र	सु	र	टि	नि	ये	०

(द)

प	ध	सं	सं	सं	स	सं	सं	नरं	रं	सं	ऽ
सू	र्	य	डो	वा	र	रा	ङा	००	वे	ला	०
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	प	प	ध	ध	न	ऽ
०	०	०	०	०	य	छ	ड़ा	०	ब	प्रा	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं	ध	ध	नसं	संन	धप	प
०	०	०	०	०	ए	र	ङ्के	०र	खे	ला०	य
प	प	धा	धा	धा	नाधा	धाप	प	धा	धाप	प	धाप
आ	प	न	म	ने	००	चो	खे	र	को	ऐ	००
म	ऽ	प	प	नाधा	प	म	म	मधा	धाप	मग	ऽ
अ	०	श्रु	आ	भा०	स	उ	ठ	वे०	भे	से०	०
म	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						
दे	०	०	०	०	०						

गाइये (अ[1])+(अ[2])+(अ[1]) ⟶

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

27—आमार परान याहा चाय

आमार परान याहा चाय तुमि ताइ, तुमि ताइ गो ।
तोमा छाड़ा आर ए जगते मोर केह नाइ, किछु नाइ गो ॥
तुमि सुख यदि नाहि पाओ याओ सुखेर सन्धाने याओ —
आमि तोमारे पेयेछि हृदय-माझे, आर किछु नाहि चाइ गो ।
आमि तोमारि विरहे रहिब विलीन, तोमाते करिब वास —
दीर्घ दिवस, दीर्घ रजनी, दीर्घ बरष-मास ।
यदि आर-कारे भालोबास, यदि आर फिरे नाहि आस,
तबे तुमि याहा चाओ ताइ येन पाओ, आमि यत दुख पाइ गो ।

त्रिताल

गंधार और निषाद - अति कोमल । रिषभ—तीव्र

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **ने**

द्रुत लय (मम=124 मात्रा)

(अ1)

म	प	म	ग	र	स	सर	^(स)ने̣	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	स	सप
आ	मा	र	प	रा	न	या॰	हा	चा	॰	॰	॰	॰	य	तु	मि॰

^(म)प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	पध	^(ध)पध	^(प)म	प	धप	मप	म	ग	रस	र
ता	॰	॰	॰	॰	इ	तु॰	मि॰	ता	॰	॰॰	॰इ	गो	॰	॰॰	॰

म	प	म	ग	र	स	सर	^(स)ने̣	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स ;	(ऽ)	(ऽ)
आ	मा	र	प	रा	न	या॰	हा	चा	॰	॰	॰	ऽ	य	॰	॰

(अ2)

म	प	प	प	प	प	ध	पध	^(प)म	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ	म	प
तो	मा	छा	ड़ा	आ	र	ए	ज॰	ग	॰	ते	॰	॰	॰	मो	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| म पसं नसं ऽ | ऽ सं नध पध | पम प धप मप | म ग रस र |
| के ह॰ ना ॰ | ॰ इ कि॰ छु॰ | ना ॰ ॰॰ ॰इ | गो ॰ ॰॰ ॰ |

गाइये (अ¹) →

(ब)

प पध |
तु ॰मि |

|| म प प ने | ने ऽ नेध ने | सं नेसं रंसं ने | सं ऽ सं सं |
|| सु ख य ॰ | दि ॰ ना॰ हि | पा॰॰ ॰॰ ॰ | ओ ॰ या ओ |

| संने सं नेरं रंरं | रं मंगं रं संरं | नेसं ऽ न ऽ | 1° ध न प पध || 2° ध न ध पध |
| सु खे र॰ सन् | धा ॰ ने ॰॰ | या॰ ॰ ॰ ॰ | ओ ॰ तु मि॰ || ॰ओ आ मि॰ |

| म प प प | प ऽ प ऽध | म प प ने | ने धनेसं सं ऽ |
| तो मा रे पे | ये ॰ छि ॰॰ | हृ द य ॰ | मा ॰॰ झे ॰ |

| नेसं नेरं संन ध | धसं नसंन ध पध | म प पधप मप | म ग रस र |
| आ॰ ॰॰ र॰ कि | छु॰ ॰॰॰ ना हि॰ | चा ॰ ॰॰ ॰इ | गो ॰ ॰॰ ॰ |

गाइये (अ¹) →

(स)

स स |
आ मि |

| सध ध ध ध | ध नध प धप | म प प प | प ऽ प ऽ |
| तो मा रि वि | र ॰॰ हे ॰॰ | र हि ब वि | ली ॰ न ॰ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	प	पध	ध	ध	नध	प	धप	मप	ऽ	म	ऽ	मग	ऽ	ऽ	ग
तो	मा	ते	क	रि	००	व	००	वा०	०	०	०	०	०	०	स

ग	गम	म	र	सर	ऽ	स	ऽ	सर	र	स	सर	सने	ऽ	स	ऽ
दी	०र्	घ	दि	व	०	स	०	दी	र्	घ	र०	ज	०	नी	०

र	म	म	म	प	ऽ	पध	पम	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	पध
दी	र्	घ	ब	र	०	ष	०	मा	०	०	०	०	स	य	दि०

म	प	पने	ने	ने	संने	ध	ने	नेसं	ऽ	संरेसं	ने	सं	ऽ	सं	सं
आ	०	र०	का	रे	००	भा	लो	बा	०	००	०	स	०	य	दि

नेसं	नेरं	रं	रं	रं	गं	रं	संरं	नेसं	ऽ	न	ऽ	ध	नध	प	पध
आ०	००	०	फि	रे	०	ना	हि०	आ०	०	०	०	स	००	त	वे०

म	प	प	ऽ	प	ऽ	प	पध	म	प	प	ने	ने	धनेसं	सं	सं
तु	मि	या	०	हा	०	चा	०ओ	ता	इ	ये	०	न	००	पा	ओ

नेसं	नेरं	संन	ध	धसंन (3)	ऽ	ध	पध	म	प	पधप	मप	म	ग	रस	र
आ०	००	मि०	०	त००	०	दु	ख०	पा	०	००	०इ	गो	०	००	०

गाइये (अ¹) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

28—तुमि येयो ना एखनि

तुमि येयो ना एखनि ।
एखनो आछे रजनी ॥
पथ विजन तिमिरसघन,
कानन कण्टकतरुगहन— आँधारा धरणी ॥
बड़ो साधे ज्वालिनु दीप, गाँथिनु माला—
चिरदिने वँधु, पाइनु हे तव दरशन ।
आजि याब अकूलेर पारे,
भासाब प्रेमपारावारे जीवनतरणी ॥

भैरवी—त्रिताल

रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद - कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्रतर **री**

द्रुत लय (मम=136 मात्रा)

०	०	सर	सन्
०	०	तु	मि

(अ)

													1°				2°			
स	ऽ	सध	ऽप	मग	र	ऽ	ऽ	सर	गमग (3)	रग	र	स	ऽ	सर	सन्	स	ऽ	ऽ	ऽ
ये	०	यो	००	ना	०	०	०	ए०	०००	००	ख	नि	०	तु०	मि०	नि	०	०	०

स	सन्	स	ध	प	ऽ	प	ऽ	प	मप	नध	ऽप	मग	ऽ	म	मर
ए	ख०	नो	०	आ	०	छे	०	र	०	ज	००	नी	०	तु	मि०

स	ऽ	सध	ऽप	मग	र	ऽ	ऽ	सर	गमग (3)	रग	र	स	ऽ	सर	सन्
ये	०	यो	००	ना	०	०	०	ए०	०००	००	ख	नि	०	तु०	मि०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ब)

स	ऽ	सध	ऽप	मग	र	ऽ	ऽ	सर	गमग	रग	र	स	ऽ'	ध़	ऩ
ये	०	यो	००	ना	०	०	०	ए०	०००	००	ख	नि	०	प	थ

ऩ	स	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	री	ग	रीगम	ग	र	स	रस
वि	ज	न	०	०	०	०	०	ति	मि	र	०००	स	घ	न	००

ऩ	स	नध़	ऩ	ऩ	स	स	ऽ	स	री	ग	रीगम	ग	र	स	ऽ
०	०	प	थ	वि	ज	न	०	ति	मि	र	०००	स	घ	न	०

नध़	ऽ	ऩ	स	नध़	ध़	ऩ	स	र	ग	गर	ऩ	स	ऽ	ऽ	ऽ
का	०	न	न	क	न्	ट	क	त	रु	ग	हृ	न	०	०	०

स	नस	स	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ	प	मप	नध	ऽप	मग	ऽ'	म	मर
ग्राँ	०	धा	०	रा	०	०	०	घ	०	र	००	णी	०	तु	मि

गाइये (अ) →

(स)

ध़	ऩ
ब	डो

ऩ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	र	ग	गर	स	ऽ	ऽ	ध़
सा	०	घे	०	०	०	०	०	ज्वा	०	लि	नु०	दी	०	०	प

पध़	म़	ध़	ऩ	स	री	रीग	ऽ	ऽ	ध़	ध़	ऩ	ऩ	ऽ	स	ऽ
गाँ	०	थि	नु	मा	०	ला	०	०	०	ब	डो	सा	०	घे	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स	री	रीग	ऽरी	मगरी	ग	गर	स	स	र	रम	ग	रगर	ऽ	सनस	ऽ
चि	र	दि	००	ने०	०	वँ	धु	पा	०	इ	नु	हे००	०	०	०

नध़	ऩ	स	ग	र	स	ध़	ऩ	ऩ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ	स	री
त	व	द	र	श	न	व	ड़ो	सा	०	धे	०	०	०	आ	जि

ग	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	म	प	मप	धप	मग	ऽरी	गमगऽ	ऽर	र	सरी
या	०	व	०	०	०	अ	कू	ले०	००	र	००	पा०००	००	रे	००

ग	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	ग	री	ग	री	मग	ऽरी	गमगऽ	ऽर	र	म
या	०	व	०	०	०	अ	कू	ले	०	र	००	पा०००	००	रे	०

नध़	ऽ	ऩ	स	स	ऽर	ग	गर	स	र	रगम	ऽ	रगर	ऽ	स	नस
भा	०	सा	०	व	००	प्रे	म०	पा	०	रा००	०	वा००	०	रे	०

स	ऽ	स	ध़	प	ऽ	ऽ	ऽ	धप	मप	पनध	ऽप	मग	ऽ '	गम	मर
जी	०	व	०	न	०	०	०	त	०	र	००	णी	०	तु	मि०

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

29—रोदनभरा ए वसन्त

रोदनभरा ए वसन्त कखनो आसे नि बुझि आगे ।
मोर विरहवेदना राङालो किंशुकरक्तिमरागे ।।
कुञ्जद्वारे वनमल्लिका सेजेछे परिया नव पत्रालिका,
सारा दिन-रजनी अनिमिखा कार पथ चेये जागे ।।
दक्षिणसमीरे दूर गगने एकेला विरही गाहे बुझि गो ।
कुञ्जवने मोर मुकुल यत आवरणबन्धन छिँड़िते चाहे ।।
आमि ए प्राणेर रुद्ध द्वारे व्याकुल कर हानि वारे वारे—
देओया हल ना ये आपनारे एइ व्यथा मने लागे ।।

ताल कहरवा

सब स्वर शुद्ध

द्रुत लय (मम=152 मात्रा)

(अ)

स	र	र	र	ग	ऽ	ग	ग	र	गम	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ग	म
रो	द	न	भ	रा	०	ए	व	स	०न्	त	०	०	स	खि	०
मर	र	र	र	र	र	र	ग	र	म	म	ऽ	ग	म	र	ग
क	ख	नो	आ	से	नि	बु	झि	आ	०	गे	०	०	०	०	०
स	र	र	र	ग	ऽ	ग	ग	र	गम	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ग
रो	द	न	भ	रा	०	ए	व	स	० न्	त	०	०	०	मो	र
ग	गप	प	प	ऽ	प	प	ग	ग	प	प	ध	ध	न	ऽ	धप
वि	र०	ह	वे	०	द	ना	०	रा	०	ङा	०	लो	०	०	००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

प	ध	ध	न	(प)ध	प	प	प	प	ध	ध	प	म	ग	र	ग
किं	०	शु	क	र	क्	ति	म	रा	०	गे	०	०	०	०	०
स	र	र	र	ग	ऽ	ग	ग	र	गम	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ग	म
रो	द	न	भ	रा	०	ए	व	म	०न्	त	०	०	०	म	खि
(म)र	र	र	र	र	र	र	ग	र	म	म	ऽ	ग	म	र	ग
क	ख	नो	आ	से	नि	बु	झि	आ	०	गे	०	०	०	०	०
स	र	र	र	ग	ऽ	ग	ग	र	गम	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रो	द	न	भ	रा	०	ए	व	स	०न्	त	०	०	०	०	०

(ब)

प	ग	ग	ग	प	ऽ	प	ध	ध	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	(प)सं	सं
कु	न्	ज	द्वा	रे	०	व	न	म	०	ल्	लि	का	०	से	जे
सं	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	सं	न	ध	न	सं	न	धप	ऽ	ऽ	ऽ
छे	०	प	रि	या	०	न	व	प	०	त्रा	लि	का०	०	०	०
ग	गप	प	प	प	प	प	ग	ग	(ग)प	प	ध	ध	न	ऽ	धप
सा	रा०	दि	न	र	ज	नी	०	म	नि	मि	०	खा	०	०	००
प	ध	ध	न	(प)ध	प	प	ऽ	प	ध	ध	प	म	ग	र	ग
का	र	प	थ	चे	०	ये	०	जा	०	गे	०	०	०	०	०

गाइये (अ) →

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(स)

स	ऽ	र	र	र	र	ग	म	र	प	प	म	ग	ऽ	ऽ	ऽ
द	०	क्षि	ण	स	मी	रे	०	दू	र	ग	ग	ने	०	०	०
ग	गप	प	ऽ	प	ध	धन	धप	प	ध	ध	न	पध	प	म	ग
ए	के०	ला	०	वि	र	ही	००	गा	०	हे	०	बु	झि	गो	०
रस	ऽ	र	र	र	र	ग	म	र	प	प	म	ग	ऽ	ऽ	ऽ
द०	०	क्षि	ण	स	मी	रे	०	दू	र	ग	ग	ने	०	०	०
प	धसं	सं	सं	सं	ऽ	रंसं	न	न	सं	सं	न	धन	ऽ	नप	ध
कु	०न्	ज़	व	ने	०	मो०	र	मु	कु	ल	य	त	०	०	०
प	धरं	रं	रंसं	सं	ऽ	रंसं	न	न	सं	सं	न	धन	ऽ	ऽ	धप
कु	०न्	ज	व०	ने	०	मो०	र	मु	कु	ल	य	त	०	०	००
प	ध	न	सं	धन	न	ध	प	ध	ध	ध	ध	प	म	ग	रग
आ	व	र	ण	व०	न्	ध	न	छिं	ड़ि	ते	चा	हे	०	०	००
रस	ऽ	र	र	र	र	ग	म	मर	प	प	म	ग	ऽ	ऽ	ऽ
द	०	क्षि	ण	स	मी	रे	०	दू	र	ग	ग	ने	०	०	०
प	प	ग	ऽ	प	ऽ	प	ध	ध	सं	सं	ऽ	सं	न	रंसं	ऽ
आ	मि	ए	०	प्रा	०	णे	र	रु	०	द्ध	०	द्वा	०	रे	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	सं	सं	सं	सं	सं	सं	संन	ध	न	सं	न	धनसं	धन	धप	ऽ
व्या	०	कु	ल	क	र	ह्या	नि०	बा	०	रे	०	वा००	००	०रे	०

गग	गप	प	प	प	ऽ	प	ग	ग	प	प	ध	ध	न	ऽ	धप
देओ	या०	ह	ल	ना	०	ये	०	आ	प	ना	०	रे	०	०	००

प	ध	ध	न	पध	ऽ	धप	प	प	ध	ध	प	म	ग	र	ग
ए	इ	व्य	०	था	०	म	ने	ला	०	गे	०	०	०	०	०

गाइये (अ) ⟶

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

30—हे मोर चित्त

हे मोर चित्त, पुण्य तीर्थे जागो रे धीरे
एइ भारतेर महामानवेर सागर तीरे।
हेथाय दाँड़ाये दु बाहु बाड़ाये नमि नरदेवतारे,
उदार छन्दे परमानन्दे वन्दन करि ताँरे।
ध्यानगम्भीर एइ ये भूधर, नदी-जपमाला-धृत-प्रान्तर,
हेथाय नित्य हेरो पवित्र धरित्रीरे—
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।
केह नाहि जाने कार आह्वाने कत मानुषेर धारा
दुर्वार स्रोते एल कोथा हते, समुद्रे हल हारा।
हेथाय आर्य, हेथा अनार्य, हेथाय द्रविड़ चीन—
शक-हूण-दल पाठान-मोगल एक देहे हल लीन ।।
पश्चिमे आजि खुलियाछे द्वार, सेथा हते सबे आने उपहार,
दिवे आर निबे, मिलावे मिलिवे याबे ना फिरे--
एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।
एसो हे आर्य, एसो अनार्य, हिन्दु-मुसलमान।
एसो एसो आज तुमि इंराज, एसो एसो खृस्टान।
एसो ब्राह्मण, शुचि करि मन धरो हात सबाकार।
एसो हे पतित, होक अपनीत सब अपमानभार।
मार अभिषेके एसो एसो त्वारा, मङ्गलघट हय नि ये भरा
सबार-परशे-पवित्र-करा तीर्थनीरे—
आजि भारतेर महामानवेर सागरतीरे ।।

ताल दादरा

सब स्वर शुद्ध

द्रुत लय (मम=216 मात्रा)

(अ)

सगं	गं	गं	गंरं	ऽ	ऽ	सं	ऽ	ऽ	प	ऽ	गं
हे॰	मो	र	चि॰	॰	॰	त्त	॰	॰	॰	॰	॰

गं	गं	गं	गंरं	ऽ	रं	सं	ऽ	सं	संरं	ऽ	सं
हे	मो	र	चि	॰	त्त	पु	॰	ण्य	ती॰	॰	र्थे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संन	न	ध	धप	ऽ	ध	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
जा	गो	रे	धी	०	०	रे	०	०	०	०	०

प	न	न	नध	ध	न	नप	ध	प	म	ग	ग
ए	इ	भा	र	ते	र	म	हा	मा	न	वे	र

ग	गप	प	ग	र	ग	रस	ऽ	ऽ	स	र	ग
सा	ग०	र	ती	०	०	रे०	०	०	०	०	०

ग	ग	ग	ग	र	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
जा	गो	रे	धी	०	०	रे०	०	०	०	०	०

(ब)

स	स	ध	स	धप	न	नध	ऽ	नध	धप	ऽ	ऽ
हे	था	य	दाँ	ड़ा	०	ये	०	०	०	०	०

स	स	ध	ध	ध	ध	धप	ध	धसं	सं	सं	सं
हे	था	य	दाँ	ड़ा	ये	दु	बा	दु०	वा	ड़ा	ये

प	ध	धप	प	ग	प	पग	ऽ	र	स	ऽ	र
न	मि	न	र	दे	व	ता	०	०	रें	०	०

रग	ग	ग	ग	ग	ग	गप	प	प	ग	ग	ग
उ०	दा	र	छ	न्	दे	प०	र	मा	न	न्	दे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गप	प	प	ग	र	ग	गर	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ
व॰	न्	द	न	क	रि	ताँ	॰	॰	रे	॰	॰

प	ग	प	प	प	ध	ध	सं	सं	सं	सं	सं
ध्या	न	ग	म्	भी	र	ए	इ	ये	भू	ध	र

सं	रं	रं	रं	रं	संरंगं	गंरं	सं	सं	न	ध	न
न	दी	ज	प	मा	ला॰॰	धृ	त	प्रा	न्	त	र

नप	ध	ध	धसं	ऽ	सं	संरं	रंसं	न	ध	ऽ	न
हे	था	य	नि॰	॰	त्त	हे॰	रो॰	प	वि	॰	त्र

नप	ध	ऽ	ध	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
ध	रि	॰	त्री	रे	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰

प	न	न	नध	ध	न	नप	ध	धप	म	ग	ग
ए	इ	भा	र	ते	र	म	हा	मा	न	वे	र

ग	गप	प	ग	र	ग	रस	ऽ	ऽ	स़	र	ग
सा	ग॰	र	ती	॰	॰	रे॰	॰	॰	॰	॰	॰

ग	ग	ग	ग	र	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
जा	गो	रे	धी	॰	॰	रे॰	॰	॰	॰	॰	॰

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(स)

सं	गं	गं	गं	गंरं	गं	रंसं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
के	ह	ना	हि	जा	०	नें०	०	०	०	०	०
पगं	गं	गं	गंरं	रं	रं	रंसं	सं	सं	ऽ	सं	संरं
के०	ह	ना	हि	जा	ने	का	र	आ	,	ह्वा	नं
रंन	सं	न	न	ध	प	प	ऽ	ध	धन	ऽ	ऽ
क	त	मा	नु	पे	र	धा	०	०	रा०	०	०
नप	प	न	न	नध	न	नप	ध	प	प	म	ग
दु	र्	वा	र	स्त्रो	ते	ए	ल	को	था	ह	ते
ग	ग	प	पग	र	ग	र	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ
क	त	मा	नु	पे	र	धा	०	०	रा	०	०
स	स	ध	धप	ध	न	नध	ऽ	नध	धप	ऽ	ऽ
हे	था	य	आ	०	र्	य	०	००	०	०	०
स	स	ध	ध	ध	ध	धप	ध	धसं	सं	सं	सं
हे	था	य	आ	र्	य	हे	था	अ०	ना	र्	य
प	प	ध	धप	ग	प	पग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग
हे	था	या	द्रा	वि	ड़	ची	०	०	०	०	न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	ग	ग	ग	ग	ग	गप	प	प	ग	ग	ग
श	क	हू	ए	द	ल	पा०	ठा	न	मो	ग	ल
गप	प	प	ग	र	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
ए०	क	दे	हे	ह	ल	लाँ०	०	०	०	०	न
प	प	ग	प	प	ध	धसं	सं	सं	सं	सं	सं
प	श्	चि	मे	आ	जि	खु०	लि	या	छे	द्वा	र
सं	रं	रं	रं	रं	संरंगं (3)	गंरं	सं	सं	न	ध	न
से	था	ह्	ते	स	वे००	आ	ने	उ	प	हा	र
नप	ध	ध	सं	सं	सं	संरं	सं	सं	न	ध	न
दि	वे	आ	र	नि	वे	मिं०	ला	वे	मि	लि	वे
नप	ध	ध	ध	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
या	वे	ना	फि	रे	०	०	०	०	०	०	०
प	न	न	नध	ध	न	नप	ध	प	म	ग	ग
ए	इ	भा	र	ते	र	म	हा	मा	न	वे	र
ग	गप	प	ग	र	ग	रस	ऽ	ऽ	स	र	ग
सा	ग०	र	ती	०	०	रे०	०	०	०	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	ग	ग	ग	र	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
जा	गो	रे	धी	०	०	रे०	०	०	०	०	०

गाइये (अ) →

(द)

संगं	गं	गं	गंरं	ऽ	रं	सं	ऽ	ऽ	प	ऽ	गं
ए	सो	हे	आ	०	र्	य	०	०	०	०	०

गं	गं	गं	गंरं	रं	रं	रंसं	सं	सं	सं	सं	रंसं
ए	सो	हे	आ	र्	य	ए	सो	अ	ना	र्	य०

संन	सं	संन	ध	प	ध	धन	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
हि	न्	दु	मु	स	ल	मा०	०	०	०	०	न

प	पन	न	ध	ध	न	नप	ध	प	म	ग	ग
ए	सो०	ए	सो	आ	ज	तु	मि	इ	०	रा	ज

ग	गप	ग	ग	गर	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	र	ग
ए	सो०	ए	सी	ख्	स्	टा०	०	०	०	०	न

ग	ग	ग	ग	गर	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
हि	न्	दु	मु	स	ल	मा०	०	०	०	०	न

स	सध	ऽ	धप	ध	न	नध	ऽ	नध	धप	ऽ	प
ए	सो०	०	आ	०	०	ह्म	०	००	०	०	ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स	सध	ध	ऽ	ध	ध	धप	ध	धसं	सं	सं	सं
ए	सो॰	ब्रा	॰	ह्म	ए	शु	चि	क॰	रि	म	न
प	ध	प	प	ग	प	पग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग
ध	रो	हा	त	स	बा	का	॰	॰	॰	॰	र
ग	ग	ग	ग	ग	ग	गप	प	प	ग	ग	ग
ए	सो	हे	प	ति	त	हो	क	अ	प	नी	त
प	प	ग	ग	र	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
स	ब	अ	प	मा	न	भा॰	॰	॰	॰	॰	र
प	ग	प	प	प	ध	धसं	सं	सं	सं	सं	सं
मा	र	अ	भि	षे	के	ए॰	सो	ए	सो	त्व	रा
सं	रं	रं	रं	संरं	गं	गंरं	रं	सं	न	ध	नध
मं	॰	ग	ल	घ॰	ट	ह	य	नि	ये	भ	रा॰
धप	ध	सं	सं	सं	सं	संरं	सं	ऽ	संन	ध	न
स	वा	र	प	र	शे	प॰	वि	॰	त्र॰	क	रा
नप	प	ध	ध	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
ती	र्	थ	नी	रे	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	न	न	नध	ध	न	नप	ध	धप	म	ग	ग
आ	जि	भा	र	ते	र	म	हा	मा	न	वे	र

ग	गप	प	पग	र	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	र	ग
सा	ग॰	र	ती	॰	॰	रे॰	॰	॰	॰	॰	॰

ग	ग	ग	ग	र	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
जा	गो	रे	धी	॰	॰	रे॰	॰	॰	॰	॰	॰

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

31—यदि तोर डाक शुने

यदि तोर डाक शुने केउ ना आसे तबे एकला चलो रे।
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे॥
यदि केउ कथा ना कय, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि सबाइ थाके मुख फिराये, सबाइ करे भय—
तबे परान खुले
ओ तुइ मुख फुटे तोर मनेर कथा एकला बलो रे॥
यदि सबाइ फिरे याय, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि गहन पथे याबार काले केउ फिरे ना चाय—
तबे पथेर काँटा
ओ तुइ रक्तमाखा चरणतले एकला दलो रे॥
यदि आलो ना धरे, ओरे ओरे ओ अभागा,
यदि झड़बादले आँधार राते दुयार देय धरे—
तबे वज्रानले
आपन बुकेर पाँजर ज्वालिये निये एकला ज्वलो रे॥

ताल दादरा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - अति कोमल **नो**

द्रुत लय (मम=272 मात्रा)

(अ)

०	०	न	ऩ	ऩ	ऩ	स	स	स	र	र	र
•	०	य	दि	तो	र	डा	क	शु	ने	के	उ
रप	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	गम	ग	ऽ	र	स	ऽ
ना	०	०	आ	०	०	से०	०	०	त	बे	०
र	र	ग	ग	र	गर	1° स	ऽ	ऩ	ऩ	ऩ	ऩ
ए	क	ला	च	लो	००	रे	०	य	दि	तो	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2°

स	ऽ	ऽ	ऽ	म	म	म	म	प	प	प	ऽ
रे	॰	॰	॰,	त	बे	ए	क	ला	च	लो	॰

(म)प	प	प	(प)नो	नो	ध	प	प	म	ग	(र)स	ऽ
ए	क	ला	च	लो	॰	ए	क	ला	च	लो	॰

र	र	ग	ग	र	गर	स	र	म	म	प	ऽ
ए	क	ला	च	लो	॰॰	रे	॰	॰	त	बे	॰

म	म	प	प	प	ऽ	(म)प	प	प	(प)नो	नो	ध
ए	क	ला	च	लो	॰	ए	क	ला	च	लो	॰

प	प	म	ग	(र)स	ऽ	र	र	ग	ग	र	गर
ए	क	ला	च	लो	॰	ए	क	ला	च	लो	॰॰

स	ऽ	ऩ	ऩ	ऩ	ऩ	स	स	स	र	र	र
रे	॰	य	दि	तो	र	डा	क	शु	ने	के	उ

(र)प	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	गम	ग	ऽ	र	स	ऽ
ना	॰	॰	आ	॰	॰	से॰	॰	॰	त	बे	॰

र	र	ग	ग	र	गर	स	ऽ	ऽ	ऽ
ए	क	ला	च	लो	॰॰	रे	॰	॰	॰

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ब)

				म	म	म	म	प	प	धनो	ध
				य	दि	के	उ	क	था	ना॰	॰
प	ऽ	प	ऽ	स	स	र	म	ऽ	प	ध	नो
क	॰	य	॰	ओ	रे	ओ	॰	॰	रे	॰	॰
ध	सं	नो	ध	प	धप	म	म	प	प	धनो	ध
ओ	॰	अ	भा	गा	॰॰	के	उ	क	था	॰ना	॰
प	ऽ	प	ऽ	प	ध	धसं	सं	सं	सं	सं	रं
क	॰	य	॰	य	दि	स	बा	इ	था	के	॰
नोसं	सं	नो	ध	प	धप	म	प	प	प	धनो	ध
मु	ख	फि	रा	ये	॰॰	स	बा	इ	क	रे॰	॰
प	ऽ	ऽ	प	स	स	र	म	म	प	ध	नो
भ	॰	॰	य,	य	दि	स	बा	इ	था	के	॰
ध	सं	नो	ध	प	धप	म	प	प	प	धनो	ध
मु	ख	फि	रा	ये	॰॰	स	बा	इ	क	रे॰	॰
प	ऽ	ऽ	प	म	म	प	प	नो	ध	नो	ऽ
भ	॰	॰	य	त	वे	प	रा	न	खु	ले	॰

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ	ऽ	ऽ	ध	प	म	म	म	प	पनो	नो	ध
०	०	०	ओ	तु	इ	मु	ख	फु	टे	तो	र

प	म	म	ग	रेस	ऽ	र	र	ग	ग	र	गर
म	ने	र	क	था	०	ए	क	ला	ब	लो	००

स	ऽ	ऽ	ऽ	म	मम	म	म	प	पनो	नो	ध
रे	०	०	०	ओ	तुइ	मु	ख	फु	टे	तो	र

प	म	म	ग	रेस	ऽ	र	र	ग	ग	र	गर
म	ने	र	क	था	०	ए	क	ला	ब	लो	००

स	ऽ	ऩ	ऩ	ऩ	ऩ
रे	०	य	दि	तो	र

गाइये (अ) ⟶

(म)

				म	म़	म	प	प	प	धनो	ध
				य	दि	स	बा	इ	फि	रे०	०

प	ऽ	ऽ	ऽ	स	स	र	म	ऽ	प	ध	नो
या	०	य	०	ओ	रे	ओ	०	०	रे	०	०

ध	सं	नो	ध	प	धप	म	प	प	प	धनो	ध
ओ	०	अ	भा	गा	००	स	बा	इ	फि	रे०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ऽ	प	ऽ	प	ध	धसं	सं	सं	सं	सं	रं
या	०	य	०	य	दि	ग	ह	न	प	थे	०
नोसं	नो	नो	ध	प	धप	म	म	प	प	धनो	ध
या	वा	र	का	ले	००	के	उ	फि	रे	ना०	०
प	ऽ	ऽ	प	म	म	प	प	नो	ध	नो	ऽ
चा	०	०	य	त	वे	प	थे	र	काँ	टा	०
ऽ	ऽ	ऽ	ध	प	म	म	म	प	पनो	नो	ध
०	०	०	ओ	तु	इ	र	क्	त	मा	खा	०
प	म	म	ग	रेस	ऽ	र	र	ग	ग	र	गर
च	र	ण	त	ले	०	ए	क	ला	द	लो	००
स	ऽ	ऽ	ऽ	म	मम	म	म	प	पनो	नो	ध
रे	०	०	०	ओ	तुइ	र	क्	त	मा	खा	०
प	म	म	ग	रेस	ऽ	र	र	ग	ग	र	गर
च	र	ण	त	ले	०	ए	क	ला	द	लो	००
स	ऽ	ऩ	ऩ	ऩ	ऩ						
रे	य	०	दि	तो	र।						

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(द)

				म	म	म	प	ऽ	प	धनो	ध
				य	दि	आ	लो	०	ना	००	ध
प	ऽ	ऽ	ऽ	स	स	र	म	ऽ	प	ध	नो
रे	०	०	०	ओ	रे	ओ	०	०	रे	०	०
ध	सं	नो	ध	प	धप	म	प	ऽ	प	धनो	ध
ओ	०	अ	भा	गा	००	आ	लो	०	ना	००	ध
प	ऽ	ऽ	ऽ	प	ध	धसं	सं	सं	सं	सं	रं
रे	०	०	०	य	दि	झं	ड़	बा	द	ले	०
धसं	नो	नो	ध	प	धप	म	प	प	प	धनो	ध
आँ०	धा	र	रा	ते	०	दु	या	र	दे	य०	ध
प	ऽ	ऽ	ऽ	स	स	र	म	म	प	ध	नो
रे	०	०	०	य	दि	झ	ड़	बा	द	ले	०
धसं	नो	नो	ध	प	धप	म	प	प	प	धनो	ध
आँ०	धा	र	रा	ते	००	दु	या	र	दे	०य	ध
प	ऽ	ऽ	ऽ	म	म	प	ऽ	नो	ध	नो	ऽ
रे	०	०	०	त	बे	व	०	ज्या	न	ले	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ	ऽ	ऽ	ध	प	म	म	प	प	[प]नो	नो	ध
०	०	०	आ	प	न	बु	के	र	पाँ	ज	र
प	म	म	ग	[र]स	ऽ	र	र	ग	ग	र	गर
ज्वा	लि	ये	नि	ये	०	ए	क	ला	ज्व	लो	००
स	ऽ	ऽ	ऽ	म	मम	म	प	प	[प]नो	नो	ध
रे	०	०	०	आ	पन	बु	के	र	पाँ	ज	र
प	म	म	ग	[र]स	ऽ	र	र	ग	ग	र	गर
ज्वा	लि	ये	नि	ये	०	ए	क	ला	ज्व	लो	००
स	ऽ	ऩ	ऩ	ऩ	ऩ						
रे	०	य	दि	तो	र						

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

32—अयि भुवनमनोमोहिनी

अयि भुवनमनोमोहिनी,
अयि निर्मलसूर्यकरोज्ज्वल धरणी जनकजननीजननी ॥
नील-सिन्धुजल-धौत-चरणतल, अनिल-विकम्पित-श्यामल-अञ्चल,
अम्बर-चुम्बित-भाल-हिमाचल, शुभ्र-तुषार-किरीटिनी ॥
प्रथम प्रभात उदय तव गगने, प्रथम सामरव तव तपोवने,
प्रथम प्रचारित तव वनभवने ज्ञानधर्म कत काव्यकाहिनी ।
चिरकल्याणमयी तुमि धन्य, देशविदेशे वितरिछ अन्न—
जाह्नवीयमुना विगलित करुणा पुण्यपीयूषस्तन्यवाहिनी ॥

ताल कहरवा

रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद - कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्रतर **री**, *तीव्र* **गे**, *तीव्र* **ने**

(अ¹)

०	०	म	गे	मगे	मन	नध	ध	प	मगे	म	प
०	०	अ	यि	भु०	व०	न०	म	नो	००	मो	हि

(अ²)

नध	ऽ	ऽ	ऽ	1° ऽऽप मगे	2° ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	न	सं	ऽ	ध	नसं	रं	ऽ
नी	०	०	०	००अ यि०	०	०	०	०	मा	०	०	०	०	००	०	०

धन	संरं	गं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रं	सं	न	ध	प	मगे	म	प
००	००	०	०	०	०	०	०	भु	व	न	म	नो	००	मो	हि

नध	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	री	ग	ग	ग	री	ग	ग	ग	री
नी	०	०	०	०	०	अ	यि	नि	र्	म	ल	सू	र्	य	क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| ग री ग म | ग र स ऽ | स संन सं संरं | नसं ध प ध |
| रो ० ज्ज्व ल | ध र णी ० | ज न० क ज० | न० नी ज न |

| न ध ऽ ऽ | धन संरं सं सं | न पन ध ध | प मगे म प |
| नी ० ० ० | ०० ०० अ यि | भु व० न म | नो ०० मो हि |

(ब)

| नध ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ध ऽ ध ध | ध न ध न |
| नी० ० ० ० | ० ० ० ० | नी ० ल सि | न् धु ज ल |

| सं सं रं न | सं सं सं सं | ध गं रीं गं | गं रं रं सं |
| धौ उ त च | र ण त ल | अ नि ल वि | क म् पि त |

| ने ऽ सं रं | सं न ध प | सध ध ध ध | ध ध ध ध |
| श्या ० म ल | अ न् च ल | अ म् ब र | चु म् बि त |

| पध नसं सं न | धप न ध प | स ऽ स स | ध ऽ न सं |
| भा० ०० ल हि | मा० ० च ल | शु ० भ्र तु | षा ० र कि |

| ध न ध न | संगं रं रं सं | न पन ध ध | प मगे म प |
| री ० ० टि | नी० ० अ यि | भु व० न म | नो मो० ० हि |

(स)

| नध ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ’म गे || स स स स | ग ऽ ग ग |
| नी ० ० ० | ० ० अ यि || प्र थ म प्र | भा ० त उ |

← — गइये (अ1)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	ग	गरी	ग	म	म	म	पम	ग	ग	री	ग	ऽ	ग	री	ग
द	थ	त॰	व	ग	ग	ने	॰॰	प्र	थ	म	सा	॰	म	र	व

री	ग	म	ग	रग	र	स	ऽ	ऩ	स	स	स	ध	ऽ	ध	ध
त	व	त	पो	॰॰	व	ने	॰	प्र	थ	म	प्र	चा	॰	रि	त

प	ध	प	न	ध	ध	प	ऽ	ग	ऽ	म	म	म	न	ध	प
त	व	व	न	भ	व	ने	॰	ज्ञा	॰	न	ध	र्	म	क	त

(द)

ग	ऽ	म	ग	रग	र	स	ऽ	ध	ध	ध	न	धन	संरं	गं	रं
का	॰	व्य	का	॰॰	हि	नी	॰	चि	र	क	॰	ल्या	ण॰	॰	म

रं	सं	सं	न	सं	ऽ	सं	ऽ	संध	गं	गं	रीं	गं	ऽ	रं	सं
यी	॰	तु	मि	ध	॰	न्य	॰	दे	॰	श	वि	दे	॰	शे	॰

ने	सं	रं	सं	सं	न	न	ध	पध	नसं	न	न	ध	ध	प	मगे
वि	त	रि	छ	श्र	॰	न्न	॰	जा॰	॰॰	ह्न	वी	य	मु	ना	॰॰

म	प	प	प	पम	प	नध	ऽ	स	ऽ	स	ध	ऽ	ध	ध	ऽ
वि	ग	लि	त	क॰	रु	णा	॰	पु	॰	ण्य	पी	॰	यू	ष	॰

ध	न	सं	ध	न	सं	गं	रं	सं	नसं	न	ध	प	मगे	म	प
स्त	॰	न्य	वा	॰	हि	नी	॰	भु	व	न	म	नो	॰॰	मो	हि

नध	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	'म	ग
नी	॰	॰	॰	॰	॰	अ	यि

गाइये (अ[1]) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

33—ओ आमार देशेर माटि

ओ आमार देशेर माटि, तोमार 'परे ठेकाइ माथा ।
तोमाते विश्वमयीर, तोमाते विश्वमायेर आँचल पाता ।।
तुमि मिशेछ मोर देहेर सने,
तुमि मिलेछ मोर प्राणे मने,
तोमार ओइ श्यामलबरन कोमल मूर्ति मर्मे गाँथा ।।
तोमार कोले जनम आमार, मरण तोमार बुके ।
तोमार 'परेइ खेला आमार दुःखे सुखे ।
तुमि अन्न मुखे तुले दिले,
तुमि शीतल जले जुड़ाइले,
तुमि ये सकल-सहा सकल-वहा मातार माता ।।
अनेक तोमार खेयेछि गो, अनेक नियेछि मा—
तबु जानि ना-ये की वा तोमाय दियेछि मा ।
आमार जनमे गेल मिछे काजे,
आमि काटानु दिन घरेर माझे—
तुमि वृथा आमाय शक्ति दिले शक्तिदाता ।।

ताल दादरा

गंधार, धैवत और निषाद - कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **गे**, *तीव्र* **धे**, *और तीव्र* **ने**

द्रुत लय (मम=180 मात्रा)

						०	०	म	स	स	ने
						०	०	ओ	आ	मा	र

(अ[1])

स	नेस	रग	ग	र	ऽ	र	र	ग	म	प	ऽ
दे	शें०	०र	मा	टि	०	तो	मा	र	प	रे	०

(अ[2])

रम	ग	ग	र	म	ऽ	ऽ	ऽ	सर	र	स	ने
ठे०	का	इ	मा	था	०	०	०	ओ	आ	मा	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स	नेस	रग	ग	र	ऽ	र	र	ग	म	प	ऽ
दे	शे॰	॰र	मा	टि	॰	तो	मा	र	प	रे	॰

रम	ग	ग	र	स	ऽ	ऽ	ऽ	म	म	म	ऽ
ठे॰	का	इ	मा	था	॰	॰	॰	तो	मा	ते	॰

प	ऽ	प	प	प	ऽ	ऽ	प	सम	म	म	ऽ
वि	॰	श्व	म	यी	॰	॰	र	तो	मा	ते	॰

प	ऽ	धे	धेसं	न	धे	पधे	पम	म	गे	म	ऽ
वि	॰	श्व	मा	ये	र	आँ॰	च॰	ल	पा	ता	॰

(ब)

ऽ	ऽ	रग	ग	ग	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प
॰	॰	ओ	आ	मा	र	॰	॰	॰	॰	तु	मि

←— गाइये (अ¹)

प	पधे	म	ऽ	प	धेधे	ने	सं	सं	मरं	ऽसं	ने
मि	शे	॰	॰	छ	मोर	दे	हे	र	स	॰॰	॰

सं	ऽ	ऽ	ऽ	सं	सं	ने	सं	ऽ	रं	रं	रं
ने	॰	॰	॰	तु	मि	मि	ले	॰	छ	मो	र

सं	सं	रं	सं	न	धे	प	ऽ	म	मम	गेम	प
प्रा	णे	॰	म	ने	॰	॰	॰	तो	मार	ओ॰	इ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	प	प	प	प	प	प	प	धे	धेसं	न	धे
श्या	म	ल	ब	र	न	को	म	ल	मू	र्	ति

पधे	प	म	गे	म	ऽ	ऽ	ऽ	रग	ग	ग	र
म॰	र्	मे	गाँ	था	॰	॰	॰	ओ	आ	मा	र

गाइये (अ¹)+(अ²)+(अ¹)→

(स)

ऽ	ऽ	सर	र	स	ऩे	स	ऩेस	रग	ग	र	ऽ
॰	॰	ओ	गो	मा	॰	तो	मा॰	॰र	को	ले	॰

र	र	ग	म	प	प	म	म	ग	र	रग	मग
ज	न	म	आ	मा	र	म	र	ण	तो	मा॰	र॰

			1°			2°								
र	स़	ऽ	र	स	ऩे	ऽ	ऽ	ऽ	सम	गेम	प	प	प	धे
बु	के	॰	ओ	मा	॰	॰	॰	॰	तो	मा॰	र	प	रे	इ

धेसं	न	ऽ	धे	प	धेप	म	ऽ	म	गे	म	ऽ
खे	ला	॰	आ	मा	॰र	दुः	॰	खे	सु	खे	॰

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	प	पधे	म	ऽ	प	धे
॰	॰	॰	॰	तु	मि	अ	॰	न्न	॰	मु	खे

ने	सं	ऽ	संरं	ऽसं	ने	सं	ऽ	ऽ	ऽ	सं	सं
तु	ले	॰	दि	॰॰	॰	ले	॰	॰	॰	तु	मि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने	सं	ऽ	रं	रं	ऽ	सं	सं	रं	सं	न	धे
शी	त	ल	ज	ले	०	जु	ड़ा	०	इ	ले	०

प	ऽ	म	म	गेम	प	प	प	प	प	प	ऽ
०	०	तु	मि	ये०	०	स	क	ल	स	हा	०

प	प	धे	धेसं	न	धे	पधे	प	म	गे	म	ऽ
स	क	ल	व	हा	०	मा०	ता	र	मा	ता	०

(द)

ऽ	ऽ	रग	ग	ग	र	स	नेस	रग	ग	र	र
०	०	ओ	आ	मा	र	अ	ने०	०क	तो	मा	र

← गाइये (अ1)+(अ2)+(अ1)

र	र	ग	म	प	ऽ	म	म	ग	र	रग	मग
खे	ये	०	छि	गो	०	अ	ने	क	नि	ये०	००

			1°			2°								
र	स	ऽ	र	स	ने	ऽ	म	म	सम	गेम	प	प	प	धे
छि	मा	०	ओ	मा	०	०	त	बु	जा	नि०	०	ना	ये	०

धेसं	न	धे	धे	प	धेप	म	म	ऽ	गे	म	ऽ
की	०	वा	तो	मा	०य	दि	ये	०	छि	मा	०

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	प	पधे	म	म	प	धे
०	०	०	०	आ	मार	ज	न	०	म	गे	ल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने	सं	ऽ	रं	ऽसं	ने	सं	ऽ	ऽ	ऽ	सं	सं
वृ	था	०	का	००	०	जे	०	०	०	आ	मि
ने	सं	ऽ	रं	रं	रं	सं	सं	रं	सं	न	धे
का	टा	०	नु	दि	न	ध	रे	र	मा	झे	०
प	ऽ	ऽ	म	गेंम	प	प	प	ऽ	प	प	प
०	०	०	तु	मि०	०	वृ	था	०	आ	मा	य
प	ऽ	धे	धेसं	न	धे	पधे	प	म	गे	म	ऽ
श	०	क्ति	दि	ले	०	श०	क्	ति	दां	ता	०
ऽ	ऽ	रग	ग	ग	र						
०	०	०ओ	आ	मा	र						

गाइये (अ1)+(अ2)+(अ1) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

34—ओरे, नूतन युगेर भोरे

ओरे, नूतन युगेर भोरे
दिस ने समय काटिये वृथा समय विचार करे ।।
की रबे आर की रबे ना, की हबे आर की हबे ना,
ओरे हिसाबि,
ए संशयेर माझे कि तोर भावना मिशावि ।।
येमन करे झर्णा नामे दुर्गम पर्वते
निर्भावनाय झांप दिये पड़ अजानितेर पथे ।
जागबे ततइ शक्ति यतइ हानबे तोरे माना,
अजानाके वश करे तुइ करबि आपन जाना ।
चलाय चलाय बाजबे जयेर भेरी—
पायेर वेगेइ पथ केटे याय, करिस ने आर देरि ।।

ताल दादरा

रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद - कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्रतर **री** *और तीव्र* **ने**

द्रुत लय (मम=192 मात्रा)

०	स	स
०	ओ	रे

(अ)

री	म	म	प	प	म	प	नध	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नू	त	न	यु	गे	र	भो	रे०	०	०	०	०
धसं	सं	सं	संरं	सं	ऽन	न	नप	पन	ध	प	ऽ
दि०	स	ने	स०	म	०य	का	टि०	ये०	वृ	था	०

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	प	न	ध	प	प	म	ग	ऽर	र	स	ऽ
स	म	य	वि	चा	र	क	रे	००	ओ	रे	०

री	म	म	प	प	म	प	नध	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नू	त	न	यु	गे	र	भो	रे०	०	०	०	०

(ब)

ध	ऽ	ध	न	सं	सं	संरं	ऽसं	सं	संने	सं	रं
की	०	र	वे	आ	र	की०	००	र	वे०	ना	०

नसं	ध	ध	न	सं	गं	रंगं	रं	रं	रं	संरं	सं
की०	०	ह	वे	आ	र	की०	०	ह	वे	ना०	०

सं	नसंऽऽ	ऽन	न	नप	नध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ओ	रे०००	००	हि	सा०	००	वि	०	०	०	०	०

पसं	सं	ऽ	संरं	सं	ऽन	न	नप	न	ध	प	ध
ए०	सं	०	श०	यें	र०	मा	झे०	०	कि	तो	र

धम	म	प	पन	ध	मप	मग	ऽ	ऽर	र	स	ऽ
भा०	व	ना	मि०	शा	००	वि०	०	००	ओ	रे	०

गाइये (अ) →

(स)

स	स	स	स	स	ऽ	ऩस	स	स	स	स	ऽ
ये	म	न	क	रे	०	झ	र्	ना	ना	मे	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स	ऽ	री	ग	ग	म	म	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
दु	०	र्ग	म	प	र्	व	ते	०	०	०	०

प	न	न	नध	ध	प	म	प	म	गरी	ग	ग
नि	र्	भा	०व	ना	य	झाँ	प	दि	०ये	प	ड़

गम	म	ऽग	ग	गर	ग	र	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
अ०	जा	००	नि	ते०	र	प	थे	०	०	०	०

(द)

ध	ध	ध	न	सं	सं	नध	ध	ध	न	सं	सं
जा	ग	वे	त	त	इ	श०	क्	ति	य	त	इ

नध	ध	ध	न	सं	रं	संन	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
हा०	न	वे	तो	रे	०	मा०	ना	०	०	०	०

सं	सं	ग	गंरीं	मंगं	रं	गंरं	रं	रं	रंसं	सं	ऽन
अ	जा	०	ना०	के०	०	व	श	क	रे०	तु	०इ

न	न	न	नध	धप	न	नध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
क	र	बि	आ०	प०	न	जा	ना	०	०	०	०

पसं	सं	सं	संरं	सं	ऽन	न	न	न	नध	धप	न
च०	ला	य	च०	ला	०य	वा	ज	वे	ज०	ये०	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	ऽ	प	नध	ऽप
भे	री	०	०	०	०	पा	ये	र	वे	गे०	०इ

पम	म	म	म	मप	पम	गरी	ग	ग	गरी	ग	ग
प०	थ	के	टे	या०	य	क०	रि	स	नै०	आ	र

गरी	मग	र	र	स	ऽ
दे०	रि	०	ओ	रे	०

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

35—मरण सागर पारे

मरणसागरपारे तोमरा अमर,
तोमादेर स्मरि।
निखिले रचिया गेले आपनारइ घर
तोमादेर स्मरि॥
संसारे ज्वले गेले ये नव आलोक,
जय होक, जय होक, तारि जय होक—
तोमादेर स्मरि॥
बन्दीरे दिये गेछ मुक्तिर सुधा,
तोमादेर स्मरि।
सत्येर वरमाले साजाले वसुधा
तोमादेर स्मरि।
रेखे गेले वाणी से ये अभय अशोक
जय होक, जय होक, तारि जय होक—
तोमादेर स्मरि॥

ताल कहरवा

सब स्वर शुद्ध

द्रुत लय (मम=200 मात्रा)

(अ[1])

स	ध	ध	ध	ध	ध	धप	धन	न	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	र	ण	सा	ग	र	पा	००	रे	०	०	०	०	०	०	०
प	ध	धरं	रं	सं	ऽ	ऽ	सं	ग	प	ग	ग	र	स	ऽ	ऽ
तो	म	रा०	अ	म	०	०	र	तो	मा	दे	र	स्म	रि	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अ²)

| प ध धसं सं | रं सं न ध | प ध पन न | धप ऽ ऽ प |
| नि खि ले० र | चि या गे ले | आ प ना० रि | घ० ० ० र |

(ब)

| ग प ग ग | र स ऽ ऽ || प ग प ध | धसं सं सं रं |
| तो मा दे र | स्म रि ० ० || सं ० सा रे | ज्व० ले गे ले |

← गाइये (अ¹)

| गं गं गं रं | सं ऽ ऽ सं | पं पं गं गं | गं गं रं रं |
| ये न व आ | लो ० ० क | ज य हो क | ज य हो क |

| संरं रं सं ऽ | न ऽ ऽ न | ग प ग ग | र स ऽ ऽ ||
| ता० रि ज य | हो ० ० क | तो मा दे र | स्म रि ० ० ||

गाइये (अ¹)+(अ²)+(अ¹) →

(स)

| सं सं सं सं | न संन ध न | प ध न न | ध प ऽ ऽ |
| ब न् दी रे | दि ये० गे छे | मु क् ति र | सु धा ० ० |

| ग प ग ग | र सं ऽ ऽ | प सं सं सं | न न ध नध |
| तो मा दे र | स्म रि ० ० | स ० त्ये र | व र मा ले० |

| प प ध धरं | रं सं ऽ ऽ | ग प ग ग | र स ऽ ऽ |
| सा जा ले व० | सु धा ० ० | तो मा दे र | स्म रि ० ० |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(द)

प	ग	प	ध	धसं	सं	सं	रं	गं	गं	गं	र	सं	ऽ	ऽ	सं
रे	खे	गे	ले	वा०	णी	से	ये	अ	भ	य	अ	शो	०	०	क

पं	पं	गं	गं	गं	गं	रं	रं	रं	रं	सं	सं	न	ऽ	ऽ	न
ज	य	हो	क	ज	य	हो	क	ता	रि	ज	य	हो	०	०	क

ग	प	ग	ग	र	स	ऽ	ऽ
तो	मा	दे	र	स्म	रि	०	०

गाइये (अ^1)+(अ^2)+(अ^1) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

36—सबारे करि आह्वान

सावरे करि आह्वान—
एसो उत्सुकचित, एसो आनन्दित प्राण ।
हृदय देहो पाति, हेथाकार दिवा राति
करुण नवजीवनदान ॥
आकाशे आकाशे वने वने तोमादेर मने मने
विछाये विछाये दिवे गान ।
सुन्दरेर पादपीठतले येखाने कल्याणदीप ज्वले
सेथा पावे स्थान ॥

ताल (2+2)

गंधार और निषाद - अति कोमल । रिषभ - तीव्र

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **गे** *और तीव्र* **ने**

द्रुत लय (मम=200 मात्रा)

(अ)

स	सप	प	ऽ	म	म	ग	र	स	ऽ	ऽ	ऽ	स	प	प	म
स	वा॰	रे	॰	क	रि	आ	॰	ह्वा	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰

ग	र	स	ने̣	स	सप	प	ऽ	म	म	ग	र	स	ऽ	ऽ	ऽ
॰	॰	॰	न	स	वा॰	रे	॰	क	रि	आ	॰	ह्वा	॰	॰	न

म	मप	प	प	प	प	प	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ	प	ध	न	सं
ए	सो॰	उ	त्	सु	क	चिं	॰	त्त	॰	॰	॰	ए	सो	आ।	॰

नसं	न	न	नध	पध	ऽ	प	ऽ	ऽ	ध	न	सं	न	सं	न	न
न॰	न्	दि	त	प्रा	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| न ध | म ऽ | म म | ग र | स ऽ | ऽ ऽ | स प | प म |
| स बा | रे ० | क रि | आ ० | ह्वा ० | ० ० | ० ० | ० ० |

| ग र | स ने | स सप | प ऽ | म म | ग र | स ऽ | ऽ ऽ |
| ० ० | ० न | स बा० | रे ० | क रि | आ ० | ह्वा ० | ० न |

(ब)

|| प प | मग म | प ने | ने ऽ | सं ऽ | ऽ ऽ | सं संगं | गं गं |
|| हृ द | य० दे | हो ० | पा ० | ति ० | ० ० | हे था० | का र |

| रं सं | संरं ने | सं ऽ | ऽ ऽ || सं संरं | सं सं | नसं संन | न नध |
| दि वा | रा० ० | ति ० | ० ० || क रु० | क न | व० जी० | व न० |

| पध ऽ | प ऽ | ऽ ध | न सं | न सं | न न | न ध | प ऽ |
| दा ० | ० ० | ० ० | ० ० | ० ० | ० न | स बा | रे ० |

गाइये (अ) →

(स)

|| स प | प ऽ | म गर | स ने | स सप | म गर | स ऽ | ऽ ऽ |
|| आ का | शे ० | आ का० | शे ० | व ने | व ०० | ने ० | ० ० |

| म मप | प प | प प | प ध | न नसं | सं न | न ध | प ऽ |
| तो मा० | दे र | म ने | म ने | बि छा० | ये ० | बि छा | ये ० |

(द)

| पध धप | मग ग | म ऽ | ऽ म || मप ऽ | प पम | म गं | ऽ म |
| दि० वे | गा० ० | ० ० | ० न || सु० ० | न् द० | रे ० | ० र |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	पने	ने	ने	ने	सं	सं	ऽ	सं	संगं	गं	ऽ	संरं	ऽ	सं	सं
पा	द॰	पी	ठ	त	॰	ले	॰	ये	खा॰	ने	॰	क	॰	ल्या	ण

संर	ने	ने	ने	सं	ऽ	ऽ	ऽ	संरं	सं	संरं	सं	सं	न	न	ध
दी॰	॰	प	ज्व	ले	॰	॰	॰	से॰	॰	था॰	॰	पा	॰	बे	॰

पध	ऽ	प	ऽ	ऽ	ध	न	सं	न	सं	न	न	न	ध	प	ऽ
स्था	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	न	स	वा	रे	॰

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

37—ग्राम छाड़ा

ग्रामछाड़ा ओइ राङा माटिर पथ   आमार   मन भुलाय रे।
ओरे   कार पाने मन हात बाड़िये   लुटिये याय धुलाय रे॥
ओ ये   आमाय घरेर बाहिर करे,   पाये-पाये पाये धरे—
ओ ये   केड़े आमाय निये याय रे   याय रे कोन् चुलाय रे॥
ओ ये   कोन् बाँके की धन देखावे   कोन्खाने की दाय ठेकावे—
कोथाय गिये शेष मेले ये   भेवेइ ना कुलाय रे॥

जंला—ताल कहरवा

सब स्वर शुद्ध

द्रुत लय (मम=152 मात्रा)

(अ1)

धृ	स	ऽ	स	स	ऽ	स	र	ग	प	प	ध	प	ऽ	म	पम
ग्रा	म	०	छा	ड़ा	०	ओ	इ	रा	०	ङा	०	मा	०	टि	०र

मग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ग	ऽ	ऽ	म	प	ऽ	ऽ	धप
प	०	०	०	०	०	०	थ	आ	०	०	०	मा	०	०	००

म	ऽ	ऽ	पम	ग	ऽ	स	र	ग	ऽ	ऽ	म	मग	ऽ	र	गर
०	०	०	००	०	०	०	र	म	०	०	न	भु	०	ला	०य

(अ2)

				1°	2°								
स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ प ध	प	ध	सं	सं	रं	ऽ	सं	सं
रे	०	०	०	० ० ० ०	० ० ओ रे	का	०	र	पा	ने	०	म	न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सं	ऽ	सं	संन	नध	ऽप	ध	न	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ह्रा	०	त	बा	ड़ि	००	०	०	ये	०	०	०	०	०	०	०

ध	ध	ध	सं	संध	ध	प	ध	म	प	प	म	ग	ऽ	स	र
लु	टि	ये	०	या	य	धु	०	ला	०	य	रे	आ	०	मा	र

ग	ऽ	ऽ	म	मग	ऽ	र	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	०	०	न	भु	०	ला	य	रे०	०	०	०	०	०	०	०

गाइये (अ[1]) ⟶

(ब)

ध़	स	स	ऽ	स	ऽ	स	र	ग	प	प	प	प	ध	धप	धप
ओ	०	ये	०	आ	०	मा	य	ध	०	रे	र	बा	०	हि	०र

म	ऽ	मग	पम	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ग	म	प	ऽ	प	ध
क	०	००	००	रे	०	०	०	पा	०	०	ये	पा	०	ये	०

म	ऽ	म	प	म	ऽ	ऽ	पम	ग	ऽ	स	र	ग	ऽ	ऽ	म
पा	०	ये	०	ध	०	०	००	रे	०	०	०	हा	०	०	य

ग	ऽ	र	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ध
हा	०	०	य	रे०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ओ	ये

ध	सं	सं	ऽ	सं	रं	रंसं	सं	सं	ऽ	ऽ	न	ध	ऽप	ध	न
के	०	ड़े	०	आ	०	मा	य	नि	०	०	ये	या	००	०	य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ध	सं	ध	ध	प	ध
रे	०	०	०	०	०	०	०	या	०	य	रे	को	न्	चु	०

मप	प	ऽ	म	ग	ऽ	स	र	ग	ऽ	ऽ	म	ग	ऽ	र	ग
ला०	य	०	रे	आ	०	मा	र	म	०	०	न	भु	०	ला	य

रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	प	ऽ	प	ग	प	ऽ	प	ध
रे०	०	०	०	०	०	ओ	०	को	०	न्	बाँ	के	०	की	०

ध	सं	ऽ	रं	रं	ऽसं	रं	गं	रंसं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	न	०	दे	खा	००	०	०	बे०	०	०	०	०	०	०	०

सं	रं	रं	रं	रं	ऽ	संरं	गं	गंरं	सं	सं	न	ध	ऽप	ध	न
को	०	न्	खा	ने	०	कि०	०	दा	०	य	ठे	का	००	०	०

धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	ध	सं	सं	ऽ	सं	ऽ
बे०	०	०	०	०	०	०	०	को	०	था	य	गि	०	ये	०

सं	ऽ	सं	न	न	ध	पध	न	धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
शे	०	०	ष	मे	०	लें०	०	ये०	०	०	०	०	०	०	०

ध	ऽ	ध	सं	ध	ऽ	प	ध	म	प	प	म	ग	ऽ	स	र
भे	०	बे	इ	ना	०	कु	०	ला	०	य	रे	आ	०	मा	र

ग	ऽ	ऽ	म	ग	ऽ	र	ग	रस	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	०	०	न	भु	०	ला	य	रे०	०	०	०	०	०	०	०

गाइये (अ¹) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

38—मातृमन्दिर-पुण्य-अङ्गन

मातृमन्दिर-पुण्य-अङ्गन कर' महोज्ज्वल आज हे,
वर —पुत्रसङ्घ विराज' हे।
शुभ शङ्ख वाजह वाज' हे।
धन तिमिररात्रिर चिर प्रतीक्षा
पूर्ण कर', लह' ज्योतिदीक्षा,
यात्रिदल सब साज' हे।
शुभ शङ्ख बाजह बाज' हे।
बल' जय नरोत्तम, पुरुषसत्तम,
जय तपस्वीराज हे।
जय हे, जय हे, जय हे ॥
एस' वज्रमहासने मातृ-आशीर्भाषणे,
सकल साधक एस' हे, धन्य कर' ए देश हे।
सकल योगी, सकल त्यागी, एस' दुःसहदुःखभागी—
एस' दुर्जयशक्तिसम्पद मुक्तबन्ध समाज हे।
एस' ज्ञानी, एस' कर्मी, नाश' भारत-लाज हे।
एस' मङ्गल, एस' गौरव,
एस' अक्षय-पुण्य-सौरभ,
एस' तेज: सूर्य उज्ज्वल कीर्ति-अम्बर-माझ हे।
वीरधर्मे पुण्यकर्मे विश्वहृदये राज' हे।
शुभ शङ्ख बाजह बाज' हे।
जय जय नरोत्तम, पुरुषसत्तम,
जय तपस्वीराज हे।
जय हे, जय हे, जय हे ॥

ताल तेवरा

तीव्र मध्यम और तीव्रतर धैवत

द्रुत लय (मम=218 मात्रा)

सं	S	सं	सं	सं	सं	सं	संन	S	ध	धन	S	ध	प
मा	०	तृ	म	न्	दि	र	पु	०	ण्य	अ	०	ङ्ग	न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पध	ध	प	पध	ऽ	धप	प	पध	ऽ	प	पस	स	स	र
क	र	म	हो	०	ज्ज्व	ल	आ	०	ज	हे	०	व	र
ग	ऽ	ग	ग	ऽ	ग	ग	गर	ऩ	र	स	ऽ	स	ऩ
पु	०	त्र	स	०	द्भ	वि	रा	०	ज	हे	०	शु	भ
नंध़	ऽ	ऩ	नध़	ऽ	धस	स	स	ऩ	र	स	ऽ	स	स
श	०	ह्व	बा	०	ज	ह	बा	ज	०	हे	०	ध	न
स	सऩ	स	र	ऽ	र	र	र	स	र	ग	ऽ	ग	ऽ
ति	मि	र	रा	०	त्रि	र	चि	र	प्र	ती	०	क्षा	०
गर	ऽ	ग	म	म	म	म	मग	ऽ	म	मध	ऽ	धप	ऽ
पू	०	र्ण	क	र	ल	ह	ज्यो	०	ति	दी	०	क्षा	०
पम	ऽ	प	ध	ध	ध	ध	पध	प	ध	न	ऽ	न	न
या	०	त्रि	द	ल	स	ब	सा	०	ज	हे	०	शु	भ
नध	ऽ	न	सं	ऽ	सं	न	नध	न	नरं	रंसं	ऽ	स	स
श	०	ह्व	बा	०	ज	ह	बा	०	ज	हे	०	ब	ल

(अ²)

पस	स	स	स	ऽ	स	स	स	ऩ	स	र	ऽ	र	ऱ
ज	य	न	रो	०	त्त	म	पु	रु	ष	स	०	त	म

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	रेस	र	ग	ऽ	ग	ऽ	र	ग	म	प	ऽ	ऽ	ऽ
ज	य	त	प	०	स्वी	०	रा	०	ज	हे	०	०	०
प़	ऽ	ध़	ऩ	ऽ	ऽ	ऽ	नध़	ऽ	ऩ	स	ऽ	ऽ	ऽ
ज	०	य	हे	०	०	०	ज	०	य	हे	०	०	०
सऩ	ऽ	स	र	ऽ	ऽ	ऽ	रेन	ऽ	न	सं	ऽ	ऽ	ऽ
ज	०	य	हे	०	०	०	ज	०	य	हे	०	०	०

(ब)

प	मप	ग	प	ऽ	प	ध	धसं	ऽ	संन	रेसं	ऽ	ऽ	ऽ
ए	०	स	व	०	त्र	म	हा	०	स०	ने	०	०	०
पसं	ऽ	सं	न	ऽ	ध	ध	पध	न	न	धप	ऽ	ऽ	म
मा	०	तृ	आ	०	शी	र्	भा०	०	ष	णे	०	०	०
गम	ग	ग	प	ऽ	प	प	प	म	प	धप	ऽ	ऽ	ऽ
स	क	ल	सा	०	ध	क	ए	०	स	हे	०	०	०
स	ऽ	र	ग	ग	ग	ऽ	गर	ऩ	र	रेस	ऽ	ऽ	ऽ
ध	०	न्य	क	र	ए	०	दे	०	श	हे	०	०	०

(स)

प	प	पग	प	म	ध	प	पसं	सं	सं	सं	न	रेसं	ऽ
स	क	ल	यो	०	गी	०	स	क	ल	त्या	०	गी	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सं	ऽ	रं	रंसं	ऽ	गं	गं	गंरं	ऽ	सं	संन	ऽ	ध	प
ए	०	स	दुः	०	स	ह	दुः	०	ख	भा	०	गी	०
प	ऽ	ध	धप	प	ध	ध	धप	ऽ	ध	धसं	ऽ	सं	सं
ए	०	स	दु	र्	ज	य	श	०	क्ति	स	०	म्प	द
स	ऽ	र	ग	ऽ	ग	ग	गर	ग	म	प	ऽ	ऽ	ऽ
मु	०	क्त	ब	०	न्ध	स	मा	०	ज	हे	०	०	०
पम	ऽ	प	प	ऽ	प	ऽ	पम	ऽ	प	ध	ऽ	ध	ऽ
ए	०	स	ज्ञा	०	नी	०	ए	०	स	क	०	र्मी	०
धप	ऽ	ध	न	ऽ	न	न	प	ध	न	सं	ऽ	ऽ	ऽ
ना	०	श	भा	०	र	त	ला	०	ज	हे	०	०	०
प	ऽ	ग	गप	ऽ	प	ध	धसं	ऽ	संन	रंसं	ऽ	सं	सं
ए	०	स	म	०	ङ्ग	ल	ए	०	स०	गौ	०	र	व
सं	ऽ	रं	रंसं	ऽ	गं	गं	गंरं	ऽ	सं	संन	ऽ	ध	प
ए	०	स	अ	०	क्ष	य	पु	०	ण्य	सौ	०	र	भ
प	ऽ	ध	धप	ऽ	ध	ऽ	धप	ऽ	ध	धसं	ऽ	सं	सं
ए	०	स	ते	०	ज	०	सू	०	र्य	उ	०	ज्ज्व	ल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स	ऽ	र	ग	ऽ	ग	ग	गर	ग	म	प	ऽ	ऽ	ऽ
की	०	र्ति	अ	०	म्ब	र	मा	०	भ	हे	०	०	०
पम	ऽ	प	प	ऽ	प	ऽ	पम	ऽ	प	ध	ध	ध	ऽ
वी	०	र	ध	०	में	०	पु	०	ण्य	क	र्	मे	०
धप	ऽ	ध	न	न	न	ऽ	नप	ध	न	सं	ऽ	स	स
वि	०	श्व	हृ	द	य	०	रा	०	ज	हे	०	शु	भ
स	ऽ	र	ग	ऽ	ग	ग	गर	ऩ	र	रस	ऽ	स	स
श	०	ङ्ख	बा	०	ज	ह	बा	०	ज	हे	०	ज	य

गाइये (अ²) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

39—हिंसाय उन्मत्त पृथ्वि

हिंसाय उन्मत्त पृथ्वि, नित्य निठुर द्वन्द्व;
चोर कुटिल पन्थ तार, लोभजटिल बन्ध ।।
नूतन तव जन्म लागि कातर यत प्राणी;
कर' त्राण महाप्राण, आन' अमृतवाणी,
विकशित कर' प्रेमपद्म चिरमधुनिष्यन्द ।
शान्त हे, मुक्त हे, हे अनन्तपुण्य,
करुणाघन, धरणीतल कर' कलङ्कशून्य ।।
एस' दानवीर, दाओ त्यागकठिन दीक्षा ।
महाभिक्षु, लओ सबार अहंकारभिक्षा ।
लोक लोक भुलुक शोक, खण्डन कर' मोह,
उज्ज्वल होक ज्ञानसूर्य-उदयसमारोह—
प्राण लभुक सकल भुवन, नयन लभुक अन्ध ।
शान्त हे, मुक्त हे, हे अनन्तपुण्य,
करुणाघन, धरणीतल कर' कलङ्कशून्य ।।
क्रन्दनमय निखिलहृदय तापदहनदीप्त
विषयविषविकारजीर्ण खिन्न अपरितृप्त ।
देश देश परिल तिलक रक्तकलुषग्लानि,
तव मङ्गलशङ्ख आन' तव दक्षिणपाणि—
तव शुभसंगीतराग, तव सुन्दर छन्द ।
शान्त हे, मुक्त हे, हे अनन्तपुण्य,
करुणाघन, धरणीतल कर' कलङ्कशून्य।

ताल दादरा

रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद - कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर तीव्रतर - **री,** *तीव्र -* **मे** *और तीव्र -* **ने**

द्रुत लय(मम=156 मात्रा)

(अ)

स	ध	ध	ध	प	प	प	ऽ	प	प	मे	प
हिं	०	सा	य	उ	न्	म	०	त	पृ	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नध	S	S	न	सं	रं	न	S	गं	रं	रं	सं
ध्वी ०	०	०	०	०	०	नि	०	त्य	नि	ठु	र
सं	ने	सं	S	S	S	सं	गं	गं	रं	सं	सं
द्व	न	द्व	०	०	०	घो	०	र	कु	टि	ल
सं	रं	न	नध	S	प	मप	ग	ग	ग	म	ग
प	न	थ	ता	०	र	लो ०	०	भ	ज	टि	ल
र	S	S	स	S	S	स	ध	ध	ध	प	प
ब	०	०	न्ध	०	०	हिं	०	सा	य	उ	न
प	S	प	प	मे	प	नध	S	S	S	S	S
म	०	त्त	पृ	०	०	ध्वी	०	०	०	०	०

(ब)

ध	S	ध	ध	ध	न	न	सं	सं	सं	S	सं
नू	०	त	न	त	व	ज	न	म	ला	०	गि
सं	रं	रं	रं	र	सं	संरं	न	S	सं	S	S
का	०	त	र	य	त	प्रा ०	०	०	णी	०	०
संगं	गं	S	मं	रीं	गं	रींमं	मंग	S	रं	S	सं
क ०	र	०	आ	०	ण	म ०	हा	०	प्रा	०	ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न	गं	गं	रं	सं	सं	न	संरंसं	नसं	नध	ऽ	ऽ
आ	०	न	अ	मृ	त	वा	०००	००	णी०	०	०
ध	सं	सं	सं	रं	सं	न	सं	न	ध	ऽ	प
वि	क	शि	त	क	र	प्रे	०	म	प	०	द्य
प	न	न	न	ध	प	$^{\text{प}}$म	प	$^{\text{प}}$म	ऽ	ऽ	ऽ
चि	र	म	धु	नि	०	ष्य	न्	द	०	०	०
स	ऽ	री	ग	ऽ	ऽ	री	ऽ	ग	म	ऽ	प
शा	०	न्त	हे	०	०	मु	०	क्त	हे	०	०
$^{\text{प}}$म	न	न	ध	ऽ	प	म	प	$^{\text{प}}$म	ऽ	ऽ	ऽ
हे	०	अ	न	०	न्त	पु	०	ण्य	०	०	०
म	प	$^{\text{प}}$म	न	ध	प	म	पम	ग	री	ग	ग
क	रु	णा	घ	०	न	ध	र०	णी	०	त	ल
म	म	म	स	र	ग	र	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ
क	र	क	ल	०	ङ्क	शू	०	न्य	०	०	०
स	ध	ध	ध	ऽ	प	प	ऽ	प	$^{\text{म}}$प	ऽ	ग
ए	०	स	दा	०	न	वी	०	र	दा	०	ओ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ऽ	ध	प	न	ध	मप	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ
त्या	०	ग	क	ठि	न	दी०	०	क्षा	०	०	०
म	म	प	म	न	ध	प	प	म	ग	री	ग
म	हा	०	भि	०	क्षु	ल	ओ	स	बा	०	र
म	म	ऽ	स	र	ग	गर	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ
अ	हं	०	का	०	र	भि	०	क्षा	०	०	०
ध	ऽ	ध	नध	ऽ	न	न	सं	सं	सं	ऽ	सं
लो	०	क	लो	०	क	भु	लु	क	शो	०	क
सं	रं	रं	रं	रं	सं	सं	रं	न	सं	ऽ	ऽ
ख	ण्	ड	न	क	र	मो	०	०	ह	०	०
सं	गं	गं	रीं	गं	ऽ	गंरीं	मं	गं	गंरं	ऽ	सं
उ	०	ज्ज्व	ल	हो	क	ज्ञा०	०	न	सू	०	र्य
न	नगं	गं	रं	ऽ	सं	संन	संरंसं (3)	नसं	नध	ऽ	ऽ
उ	द	य	स	०	मा	रो	०००	००	ह०	०	०
ध	सं	सं	सं	रं	सं	न	सं	न	ध	ध	प
प्रा	०	ण	ल	भु	क	स	क	ल	भु	व	न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	पन	न	ध	ध	प	मप	प	म	ऽ	ऽ	ऽ
न	य॰	न	ल	भु	क	अ॰	न्	ध	॰	॰	॰
स	ऽ	री	ग	ऽ	ऽ	री	ऽ	ग	म	ऽ	प
शा	॰	न्त	हे	॰	॰	मु	॰	क्त	हे	॰	॰
$^{\text{प}}$म	न	न	ध	ध	प	म	प	$^{\text{प}}$म	ऽ	ऽ	ऽ
हे	॰	अ	न	न्	त	पु	॰	ण्य	॰	॰	॰
म	प	$^{\text{प}}$म	न	ध	प	म	पम	ग	री	ग	ग
क	रु	णा	॰	ध	न	ध	र॰	णी	॰	त	ल
म	म	म	स	र	ग	र	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ
क	र	क	ल	॰	ङ्क	शू	॰	न्य	॰	॰	॰
स	ध	ध	ध	प	प	प	पन	ध	ध	प	ग
क्र	न्	द	न	म	य	नि	खि॰	ल	हृ	द	य
प	न	न	ध	ध	प	मप	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ
ता	॰	प	द	ह्	न	दी॰	॰	प्त	॰	॰	॰
प	पन	न	ध	ध	प	मप	ऽ	म	ग	री	ग
वि	ष	य	वि	ष	वि	का॰	॰	र	जी	॰	र्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	ऽ	म	स	र	ग	गर	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ
खि	०	न्न	म्र	प	रि	तृ	०	प्त	०	०	०
धं	ऽ	ध	धन	ध	नं	न	सं	सं	सं	सं	सं
दे	०	श	दे०	०	शं	प	रि	ल	तिं	ल	क
सं	रं	रं	रं	सं	सं	संरं	न	ऽ	सं	ऽ	ऽ
र	क्	त	क	लु	ष	ग्ला	०	०	नि	०	०
सं	गं	गं	ऽ	गंरीं	गं	रीं	मं	मंगं	रं	ऽ	सं
त	व	म	०	ङ्ग०	ल	श	०	ह्व	आ	०	न
न	नगं	गं	ऽ	रं	सं	संन	संरंसं (3)	नसं	नध	ऽ	ऽ
त	व०	द	०	क्षि	ण	पा	०००	००	णि०	०	०
ध	सं	सं	सं	संरं	सं	संन	सं	न	ध	ऽ	प
त	व	शु	भ	सं०	०	गी	०	त	रा	०	ग
प	पन	न	न	ध	प	पम	प	म	ऽ	ऽ	ऽ
त	व०	सु	न्	द	र	छ	न्	द	०	०	०
स	ऽ	री	ग	ऽ	ऽ	री	ऽ	ग	म	ऽ	प
शा	०	न्त	हे	०	०	मु	०	क्त	हे	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पम	न	न	नध	ध	प	म	प	पम	ऽ	ऽ	ऽ
हे	अ	०	न्	न	त	पु	०	ण्य	०	०	०

म	प	पम	न	ध	प	म	पम	ग	री	ग	ग
क	रु	णा	०	ध	न	ध	र ०	णी	०	त	ल

म	म	म	स	र	ग	गर	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ
क	र	क	लं	०	क	शू	०	न्य	०	०	०

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

40—नृत्येर ताले ताले

नृत्येर ताले ताले नटराज, घुचाओ सकल बन्ध हे ।
सुप्ति भाङाओ, चित्ते जागाओ मुक्त सुरेर छन्द हे ।।
तोमार चरण-पवन-परशे सरस्वतीर मानस-सरसे
युगे युगे काले काले सुरे सुरे ताले ताले
ढेउ तुले दाओ, मातिये जागाओ अमल कमलगन्ध हे ।।
नमो नमो नमो—
तोमार नृत्य अमित वित्त भरुक चित्त मम ।।
नृत्ये तोमार मुक्तिर रूप, नृत्ये तोमार माया,
विश्वतनुते अणुते अणुते काँपे नृत्येर छाया ।
तोमार विश्व-नाचेर दोलाय बाँधन पराय, बाँधन खोलाय,
युगे युगे काले काले सुरे सुरे ताले ताले
अन्त के तार सन्धान पाय भाविते लगाय धन्द हे ।।
नमो नमो नमो—
तोमार नृत्य अमित वित्त भरुक चित्त मम ।।
नृत्येर वशे सुन्दर हल विद्रोही परमाणु
पदयुग घिरे ज्योतिमञ्जीरे बाजिल चन्द्र भानु ।
तव नृत्येर प्राणवेदनाय विवश विश्व जागे चेतनाय,
युगे युगे काले काले सुरे सुरे ताले ताले,
सुखे दुखे हय तरङ्गमय तोमार परमानन्द हे ।।
नमो नमो नमो—
तोमार नृत्य अमित वित्त भरुक चित्त मम ।।
मोर संसारे ताण्डव तव कम्पित जटाजाले ।
लोके लोके घुरे एसेछि तोमार नाचेर घूर्णिताले ।
ओगो सन्न्यासी, ओगो सुन्दर, ओगो शंकर, हे भयंकर,
युगे युगे काले काले सुरे सुरे ताले ताले
जीबन-मरण-नाचेर डमरू बाजाओ जलदमन्द्र हे ।।
नमो नमो नमो—
तोमर नृत्य अमित वित्त भरुक चित्त मम ।।

(स्वरलिपि अगले पृष्ठ पर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

ताल दादरा

निषाद - अति कोमल

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - कोमल **गा** *और तीव्र* **ने**

(अ[1]) दादरा— द्रुत लय (मम=150 मात्रा)

प	ऽ	पसं	न	ध	प	प	प	ऽ	प	ध	न
नृ	०	त्ये	र	ता	ले	ता	ले	०	०	०	०
नप	सं	संन	ध	प	ध	धप	ऽ	पसं	न	ध	प
०	०	न	ट	रा	ज	नृ	०	त्ये०	र	ता	ले
प	प	ऽ	ऽ	ऽ	ग	म	ध	ध	न	सं	सं
ता	ले	०	०	०	०	घु	चा	ओ	घु	चा	ओ
ध	संन	न	ध	प	प	पग	ऽ	म	ग	म	प
घु	चा०	ओ	स	क	ल	व	०	न्ध	हे	०	०
ध	न	सं	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	पसं	न	ध	प
०	०	०	०	०	०	नृ	०	त्ये०	र	ता	ले
प	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ने	ने	ने	ने	ने
ता	ले	०	०	०	०	सु	प्	ति	भा	ङ	ओ
ने	ऽ	सं	संने	सं	ऽ	न	सं	संन	ध	प	म
चि	०	ते	जा	गा	०	०	०	०	०	०	ओ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मग	ऽ	म	ग	म	म	मप	प	प	ग	म	प
मु	०	क्त	सु	रे	र	छ०	न्	द	हे	०	०
ध	न	सं	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	पसं	न	ध	प
०	०	०	०	०	०	नृ	०	त्ये०	र	ता	ले
प	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पम	ऽ	न	नध	ऽ	ने
ता	ले	०	०	०	०	तो	०	०	मा	०	र
ने	ने	ने	नेसं	सं	रंसं	संने	ने	सं	ऽ	ऽ	ऽ
च	र	ण	प०	व०	न०	प	र	शे	०	०	०
पने	ने	ऽ	ने	सं	सं	संने	नेरं	रंसं	न	ध	नध
स०	र	०	स्व	ती	र	मा०	न०	स	स	र	से०
मग	म	ऽ	ग	म	ऽ	मग	म	ऽ	ग	म	ऽ
यु	गे	०	यु	गे	०	का	ले	०	का	ले	०
ग	म	ऽ	प	प	ऽ	पग	म	ऽ	प	ध	ऽ
सु	रे	०	सु	रे	०	ता	ले	०	ता	ले	०
धसं	सं	मं	मंगं	मं	गं	गंरं	गां	गांरं	संने	सं	सं
ढे०	उ	तु	ले	दा	ओ	मा	ति	ये	जा०	गा	ओ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संने	नेरं	रंसं	न	ध	प	पग	ऽ	म	ग	म	प
अ ०	म ०	ल	क	म	ल	ग	०	न्ध	हे	०	०

ध	न	सं	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	पसं	संन	ध	प
०	०	०	०	०	०	नृ	०	त्ये ०	र	ता	ले

प	प	ऽ	प	ध	न	नप	सं	संन	ध	प	ध
ता	ले	०	०	०	०	०	०	न	ट	रा	ज

धप	ऽ	पसं	संन	ध	प	प	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नृ	०	त्ये ०	र	ता	ले	ता	ले	०	०	०	०

(ब) दादरा— मध्य लय (मम=114 मात्रा)

प	ध	ऽ	ऽ	ऽ	पम	म	प	ऽ	ऽ	ऽ	मग
न	मो	०	०	०	० ०	न	मो	०	०	०	० ०

ग	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मध	ध	ध	ध	ऽ	ध
न	मो	०	०	०	०	तो ०	मा	र	नृ	०	त्य

ध	न	नरं	सं	न	न	ध	न	ध	प	ऽ	धन
अ	मि	त ०	वि	०	त्त	भ	रू	क	चि	त्त	० ०

न	ध	ऽ	ऽ	ऽ	ने	ने	ने	ने	ने	ऽ	सं
म	म	०	०	०	०	भ	रू	क	चि	०	त्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने	रेंसं	ऽ	ऽ	प	ने	ने	ने	ने	ने	ऽ	सं
म	म	०	०	०	०	भ	रु	क	चि	०	त्त

ने	रेंसं	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	ध	ऽ	ऽ	ऽ	पध
म	म	०	०	०	०	न	मो	०	०	०	००

म	प	ऽ	ऽ	ऽ	मग	ग	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	मो	०	०	०	००	न	मो	०	०	०	०

(स) ताल (2+4) द्रुत लय (मम=276 मात्रा)

म	ऽ	ध	ऽ	न	ऽ	नसं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नध
नृ	०	त्ये	०	तो	०	मा०	०	०	०	०	०र

ध	ऽ	धसं	ऽ	न	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
मु	०	क्ति०	०	र	०	रू	०	०	०	०	प

प	ऽ	प	न	नध	ऽ	धप	ऽ	म	ग	ऽ	म
नृ	०	त्ये	०	तो	०	मा	०	र	मा	०	०

प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ने	ने	ऽ	ने	ऽ
या	०	०	०	०	०	वि	०	श्व	०	त	०

ने	ऽ	ने	प	ने	ऽ	ने	ऽ	नेसं	ऽ	सं	ऽ
नु	०	ते	०	भ्र	०	गु	०	ते०	०	भ्र	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सं	ऽ	ने	सं	ऽ	ऽ	प	ध	न	रं	रंसं	ऽ
णु	०	०	ते	०	०	कां	०	पे	नृ	०	०
संन	ऽ	ध	संन	ऽ	ध	पध	न	नध	प	ऽ	ऽ
त्ये	०	०	र०	०	०	छा०	०	०	या	०	०
प	ऽ	प	सं	संन	ऽ	मध	ऽ	प	मग	ऽ	म
नृ	०	त्ये	०	तो०	०	मा०	०	र	मा	०	०
प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	म	न	नध	ऽ
या	०	०	०	०	०	तो	०	मा	र	वि	०
ध	ऽ	ध	ऽ	ध	ने	ने	ऽ	सं	रंसं	संने	ऽ
द्व	०	ना	०	चे	र	दो	०	ला	य०	दो	०
सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं	प	ने	ने	ने	ने	ऽ
ला	०	०	०	०	य	बां	०	ध	न	प	०
नेसं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सं	सं	ने	सं	रं	रंसं	ऽ
रा०	०	०	०	०	य	बां	०	ध	न	खो	०
न	ध	ध	प	म	प	पग	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ
ला	य	यु	०	गे	०	यु	०	०	गे	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

S	S	प	ध	धप	S	मग	S	S	म	S	S
०	०	का	०	ले	०	का०	०	०	०	ले	०
S	S	मग	S	म	S	मप	S	S	प	S	S
०	०	सु	०	रे	०	सु०	०	०	रे	०	०
S	S	प	S	ध	न	नप	S	धन	नध	S	S
०	०	ता	०	ले	०	ता	०	००	ले	०	०
सं	सं	सं	मं	मं	गं	गं	S	S	S	S	S
अ	न्	त	०	के	०	ता	०	०	०	०	०
गं	गं	गंमं	S	मं	गं	रंसं	S	नें	सं	S	सं
स	न	धा०	०	न	०	पा०	०	०	०	०	०
सं	नें	सं	रं	रंसं	S	न	S	ध	प	S	प
भा	०	वि	०	ते	०	ल	०	०	गा	०	य
पग	S	S	म	S	S	ग	म	प	ध	न	सं
ध	०	०	न्द	०	०	हे	०	०	०	०	०

(अ²) दादरा— मध्य लय (मम=114 मात्रा)

प	S	पसं	संन	ध	प	प	प	S	प	ध	न
नृ	०	त्ये०	र	ता	ले	ता	ले	०	०	०	०

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नप	सं	संन	ध	प	ध	धप	ऽ	पसं	न	ध	प
०	०	न	ट	रा	ज	नृ	०	त्ये०	र	ता	ले

(ब²) दादरा— मध्यलय (मम=114 मात्रा)

प	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ध	ऽ	ऽ	ऽ	पम
ता	ले	०	०	०	०	न	मो	०	०	०	००

म	प	ऽ	ऽ	ऽ	मग	ग	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	मो	०	०	०	००	न	मो	०	०	०	०

मध	ध	ध	ध	ऽ	ध	ध	न	नरं	सं	न	न
तो०	मा	र	नृ	०	त्य	अ	मि	त०	वि	०	त्त

ध	न	ध	प	ऽ	धन	न	ध	ऽ	ऽ	ऽ	ने
भ	रु	क	चि	०	त्त०	म	म	०	०	०	०

ने	ने	ने	ने	ऽ	सं	ने	रंसं	ऽ	ऽ	प	ने
भ	रु	क	चि	त्त	०	म	म	०	०	०	०

ने	ने	ने	ने	ऽ	सं	ने	रंसं	ऽ	ऽ	ऽ	प
भ	रु	क	चि	०	त्त	म	म	०	०	०	०

प	ध	ऽ	ऽ	ऽ	पम	म	प	ऽ	ऽ	ऽ	मग
न	मो	०	०	०	००	न	मो	०	०	०	००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	मो	०	०	०	०

(द) कहरवा—द्रुत लय (मम=272 मात्रा)

सम	ऽ	म	म	म	ऽ	म	ऽ	म	प	प	प	प	ऽ	म	ग
नृ०	०	त्ये	र	व	०	शे	०	सु	न्	द	र	ह	०	ल	०

म	ध	ध	ध	ध	ऽ	ध	न	नप	ऽऽधन	ध	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
वि	०	द्रो	ही	प	०	र	०	मा	००००	णु	०	०	०	०	०

न	न	न	न	न	ऽ	न	ऽ	न	सं	सं	सं	सं	नें	सं	ऽ
प	द	यु	ग	घि	०	रे	०	ज्यो	ति	म	न्	जी	०	रे	०

न	रं	रं	गां	गांरं	ऽ	सं	रंसं	संनें	ऽ	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
वा	जि	ल	०	च	०	न्द्र	० ०	भा	०	नु	०	०	०	०	०

म	ध	ध	ऽ	ध	ऽ	ध	नें	नें	सं	रंसं	संनें	नेंसं	ऽ	ऽ	सं
त	व	नृ	०	त्ये	०	र	०	प्रा	ण	वे०	द	ना०	०	०	य

न	नरं	रं	गां	गांरं	ऽ	सं	ऽ	संनें	रं	सं	न	ध	ऽ	ऽ	प
वि	व०	श	०	वि	०	श्व	०	जा	गे	चे	त	ना	०	०	य

मग	ऽ	म	ऽ	मग	ऽ	म	ऽ	मग	ऽ	म	ऽ	मग	ऽ	म	ऽ
यु	०	गे	०	यु	०	गे	०	का	०	ले	०	का	०	ले	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मग	म	प	प	प	ध	न	सं	सं	संगं	गं	गं	गं	गं	गं	ऽ
सु	रे	सु	रे	ता	ले	ता	ले	सु	खे०	दु	खे	ह	य	त	०

गं	मं	मं	गं	रंसं	ने	सं	सं	संने	रं	रंसं	सं	संन	ध	प	ऽ
रं	०	ग	ऽ	म०	०	०	य	तो	०	मा	र	प	र	मा	०

मग	ऽ	म	ऽ	ग	म	प	ध
न	०	०	न्द	हे	०	०	०

(अ³) दादरा—द्रुत लय (मम=150 मात्रा)

धप	ऽ	पसं	संन	ध	प	प	प	ऽ	प	ध	न
नृ	०	त्ये०	र	ता	ले	ता	ले	०	०	०	०

नप	सं	संन	ध	प	ध	धप	ऽ	पसं	संन	ध	प
०	०	न	ट	रा	ज	नृ	०	त्ये०	र	ता	ले

(ब³) दादरा—मध्य लय (मम=114 मात्रा)

प	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	ध	ऽ	ऽ	ऽ	पम
ता	ले	०	०	०	०	न	मो	०	०	०	००

म	प	ऽ	ऽ	ऽ	मग	ग	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	मो	०	०	०	००	न	मो	०	०	०	०

मध	ध	ध	ध	ऽ	ध	ध	न	नरं	सं	न	न
तो०	मा	र	नृ	०	त्य	अ	मि	त०	वि	०	त्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	न	ध	प	ऽ	धन	न	ध	ऽ	ऽ	ऽ	ने
भ	रु	क	चि	०	०त	म	म	०	०	०	०

ने	ने	ने	ने	ऽ	सं	ने	रेंसं	ऽ	ऽ	प	ने
भ	रु	क	चि	०	त	म	म	०	०	०	०

ने	ने	ने	ने	ऽ	सं	ने	रेंसं	ऽ	ऽ	ऽ	प
भ	रु	क	चि	त	०	म	म	०	०	०	०

प	ध	ऽ	ऽ	ऽ	पम	म	प	ऽ	ऽ	ऽ	मग
न	मो	०	०	०	००	न	मो	०	०	०	००

ग	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	मो	०	०	०	०

(ए) झपताल (2+3) द्रुत लय (मम=220 मात्रा)

म	ध	ध	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ध	ऽ	ऽ	ध	न	न	ऽ	न	न	ऽ	न	ऽ	ऽ
मो	र	सं	०	०	सा	०	रे	०	०	ता	ए	ड	०	व	त	०	व	०	०

नध	सं	सं	ऽ	सं	संन	ध	संन	ऽ	ध	धप	न	ध	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
क	म्	पि	०	त	टा	०	जा०	०	०	जा	०	ले	०	०	०	०	०	०	०

धने	ऽ	ने	ऽ	ने	ने	ऽ	ने	प	ने	ने	ऽ	सं	ऽ	रेंसं	संने	ऽ	सं	ऽ	सं
लो०	०	के	०	लो	के	०	घु	०	रे	ए	०	से	०	छि०	तो	०	मा	०	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संने रं	रंसं ऽ सं	न ध	संन ऽ ध	धप ऽऽधन	ध ऽ ऽ	ऽ ऽ	ध ऽ न
ना ०	चे ० र	घू ङ्	णि० ० ०	ता००००	ले ० ०	० ०	ओ ० गो

सं गं	गं ऽ गं	ऽ ऽ	गं ऽ मं	गंमं पं	मं गं रंसं	ऽ ऽ	ने ऽ सं
सं न्	न्य ० सी	० ०	ओ ० गो	सु० न्	द ० र०	० ०	ओ ० गो

संने ऽ	नेरं ऽ सं	ऽ ऽ	सं ऽ सं	संन सं	संन ऽ ध	न ध	ध प म
शं ०	क० ० र	० ०	हे ० भ	यं ०	क ० र	० ०	यु ० गे

मग ऽ	म ऽ ऽ	ऽ ऽ	प ध धप	मग ऽ	म ऽ ऽ	ऽ ऽ	मग ऽ म
यु ०	गे ० ०	० ०	का ० ले	का ०	ले ० ०	० ०	सु ० रे

प ऽ	प ऽ ऽ	ऽ ऽ	प ऽ ध	धप ऽऽधन	नध ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ न
सु ०	रे ० ०	० ०	ता ० ले	ता००००	ले ० ०	० ०	० ० ०

सं ऽ	सं मं मं	मंगं ऽ	मं ऽ गं	गंरं ऽ	रं गां गांरं	सं ने	रं ऽ सं
जी ०	व ० न	म ०	र ० ण	ना ०	चे ० र	ड ०	म ० रू

सं ने	ने रं रंसं	सं ने	सं ऽ सं	संग ग	म ऽ ऽ	ग म	प ध न
बा ०	जा ० ओ	ज ०	ल ० द	म न्	द्र ० ०	हे ०	० ० ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अ4) दादरा—द्रुत लय (मम=150 मात्रा)

नप	S	पसं	संन	ध	प	प	प	S	प	ध	न
नृ	०	त्ये०	र	ता	ले	ता	ले	०	०	०	०

नप	सं	संन	ध	प	ध	धप	S	पसं	संन	ध	प
०	०	न	ट	रा	ज	नृ	०	त्ये०	र	ता	ले

(ब4) दादरा—मध्य लय (मम=114 मात्रा)

प	प	S	S	S	S	प	ध	S	S	S	पम
ता	ले	०	०	०	०	न	मो	०	०	०	००

म	प	S	S	S	मग	ग	म	S	S	S	S
न	मो	०	०	०	००	न	मो	०	०	०	०

मध	ध	ध	ध	S	ध	ध	न	नरं	सं	न	न
नो०	मा	र	नृ	०	त्य	अ	मि	त०	वि	त्त	०

ध	न	ध	प	S	धन	न	ध	S	S	S	नें
भ	रु	क	चि	०	त्त०	म	म	०	०	०	०

नें	नें	नें	नें	S	सं	नें	रंसं	S	S	प	नें
भ	रु	क	चि	०	त्त	म	म	०	०	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने	ने	ने	ने	ऽ	सं	ने	ंसं	ऽ	ऽ	ऽ	प
भ	रु	क	चि	०	त	म	म	०	०	०	०

प	ध	ऽ	ऽ	ऽ	पम	म	प	ऽ	ऽ	ऽ	मग
न	मो	०	०	०	००	न	मो	०	०	०	००

ग	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	मो	०	०	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

41—आमरा नूतन यौवनेरइ दूत

आमरा नूतन यौवनेरइ दूत।
आमरा चञ्चल, आमरा अद्भुत।
आमरा बेड़ा भाङि।
आमरा अशोकवनेर राङा नेशाय राङि।
झंझार बन्धन छिन्न करे दिइ—आमरा विद्युत्।।
आमरा करि भुल—
अगाध जले झाँप दिये युझिये पाइ कूल।
येखाने डाक पड़े जीवन-मरण-भड़े
आमरा प्रस्तुत।

ताल—(2+4)

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **मे** *और अति कोमल* **नो**

द्रुत लय (माम=296 मात्रा)

(अ)

ग	म	प	ध	**नो**	सं	नसं	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ
आ	०	०	०	०	म	रा	०	०	०	०	०
प	ध	**नो**	रं	सं	ऽ	**नो**	ध	प	म	ग	रग
नू	०	त	न	यौ	०	व	०	ने	०	रि	०
म	म	०	०	०	०	ग	ग	म	ऽ	ग	ग
दू	त	०	०	०	०	आ	म	रा	०	च	न्
म	म	०	०	०	०	म	म	प	ऽ	म	म
च	ल	०	०	०	०	आ	म्	रा	०	अ	द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ऽ	०	०	०	०	ग	म	प	ध	नो	सं
भु	त	०	०	०	०	आ	०	०	०	०	म्

नसं	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽ	प	ध	नो	रं	सं	ऽ
रा	०	०	०	०	०	नू	०	त	न	यौ	०

नो	ध	स	म	ग	रग	म	म	०	०	०	०
व	०	ने	०	रि	०	ह्न	त	०	०	०	०

(ब)

गम	म	म	ध	ध	न	न	ऽ	न	ऽ	सं	ऽ
आ	म	रा	०	वे	०	ड़ा	०	भा	०	ङि	०

न	न	सं	ऽ	सं	न	रंसं	सं	नो	ध	प	ध
आ	म	रा	०	अ	०	शो	क	व	०	ने	०

नो	रं	रंसं	ऽ	नो	ध	सं	नो	ध	ऽ	प	ऽ
रा	०	ङा	०	ने	०	शा	य	रा	०	ङि	०

नो	रं	सं	ऽ	नो	ऽ	ध	ऽ	प	ऽ	म	ऽ
भ	न्	भा	०	र	०	ब	०	न्ध	०	न	०

ग	ऽ	रस	ऽ	र	ऽ	ग	ऽ	ऽ	म	म	ऽ
छि	०	न्न०	०	क	०	रे	०	०	दि	इ	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	ग	म	ऽ	ग	ऽ	म	म	०	०	०	०
आ	म	रा	०	वि	०	द्यु	त	०	०	०	०
ग	ग	म	ऽ	ग	ग	म	म	०	०	०	०
आ	म	रा	०	च	त्	च	ल	०	०	०	०
म	म	प	ऽ	म	म	प	प	०	०	०	०
आ	म	रा	०	अ	द्	भु	त	०	०	०	०

गाइये (अ) →

(स)

स	स	स	ऽ	र	ऽ	ग	ऽ	म	ऽ	ऽ	म
आ	म	रा	०	क	०	रि	०	भु	०	०	ल
म	ऽ	म	प	प	मे	प	ऽ	ऽ	ऽ	म	ग
अ	०	गा	ध	ज	०	ले	०	०	०	०	०
म	म	ध	ऽ	ध	ऽ	नो	ऽ	सं	ऽ	सं	ऽ
झाँ	प	दि	०	ये	०	यु	०	झि	०	ये	०
ध	सं	नो	ध	प	प	पध	ध	प	ऽ	म	ऽ
पा	इ	कू	०	०	ल	आ०	म	रा	०	क	०
ग	ग	म	ऽ	ऽ	म	म	ऽ	म	ध	ध	त
रि	०	भु	०	०	ल	ये	०	खा	०	ने	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न	न		न	ऽ	सं	ऽ		न	ऽ	सं	ऽ	सं	न
डा	क		प	०	ड़े	०		जी	०	व	०	न	म

रंसं	सं		नो	ध	प	ध		नो	रं	सं	ऽ	नो	नो
र	ग		भ	०	ड़े	०		आ	म	रा	०	प्र	स्

ध	ध		○	○	○	○		गं	ग	म	ऽ	ग	ग
तु	त		०	०	०	०		आ	म	रा	०	च	न्

म	म		○	○	○	○		म	म	प	ऽ	म	म
च	ल		०	०	०	०		आ	म	रा	०	अ	द्

प	प		○	○	○	○
भु	त		०	०	०	०

गाइये (अ) ⟶

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

42—संकोचेर विह्वलता

संकोचेर विह्वलता निजेरे अपमान,
संकटेर कल्पनाते होयो ना म्रियमाण ।
मुक्त करो भय,
आपना—माझे शक्ति धरो, निजेरे करो जय ।।
दुर्बलेरे रक्षा करो, दुर्जनेरे हानो,
निजेरे दीन निःसहाय येन कभु ना जानो ।
मुक्त करो भयः
निजेर 'परे करिते भर ना रेखो संशय ।।
धर्म यबे शङ्खरवे करिबे आह्वान
नीरव हये, नम्र हये, पण करियो प्राण ।
मुक्त करो भय,
दुरूह काजे निजेरइ दियो कठिन परिचय ।।

ताल दादरा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **मे**

द्रुत लय (मम=300 मात्रा)

सं	ऽ	सं	न	ऽ	न	ध	ऽ	ध	धप	प	ऽ
सं	०	को	चे	०	र	वि	०	ह्व	ल	ता	०
स	र	ग	ग	ऽ	र	स	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ
नि	जे	र	अ	०	प	मा	०	न	०	०	०
ग	ऽ	ग	ग	ऽ	ग	ग	ऽ	ग	र	ऽ	स
सं	०	क	टे	०	र	क	०	ल्प	ना	०	ते
स	र	ग	ग	ऽ	र	प	ऽ	प	प	ऽ	ऽ
हो	यो	ना	म्रि	य	०	मा	०	ण	आ	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स	र	ग	मे	प	ध	धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
आ	०	०	०	०	०	हा	०	०	०	०	०

सं	ऽ	सं	सं	न	रं	सं	ऽ	सं	ऽ	ऽ	ऽ
मु	०	क्त	क	०	रो	भ	०	य	०	०	०

सं	गं	गं	रं	ऽ	रं	सं	ऽ	सं	न	ऽ	ध
आ	प	ना	मा	०	झे	श	०	क्ति	ध	०	रो

ध	सं	न	न	ऽ	ध	प	ऽ	प	प	ऽ	ऽ
नि	जे	रे	क	०	रो	ज	०	य	आ	०	०

स	र	ग	मे	प	ध	धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
आ	०	०	०	०	०	हा	०	०	०	०	०

प	ऽ	ग	प	ऽ	ध	प	ऽ	ग	प	ऽ	ध
दु	०	र्ब	ले	०	रे	र	०	क्षा	क	०	रो

पध	ऽ	ध	प	मे	प	प	ध	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
दु०	०	र्ज	ने	०	रे	हा	नो	०	०	०	०

प	न	न	धन	ऽ	न	न	ऽ	ध	ध	ऽ	प
नि	जे	रे	दी०	०	न	निः	०	स	हा	०	य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	न	न	धन	ऽ	न	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ये	न	क	भु	॰	ना	जा	॰	नो	॰	॰	॰

सं	ऽ	सं	सं	न	रं	सं	ऽ	सं	ऽ	ऽ	ऽ
मु	॰	क्त	क	॰	रो	भ	॰	य	॰	॰	॰

सं	गं	गं	रं	ऽ	रं	सं	सं	सं	न	ऽ	सं
नि	जे	र	प	॰	रे	क	रि	ते	भ	॰	र

ध	सं	न	न	ऽ	ध	प	ऽ	र	प	ऽ	ऽ
ना	रे	खो	सं	॰	॰	श	य	॰	आ	॰	॰

स	र	ग	मे	प	ध	धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
आ	॰	॰	॰	॰	॰	हा	॰	॰	॰	॰	॰

प	ऽ	ग	प	मे	ध	प	ऽ	ग	प	मे	ध
ध	॰	र्मं	य	॰	वे	श	॰	ह्वं	र	वे	॰

प	प	ग	प	ऽ	मे	ध	ऽ	ध	ऽ	ऽ	ऽ
क	रि	बे	आ	॰	॰	ह्वा	॰	न	॰	॰	॰

प	ध	न	न	ऽ	न	धन	ऽ	न	नध	ऽ	प
नी	र	व	ह	॰	ये	न॰	॰	अ	ह	॰	ये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	न	न	धन	ऽ	ध	प	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ
प	ए	क	रि॰	॰	यो	प्रा	॰	ण	॰	॰	॰
सं	ऽ	सं	सं	न	रं	सं	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
मु	॰	क्त	क	॰	रो	भ	य	॰	॰	॰	॰
सं	गं	गं	रं	ऽ	रं	सं	सं	सं	न	ऽ	ध
दु	रू	ह	का	॰	जे	नि	जे	रि	दि	॰	यो
ध	सं	न	न	ऽ	ध	प	ऽ	प	प	ऽ	ऽ
क	ठि	न	प	॰	रि	च	॰	य	आ	॰	॰
स	र	ग	मे	प	ध	धप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
आ	॰	॰	॰	॰	॰	हा	॰	॰	॰	॰	॰

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

43—नमो यन्त्र नमो यन्त्र

नमो यन्त्र, नमो — यन्त्र, नमो— यन्त्र, नमो — यन्त्र ।
तुमि चक्रमुखरमन्द्रित, तुमि वज्रवह्निवन्दित,
तव वस्तुविश्ववक्षदंश ध्वंसविकट दन्त ।
तव दीप्त - अग्नि - शत - शतघ्नी - विघ्नविजय पन्थ ।
तव लौहगलन शैलदलन अचलचलन मन्त्र ।।
कभु काष्ठलोष्ट्र - इष्टक - दृढ़ घनपिनद्ध काया,
कभु भूतल - जल - अन्तरिक्ष - लङ्घन लघु माया ।
तव खनि - खनित्र - नख - विदीर्ण क्षिति विकीर्ण - अन्त्र,
तव पञ्चभूतबन्धनकर इन्द्रजालतन्त्र ।।

ताल दादरा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर तीव्र - **मे**

द्रुत लय (मम=240 मात्रा)

स	स	र
न	मो	०

(अ)

ग	ग	ग	ग	ग	ऽ	ग	ग	ग	म	म	ऽ
य	न्	त्र	न	मो	०	य	न्	त्र	न	मो	०

म	म	म	म	मग	प	प	प	ग	ऽ	ग	ग
य	न्	त्र	न	मो०	०	य	न्	त्र	०	तु	मि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ऽ	प	प	प	प	प	प	प	प	प	प
च	॰	क्र	मु	ख	र	म	न्	द्रि	त	तु	मि
प	ऽ	प	प	ऽ	मे	प	प	प	प	प	प
व	॰	ज्र	व	॰	ह्नि	व	न्	दि	त	त	व
सं	ऽ	सं	न	ऽ	न	ध	ऽ	ध	प	ऽ	प
व	॰	स्तु	वि	॰	श्व	व	॰	क्ष	दं	॰	ग
ध	ऽ	ध	प	प	प	म	ऽ	ग	स	स	र
ध्वं	॰	स	वि	क	ट	द	॰	न्त	न	मो	॰
ग	ग	ग	ग	ग	ऽ	ग	ग	ग	म	म	ऽ
य	न्	त्र	न	मो	॰	या	न्	त्र	न	मो	॰
म	म	म	म	मग	प	प	प	ग	ऽ (ब)	प	प
य	न्	त्र	न	मो॰	॰	य	न्	त्र	॰	त	व
ध	ऽ	न	सं	ऽ	रं	सं	न	सं	ध	ऽ	प
दी	॰	प्त	अ	॰	ग्नि	श	त	श	त	॰	घ्नी
ध	ध	प	ध	ध	प	ध	ध	प	ऽ	प	प
वि	घ्	न	वि	ज	य	प	न्	थ	॰	त	व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सं	ऽ	सं	न	न	न	ध	ऽ	ध	प	ध	प
लौ	०	ह	ग	ल	न	शै	०	ल	द	ल	न

ध	ध	ध	प	प	प	म	म	ग	स	स	र
अ	च	ल	च	ल	न	म	न्	त्र	न	मो	०

गाइये (अ) →

(स)

प	प
क	भु

प	ऽ	ग	प	ऽ	प	प	ऽ	प	ध	प	ध
का	०	ष्ट	लो	०	ष्ट्र	इ	०	ष्ट	क	दृ	ढ़

सं	सं	सं	सं	ऽ	सं	सं	ऽ	न	रेंसं	सं	सं
ध	न	पि	न	०	द्ध	का	०	०	या	क	भु

गं	ऽ	गं	गं	रें	रें	सं	ऽ	सं	न	ऽ	न
भू	०	त	ल	ज	ल	अ	०	न्त	री	०	क्ष

सं	ऽ	सं	सं	न	न	धन	ऽ	ऽ	धप	प	प
लं	०	ङ्घ	न	ल	घु	मा०		०	या	त	व

प	न	ध	न	ऽ	प	प	ध	प	न	ऽ	प
ख	नि	ख	नि		त्र	न	ख	चि	दी	०	र्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	न	ध	न	ऽ	न	ध	ऽ	प	ऽ	प	प
क्षि	ति	त्रि	की	०	र्णं	अ	०	न्त्र	०	त	व

सं	ऽ	सं	न	ऽ	न	ध	ऽ	ध	ध	प	प
पं	०	ञ्च	०	भू	त	ब	०	न्ध	न	क	र

ध	ऽ	ध	प	ऽ	प	म	ऽ	ग	स	स	र
इ	०	न्द्र	जा	०	ल	त	०	न्त्र	नु	मो	०

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

44—हे चिर नूतन

हे चिरनूतन, आजि ए दिनेर प्रथम गाने
जीवन आमार उठुक विकाशि तोमारि पाने ।।
तोमार वाणीते सीमाहीन आशा, चिरदिवसेर प्राणमयी भाषा—
क्षयहीन धन भरि देय मन तोमार हातेर दानें ।।
ए शुभलग्ने जागुक गगने अमृतवायु,
आनुक जीवने नवजनमेर अमल आयु ।
जीर्ण या-किछु, याहा-किछु क्षीण नवीनेर माझे होक ता विलीन
धुये याक यत पुरानो मलिन नव-आलोकेर स्नाने ।।

ताल कहरवा

रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद - कोमल ।

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र तर **री** *और तीव्र* **गे**

द्रुत लय (मम=124 मात्रा)

(अ)

स	ध	ध	ध	ध	प	प	प	प	ऽ	प	ग	प	ध	न	नप
हे	॰	चि	र	नू	त	॰	न	आ	जि	॰	ए	दि	ने	र	प्र
पन	नध	ध	प	मग	ऽ	ऽ	ऽ	म	प	ध	न	धन	ऽ	ऽ	ग
थ॰	म	गा	॰	ने॰	॰	॰	॰	जी	व	न	आ	मा	॰	॰	र
म	प	ध	न	धन	ऽ	मग	ऽ	रीग	मं	म	म	ग	र	स	ऽ
उ	ठु	क	वि	का	॰	शि॰	॰	तो॰	॰	मा	रि	पा	॰	ने	॰

(ब)

स	ध	ध	ध	ध	प	प	प	ध	ध	न	सं	सं	न	संरं	ऽ
हे	॰	चि	र	नू	॰	त	न	तो	मा	र	वा	णी	॰	ते॰	॰

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| ऽ ऽ सं न | सं ऽ ऽ ऽ | ध ध नं सं | सं न संगं ग |
| ० ० ० ० | ० ० ० ० | तो मा र वा | णी ० ते० ० |

| गं गं रं रं | सं न सं ऽ | ध गं गं गंरीं | रींमं ऽ गं गं |
| सी मा ही न | आ ० शा ० | चि र दि व० | से० ० ० र |

| गंरीं मं गं रं | सं न सं ऽ || ध गं गं रं | रं रं सं सं |
| प्रा० ण म यी | भा ० षा ० || क्ष य ही न | ध न भ रि |

| धन प न ध | प ऽ ऽ प | प न न सं | नध ध ध ऽ |
| दे० ० ० य | म ० ० न | तो मा र हा | ते र दा ० |

| प मगे म ऽगे | म न न ध | ध प प प | ऽ ऽ ऽ ऽ |
| ने ०० ० ०० | हे ० चि र | नू ० त न | ० ० ० ० |

(स)

|| स र ग म | म म मप ऽ | प ऽ प प | प प पध ऽ |
|| ए ० शु भ | ल ग ने० ० | जा ० गु क | ग ग ने० ० |

| प न न ध | ध ऽ प ऽ | म ध ध ध | धप ध पसं ऽ |
| अ मृ त ० | वा ० यु ० | आ ० नु क | जी० व ने० ० |

| न नरें रं सं | न ध प प | मप ग ग मग | गर ऽ स ऽ ||
| न व० ज न | मे ० ० र | अ० म ल ०० | आ० ० यु ० ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(द)

सध	ऽ	ऽ	ध	न	ऽ	सं	संरं	न	गं	रं	रं	सं	ऽ	ऽ	सं
जी॰	॰	॰	णं	या	॰	कि	छु॰	या	हा	कि	छु	क्षी	॰	॰	ण

ध	गं	गं	गं	गं	रीं	मं	ऽ	गंमं	गं	गं	रं	सं	ऽ	ऽ	सं
न	वी	ने	र	मा	॰	झे	॰	हो॰	क	ता	वि	ली	॰	॰	न

ध	गं	गं	रं	रं	ऽ	सं	ऽरं	न	सं	रं	सं	न	ऽ	ध	प
धु	ये	या	क	य	॰	त	॰॰	पु	रा	नो	म	लि	॰	॰	न

प	सं	सं	न	न	ध	ध	प	प	ऽ	ऽ	ऽ	गे	म	गें	मगे
न	व	आ	लो	के	र	स्ना	॰	ने	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰॰

म	न	न	ध	ध	प	प	प
हे	॰	चि	र	नू	॰	त	न

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

45—शुभ कर्म पथे धर'

शुभ कर्मपथे धर' निर्भय गान।
सब दुर्बल संशय होक अवसान॥
चिर— शक्तिर निर्झर नित्य झरे
लह' से अभिषेक ललाट—' परे।
तव जाग्रत निर्मल नूतन प्राण—
त्यागव्रते निक दीक्षा,
विघ्न हते निक शिक्षा—
निष्ठुर संकट दिक सम्मान।
दुःखई होक तव वित्त महान।
चल' यात्री, चल' दिनरात्री—
कर' अमृतलोक-पथ अनुसन्धान।
जड़तातामस हओ उत्तीर्ण,
क्लान्तिजाल कर' दीर्ण विदीर्ण—
दिन-अन्ते अपराजित चित्ते
मृत्युतरण तीर्थे कर' स्नान॥

ताल कहरवा

गंधार और निषाद - अति कोमल, रिषभ तीव्र

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **ने**

द्रुत लय (मम=240 मात्रा)

(अ)

सं	रं
शु	भ

न	सं	न	ध	प	ऽध	म	प	र	म	ग	र	स	स	म	म
क	र्	म	प	थे	•़	ध	र	नि	र्	भ	य	गा	न	स	ब

म	प	प	प	मप	ऽ	प	प	म	प	पम	पम	प	सं	सं	रं
दु	र्	ब	ल	सं	०	श	य	हो	क	अ०	व०	सा	न	शु	भ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न स न ध	म ऽध म प	र म ग र	स स म म
क र् मं प	थे ०० थ र	निं र् भ य	गा न चि र

म ऽ पं प	न पं नें नें	नें सं सं नें	सं ऽ सं सं
श ० क्ति र	निं र् झ र	निं ० त्य झ	रे ० ल ह

नें सं संनें संनें	सं रं रंसं रं	मं गं गंमं गंमं	रं ऽ सं सं
से ० ग्र० भि०	षे ० क० ल	ला ० ट० प०	रे ० त व

सं रं सं सं	सं न न न	धन ऽ ध ध	प ऽ ऽ प
जा ० ग्र त	नि र् मं ल	नूं० ० त न	प्रा ० ० ण

पं न न न	न ऽ न न	ध ध प ऽ	ऽ ऽ न ऽ
त्या ० ग व्रं	तें ० नि क	दीं ० क्षा ०	० ० ० ०

प नं नं न	न ऽ न न	ध ऽ पं ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
वि ० घ्न ह	ते ० नि कं	शिं ० क्षां ०	० ० ० ०

सं ऽ सं सं	नं ऽ धं पं	प ध मं प	म ग ऽ रस
नि ० ष्ठु र	सं ० कं टं	दि कं स ०	म्मा ० ० न०

संग ऽ ग ग	सग ग ग रंस	सर ऽ र सनें	स ऽ ऽ स
दु ० ख इ	हो क तं व०	वि ० त्त मं०	हा ० ० न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ब)

|| स स स ऽ | र ऽ र र | र र रस र | म ग ग ग |
|| च ल या ० | त्री ० च ल | दि न रा० ० | त्रि ० क र |

| ग गम म म | र र र स | र र र सने | स स स स || स ऽ ऽ स |
| अ मृ० त लो | ० क प थ | अ नु स ०न् | धा न च ल || धा० ० न |

| म प प ऽ | न प ने ने | ने सं सं रं | ने ऽ सं ऽ |
| ज ड़ ता ० | ता ० म स | ह ओ उ ० | ती ० णं ० |

| ने सं सं सं | रं रं रं रं | संरं सं रं रं | मंगं ऽ गं ऽ |
| क्ला ० न्ति जा | ० ल क र | दी० णं वि ० | दी ० णं ० |

| गं गंमं म ऽ | रं ऽ सं सं | संरं ऽ सं सं | सं ऽ न ऽ |
| दि न० अ ० | न्ते ० अ प | रा ० जि त | चि ० ते ० |

| न सं सं सं | सं सं न ऽ | धन ऽ ध ध | प प
| मृ ० त्यु त | र णा ती ० | र्थे ० क र | स्ना न

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

46—एसो हे गृहदेवता

एसो हे गृहदेवता।
ए भवन पुण्यप्रभावे करो पवित्र ॥
विराजो जननी, सबार जीवन भरि—
देखाओ आदर्श महान चरित्र ॥
शिखाओ करिते क्षमा, करो हे क्षमा,
जागाये राखो मने तव उपमा,
देहो धैर्यं हृदये—
सुखे दुखे संकटे अटल चित्त ॥
देखाओ रजनी - दिवा विमल विभा,
वितरो पुरजने शुभ्र प्रतिभा—
नव शोभाकिरणे
करो गृह सुन्दर रम्य विचित्र ॥
सबे करो प्रेमदान पूरिया प्राण—
भुलाये राखो सखा, आत्माभिमान।
सब वैर हवे दूर
तोमारे वरण करि जीवनमित्र ॥

आनन्द भैरवी, ताल कहरवा

गंधार, धैवत और निषाद - कोमल।

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **गे** *तीव्र* **धे** *और तीव्र* **ने**

द्रुत लय (मम=192 मात्रा)

(अ)

स	मग	ऽ	र	ग	प	म	ध	मप	ऽ	ऽ	ऽ	ध	प	म	गे
ए	सो	०	हे	गृ	ह	दे	व	ता	०	०	०	ए	भ	व	न

म	गे	म	गे	मगे	प	म	गर	स	ऽ	ऽ	ऽ	स	सरस	नध	न
पु	०	ण्य	प्र	भा०	०	वे	क०	रो	०	०	०	प	वि०	००	त्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स मग ऽ र	ग प न ध	मप ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ए सो ० हे	गृ ह दे व	ता ० ० ०	० ० ० ०

(ब)

म प ऽ प	ने ने सं ऽ	सं नेसं मं गं	रं संरं ने ने
वि रा ० जो	ज न नी ०	स वा० ० र	जी व० न भ

सं ऽ ऽ ऽ	म प ऽ प	ने ने सं ऽ	ने नेसं मं गं
रि ० ० ०	वि रा ० जो	ज न नी ०	स वा० ० र

सं संरं ने ने	सं ऽ ऽ ऽ	प सं ऽ नो	धे प ऽ म
जी व० न भ	रि ० ० ०	दे खा ० ओ	आ द ० र्श

(स)

ग म ऽ ग	र मर ऽ नृ	प प ऽ प	पध प म गे
म हा ० न	च रि ० त्र	शि खा ० ओ	क रि ते क्ष

←--- गाइये (अ)

म ऽ ऽ ऽ	मपम गर ग र	प प ऽ प	पध प ग गे
मा ० ० ०	हे० ०० ० ०	शि खा ० ओ	क रि ते क्ष

म ऽ ऽ ऽ	मप मपम(3) ग र	मग ऽ ऽ ऽ	गप मपम(3) ग र
मा ० ० ०	क रो०० हे क्ष	मा ० ० ०	क रो०० हे क्ष

मग ऽ ऽ ऽ	ग म प ग	म ऽ प म	र म र स
मा ० ० ०	जा गा ये रा	खो ० म ने	त ब उ प

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नॆ स ऽ ऽ	ऩ स ग म	प नें नें नें	सं ऽ ऽ नें
मां ० ० ०	दे हो धै र्	य ० ह द	ये ० ० सु

सं मं गं रं	सं ऽ न धे	प ऽ म गर	मग ऽ ऽर सऩ
खे ० दु खे	सं ० क टे	अ ० ट ल०	चि ० ०० त्त०

गाइये (अ) →

(द)

प प ऽ प	पध प म गे	म ऽ ऽ ऽ	मपम गर ग र
दे खा ० ओ	र ज नी दि	वा ० ० ०	हे० ०० ० ०

प प ऽ प	पध प म गे	म ऽ ऽ ऽ	मप मपम (3) ग र
दे खा ० ओ	र ज नी दि	वा ० ० ०	वि म०० ल वि

मग ऽ ऽ ऽ	गप मपम (3) ग र	मग ऽ ऽ ऽ	ग म प ग
भा ० ० ०	वि म०० ल वि	भा ० ० ०	वि त रो पु

म ऽ प म	र म र स	नॆ स ऽ ऽ	ऩ स ग म
र ० ज ने	शु ० भ्र प्र	तिं भा ० ०	न व शो ०

प नें नें नें	सं ऽ ऽ नें	सं मं गं रं	सं ऽ न धे
भा ० कि र	णे ० ० क	रो ० गृ ह	सु न् द र

(ए)

प ऽ म गर	मग ऽ ऽर सऩ	प प ऽ ऽ	पध प म गे
र ० म्य वि०	चि ० ०० ०त्र	स बे ० ०	क रो प्रे म

← गाइये (अ)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म	ऽ	ऽ	म	^मपम	गर	ग	र	प	प	ऽ	ऽ	^पध	प	म	गे
दा	०	०	न	है०	००	०	०	स	बे	०	०	क	रो	प्रे	म

म	ऽ	ऽ	म	^मप	मपम (3)	ग	र	^मग	ऽ	ऽ	ग	^गप	मपम (3)	ग	र
दा	०	०	न	पु	०००	रि	या	प्रा	०	०	ण	पु	०००	रि	या

^मग	ऽ	ऽ	ग	ग	म	प	ग	म	ऽ	प	म	र	म	र	स
प्रा	०	०	ण	भ्रु	ला	ये	रा	खो	०	स	खा	आ	०	त्मा	भि

ऩे	स	ऽ	ऽ	ऩ	स	ग	म	प	ने	ने	ने	सं	ऽ	ऽ	ने
मा	न	०	०	स	ब	बै	०	र	०	ह	बे	दूर	०	०	तो

सं	मं	गं	रं	सं	सं	न	धे	प	ऽ	म	गर	^मग	ऽ	ऽर	सऩ
मा	०	रे	व	र	ण	क	रि	जी	०	व	न०	मि	०	००	त्र०

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

47—आय आमादेर अङ्गने

आय आमादेर अङ्गने अतिथि बालक तरुदल—
मानवेर स्नेहसङ्ग ने, चल् आमादेर घरे चल् ।।
श्याम वङ्किम भङ्गिते चञ्चल कलसंगीते
द्वारे निये आय शाखाय शाखाय प्राण-आनन्द-कोलाहल ।।
तोदेर नवीन पल्लवे नाचुक आलोक सवितार,
दे पवने वनवल्लभे मर्मरगीत-उपहार ।
आजि श्रावणेर वर्षणे आशीर्वादेर स्पर्श ने,
पड़ुक माथाय पाताय पाताय अमरावतीर धाराजल ।।

ताल दादरा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **मे** *और अति कोमल* **नो**

द्रुत लय (मम=180 मात्रा)

(अ[1])

न	सं	ऽ	नो	ध	प	प	रं	ंसं	नो	ध	प
आ	०	०	०	०	य	आ	य	आ	मा	दे	र

(अ[2])

म	ग	म	प	ऽ	ऽ	म	ध	ध	ध	ध	ध
अ	०	ङ्ग	ने	०	०	अ	ति	थि	बा	ल	क

धप	ध	नो	ऽ	ऽ	नो	न	न	न	न	न	न
त०	रु	द	०	०	ल	मा	न	वे	र	स्ने	ह

न	ऽ	न	सं	सं	सं	न	न	न	न	न	न
स	०	ङ्ग	ने	च	ल्	च	ल्	आ	मा	दे	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ब)

सं	न	सं	सं	न	सं	म	ध	ध	ऽ	ध	न
ध	रे	च	ल्	आ	य	श्या	म	व	॰	ङ्कि	म

← गाइये (अ¹)

न	ऽ	न	सं	सं	सं	संन	ऽ	ऽ	सं	न	सं
भ	॰	ङ्गि	ते	च	न्	च	॰	॰	ल	क	ल

नोसं	ऽ	नो	ध	प	म	ग	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ
सं ॰	॰	गी	ते	द्वा	रे	नि	॰	॰	ये	॰	॰

प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	सं	सं	गं	गं	गं	गं
आ	॰	॰	॰	॰	य	शा	खा	य	शा	खा	य

गं	गंपं	पं	गं	गं	रं	सं	न	सं	सं	न	सं
प्रा	ण ॰	आ	न	न्	द	को	ला	ह	ल	आ	य

गाइये (अ¹)+(अ²)+(अ¹) →

(स)

स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	ऽ	ऽ
ता	दे	र	न	वी	न	प	ल्	ल	वे	॰	॰

र	र	र	र	र	र	र	र	र	ऽ	ऽ	र
ना	चु	क	आ	लो	क	स	वि	ता	॰	॰	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ऽ	ऽ
दे	प	व .	ने	व	न	व	ल्	ल	भे	०	०

म	ऽ	म	म	म	म	प	मे	प	ऽ	ऽ	प
म	०	मं	र	गी	त	उ	प	हा	०	०	र

सं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गंमं	पं	ऽ
आ	जि	आ	व	ऐ	र	व	र्	ष	ऐ०	०	०

गंपं	पं	पं	मं	गं	गं	गंरं	मं	गं	रंसं	ऽ	ऽ
आ०	शी	र्	वा	दे	र	स्प	०	र्श	ने०	०	०

न	न	न	न	सं	सं	न	सं	सं	न	सं	सं
प	ड़्	क	मा	था	य	पा	ता	य	पा	ता	य

न	रं	सं	नो	ध	प	म	ग	म	म	प	ध
आ	म	रा	व	ती	र	धा	रा	ज	ल	आ	य

गाइये (अ¹)+(अ²)+(अ¹)→

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

48—ओरे गृहवासी

ओरे गृहवासी, खोल् द्वार खोल् लागल ये दोल।
स्थले जले वनतले लागल ये दोल।
खोल् द्वार खोल् ॥
राङा हासि राशि राशि अशोके पलाशे,
राङा नेशा मेघे मेशा प्रभात-आकाशे,
नवीन पाताय लागे राङा हिल्लोल ॥
वेणुवन मर्मरे दखिन-वातासे,
प्रजापति दोले घासे घासे।
मउमाछि फिरे याचि फुलेर दखिना,
पाखाय बाजाय तार भिखारिर वीणा,
माधवीविताने वायु गन्धे विभोल ॥

ताल कहरवा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **मे**

द्रुत लय (मम=192 मात्रा)

स	र
ओ	०

(अ)

ग	र	स	र	रध	ऽ	प	ऽ	स	ध	ध	ध़	प़	ध़	न	धप
रे	०	गृ	ह	वा०	०	सी	०	खो	ल	द्वा	र	खो	०	०	०ल

प	ध	न	न	धप	ऽ	ऽ	प	सं	सं	ऩ	न	ध	ध	प	प
ला	ग	ल	ये	दो०	०	०	ल	स्थ	ले	ज	ले	व	न	त	ले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पध	ध	ध	ध	प	प	प	म	ग	ग	ग	र	स	स	स	र
ला०	ग	ल	ये	दो	ल	द्वा	र	खो	ल	द्वा	र	खो	ल	ओ	०

(ब)

ग	र	स	र	रध	ऽ	प	ऽ	प	ग	प	प	प	ध	प	ध
रे	०	गृ	ह	वा०	०	सी	०	रा	ङ्ग	ह्रा	सि	रा	शि	रा	शि
धसं	सं	सं	संन	रंसं	ऽ	सं	ऽ	सं	रं	गं	गं	रं	रं	सं	सं
अ	शो	के	प०	ला०	०	शे	०	रा	ङ्ग	ने	शा	मे	घे	मे	शा
नरं	रं	सं	संन	धन	ऽ	धप	ऽ	गं	गं	गं	रं	रं	रं	सं	सं
प्र०	भा	त	आ०	का०	०	शे	०	न	वी	न	पा	ता	य	ला	गे
स	स	स	र	ग	ग	स	र	ग	ग	ग	र	स	स	स	र
रा	ङ्ग	हि	ल्	लो	ल	द्वा	र	खो	ल	द्वा	र	खो	ल	ओ	०

गाइये (अ) →

स	ध़	स	स	स	स	स	र	ग	ग	ग	ग	ग	ऽ	ग	र
वे	णु	व	न	म	र्	म	रे	द	खि	न	वा	ता	०	से	०
ग	गध	ध	ध	प	मेप	ग	र	ग	र	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प्र	जा०	प	ति	दो	ले०	घा	से	घा	०	से	०	०	०	०	०

(द)

प	ग	प	ध	प	ध	प	ध	धसं	सं	सं	संन	रंसं	ऽ	सं	ऽ
मौ	०	मा	छि	फि	रे	या	चि	फु०	ले	र	द०	खि०	०	ना	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संगं	गं	गं	रं	रं	रं	सं	सं	नरं	रं	सं	संन	धन	ऽ	धप	ऽ
पा०	खा	य	वा	जा	य	ता	र	भि०	खा	री	र०	वी०	०	णा०	०

गं	गं	गं	गं	रं	रं	सं	सं	स	स	स	र	ग	ग	स	र
मा	ध	वी	वि	ता	ने	वा	यु	ग	न्	धे	वि	भो	ल	द्वा	र

ग	ग	ग	र	स	स	स	र
खो	ल	द्वा	र	खो	ल	ओ	०

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

49—ए दिन आजि कोन् घरे

ए दिन आजि कोन् घरे गो खुले दिल द्वार ।
आजि प्राते सूर्य ओठा सकल हल कार ॥
काहार अभिशेकेर तरे सोनार घटे आलोक भरे,
उषा काहार आशिष वहि हल आँधार पार ॥
वने वने फुल फुटेछे, दोले नवीन पाता,
कार हृदयेर माझे हल तादेर माला गाँथा ।
बहु युगेर उपहारे वरण करि निल कारे,
कार जीवने प्रभात आजि घुचाय अन्धकार ॥

ताल दादरा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - तीव्र **मे,** *कोमल -* **धा** *और कोमल -* **ना**

द्रुत लय (मम=180 मात्रा)

(अ)

धसं	सं	सं	सं	सं	रंसंनं	न	न	संन	ध	ध	नध
ए	दि	न	आ	जि	०००	को	न	घ	रे	गो	००
प	प	ध	धप	म	प	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
खु	ले	०	दि	ल	०	द्वा	०	०	०	०	र
स	र	म	म	पम	गम	प	प	धा	धा	धा	प
आ	जि	०	प्रा	ते	००	सू	र्	य	ओ	ठा	०
सं	ऽ	ऽ	धा	प	ऽ	पना	ना	धा	धा	धा	नाधा
०	०	०	०	०	०	स	क	ल	ह	ल	००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ब)

प	ऽ	ऽ	1° ऽ	ऽ	ऽ^{ध}	2° ऽ	ऽ	प	प	^{म}प	ग	प	प	ध
का	०	०	०	०	र	०	०	र	का	हा	र	अ	भि	०

धसं	सं	सं	सं	^{र}सं	ऽ	सं	रं	रं	रं	संरं	गं
धे०	के	र	त	रे	०	सो	ना	र	थ	टे०	०

^{ग}रं	सं	सं	संन	ध	नध	प	प	ऽ	ध	ऽ	रं
आ	लो	क	भ०	रे	००	उ	षा	०	का	०	०

^{र}सं	ऽ	ऽ	ऽ	प	ध	सं	सं	सं	सं	सं	रंसं
हा	०	०	०	०	र	उ	षा	०	का	हा	र०

न	न	संन	ध	ध	नध	प	प	ध	^{ध}प	म	प
आ	शि	ष०	व	हि	००	ह	ल	०	आँ	धा	र

प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	स	र	म	म	^{प}म	गम
पा	०	०	०	०	र	आ	जि	०	प्रा	ते	००

प	प	धा	धा	धा	^{प}	सं	ऽ	ऽ	धा	^{प}	ऽ
सू	र्	य	ओ	ठा	०	०	०	०	०	०	०

^{प}ना	ना	धा	धा	धा	नाधा	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ^{ध}
स	क	ल	ह	ल	००	का	०	०	०	०	०

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(स)

स	नस	ध	धस	रस	र	ग	ऽ	धपमेप	ग	र	ग
व	ने॰	॰	व	ने॰	॰	फु	॰	॰॰ल	फु	टे	॰

रस	ऽ	ऽ	ऽ	न	स	ध	ध	स	स	रस	र
छे॰	॰	॰	॰	॰	॰	दो	ले	॰	न	वी॰	न

र	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽर	ग	प	प	प	धप	मेप
पा	ता	॰	॰	॰	॰	का	र	हु	द	ये॰	र॰

ग	प	ऽ	ध	न	धप	पन	न	संन	नध	धप	मेप
मा	भे	॰	ह	ल	॰॰	ता॰	दे	र॰	मा	ला	॰॰

(द)

			1°			2°								
ग	र	गम	ग	ऽ	रस	ग	ऽ	ऽ	प	मेप	ग	प	प	ध
गाँ	॰	॰॰	था	॰	॰॰	था	॰	॰	व	हु	॰	यु	गे	र

धसं	सं	ऽ	सं	रंसं	ऽ	सं	रं	रं	रं	संरं	गं
उ	प	॰	हा	रे	॰	व	र	ण	क	रि॰	॰

गंरं	सं	रंसं	संन	ध	नध	प	प	प	ध	ऽ	रं
नि	ल	॰॰	का	रे	॰॰	का	र	जी	व	॰	॰

रंसं	ऽ	ऽ	ऽ	प	ध	ध	सं	सं	सं	सं	रंसं
नै	॰	॰	॰	॰	॰	का	र	जी	व	ने	॰॰

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न	न	संन	ध	ध	नध	प	प	ध	धप	म	मप
प्र	भा	त ०	आ	जि	० ०	घु	चा	य	अ	न्	द ०
प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	स	र	म	म	पम	गम
का	०	०	र	०	०	आ	जि	०	प्रा	ते	० ०
प	प	धा	धा	धा	प	सं	ऽ	ऽ	धा	प	ऽ
सू	र्	य	ओ	ठा	०	०	०	०	०	०	०
पना	ना	धा	धा	धा	नाधा	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽध
स	क	ल	ह	ल	० ०	का	०	०	०	०	र

गाइये (अ) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

50—कोन आलोते

कोन् आलोते प्राणेर प्रदीप ज्वालिये तुमि धराया आस—
साधक ओगो, प्रेमिक ओगो, पागल ओगो, धराय आस ।।
एइ अकूल संसारे,
दु.ख आघात तोमार प्राणे वीणा झंकारे ।
घोर विपद-माझे
कोन् जननीर मुखेर हासि देखिया हास ।।
तुमि काहार सन्धाने
सकल सुखे आगुन ज्वेले वेड़ाओ के जाने !
एमन व्याकुल क'रे
के तोमारे काँदाय यारे भालोवास ।।
तोमार भावना किछु नाइ—
के ये तोमार साथेर साथि भावि मने ताइ ।
तुमि मरण भुले
कोन् अनन्त प्राणसागरे आनन्दे भास ।।

(बाउल)—ताल कहरवा

सब स्वर शुद्ध

कभी कभी अतिरिक्त स्वर - अति कोमल - नो

द्रुत लय (मम=240 मात्रा)

(अ1)

सऩ	ऽ	ऩ	ऩ	ऩ	ऽ	ऩ	स	स	ऽ	स	स	र	ऽ	र	र
को	०	न्	आ	लो	०	ते	०	प्रा	०	णे	र	प्र	०	दी	प

र	ऽ	प	ऽ	म	ऽ	ध	ऽ	प	ऽ	ऽम		ग	ऽ	र	ग
ज्वा	०	०	०	लि	०	०	०	ये	०	००	०	तु	०	मि	०

												1°				2°			
स	ऽ	ऽ	र	ग	मग	र	गर	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	ऽ	र	ग	स	ऽ	(ऽ)	(ऽ)
ध	०	०	०	रा	०य	आ	००	स	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अ²)

म ऽ प प	प ऽ प ऽ	प ऽ प प	प ध नो ध
सा ० ध क	ओ ० गो ०	प्रे ० मि क	ओ ० गो ०

प ऽ पम म	मग ऽ र ग	स ऽ ऽ र	ग मग र गर
पा ० ग ल	ओ ० गो ०	ध ० ० ०	रा ०य आ ००

	1°	2°
स ऽ ऽ ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ ऽ र ग
स ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०

← गाइये (अ¹)

(ब)

म म
ए इ

म ऽ प प	पध नो ऽ ध	प ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
अ ० कू ल	सं० ० ० सा	रे ० ० ०	० ० ० ०

पसं ऽ ऽ सं	सं ऽ रं रं	सं ऽ नो नो	ध ऽ प ध
दुः ० ० ख	आ ० घा त	तो ० मा र	प्रा ० णे ०

म ऽ प ऽ	प ऽ धनो ध	प ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ स स
वी ० णा ०	झं ० ० ० का	रे ० ० ०	० ० ए इ

र ग म प	पध नो ऽ ध	प ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
अ ० कू ल	सं० ० ० सा	रे ० ० ०	० ० ० ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पसं	ऽ	ऽ	सं	सं	ऽ	सं	रं	सं	ऽ	नो	नो	ध	ऽ	प	ध
दुः	०	०	ख	आ	०	घा	त	तो	०	मा	र	प्रा	०	णे	०

म	ऽ	प	ऽ	प	ऽ	धनो	ध	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	‖	प	प
वी	०	णा	०	झं	०	० ०	का	रे	०	०	०	०	०	‖	घो	र

म	ऽ	नो	नो	ध	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	प
वि	०	प	द	मा	०	झे	०	०	०	०	०	०	०	०	०

म	ऽ	म	प	प	नो	नो	ध	प	ऽ	म	म	ग	ऽ	र	ग
को	०	न	ज	न	०	नी	र	मु	०	खे	र	हा	०	सि	०

स	ऽ	र	ऽ	ग	मग	र	गर	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	‖	र	ग
दे	०	खि	०	या	० ०	हा	० ०	स	०	०	०	०	०	‖	०	०

गाइये (अ1)+(अ2)+(अ1) —→

(स)

म	म	म	ऽ	प	प	पध	नो	नो	ध
तु	मि	का	०	हा	र	सा०	०	न्	धा

प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पसं	ऽ	सं	सं	सं	ऽ	सं	रं
ने	०	०	०	०	०	०	०	स	०	क	ल	सु	०	खे	०

सं	ऽ	नो	नो	ध	ऽ	प	ध	म	ऽ	प	प	प	ऽ	धनो	ध
आ	०	गु	न	ज्वे	०	ले	०	बे	०	ड़ा	ओ	के		० ०	जा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1° प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	स	र	म	म	प	पध	नो	नो	ध
ने	०	०	०	०	०	तु	मि	का	०	हा	र	सन्	०	०	धा

2° प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	म	ऽ	नो	नो	ध	ऽ	नो	ऽ
ने	०	०	०	०	०	ए	मन	वया	०	कु	ल	क	०	रे	०

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	प	म	ऽ	ऽ	प	प	नो	नो	ध
०	०	०	०	०	०	०	०	के	तो	०	०	मा	०	रे	०

प	ऽ	म	म	ग	ऽ	र	ग	स	ऽ	र	ऽ	ग	मग	र	गर
काँ	०	दा	य	या	०	रे	०	भा	०	०	०	लो	००	बा	००

1° स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प	2° स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ग
स	०	०	०	०	०	ए	मन	स	०	०	०	०	०	०	०

गाइये (अ1)+(अ2)+(अ1) →

(द)

म	मम
तो	मार

प	ऽ	प	प	पध	नो	ऽ	ध	प	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
भा	०	व	ना	कि०	०	०	छु	ता	०	इ	०	०	०	०	०

पसं	ऽ	सं	ऽ	सं	ऽ	सं	रं	सं	ऽ	नो	नो	ध	ऽ	प	ध
के	०	ये	०	तो	०	मा	र	सा	०	थे	र	सां	०	थी	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1°

म	ऽ	प	ऽ	प	ऽ	धनो	ध	प	ऽ	ऽ	प	ऽ	ऽ	स	सस
भा	०	बि	०	म	०	००	ने	ता	०	०	इ	०	०	तो	मार

र	म	म	प	पध	नो	ऽ	ध	प	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
भा	०	व	ना	कि०	०	०	छु	ना	०	इ	०	०	०	०	०

2°

प	ऽ	प	ऽ	प	ऽ	धनो	ध	प	ऽ	ऽ	प	ऽ	ऽ	प	प
भा	०	बि	०	म	०	००	ने	ता	०	०	इ	०	०	तु	मि

म	ऽ	नो	नो	ध	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	प
म	०	र	ण	भु	०	ले	०	०	०	०	०	०	०	०	०

म	ऽ	म	प	प	नो	नो	ध	प	प	म	ऽ	ग	ऽ	र	ग
को	०	न	अ	न	न्	त	०	प्रा	ण	सा	०	ग	०	रे	०

								1°							
स	ऽ	र	ऽ	ग	मग	र	गर	स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प	प
आ	०	न	०	न्दे	००	भा	००	स	०	०	०	०	०	तु	मि

2°

स	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ग
स	०	०	०	०	०	०	०

गाइये (अ¹)+(अ²)+(अ¹) →

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिन्दी में शब्दार्थ

1. जीवनबन्धुरे—जीवनबन्धु को; सेई—उसी।

2. एसेछे—आए हैं; पियासे—प्यास से; गाहे—गाता है; आजि – आज।

3. के आसिल...कौन आया ? गेल मिशि—घुल मिल गया (अर्थात् विलीन हो गया) ; दुयार—द्वार; आपनि खुलिल— आप ही आप खुल गए; आपनि ज्वलिल—आप ही आप बल उठे; बाजिल—बज उठे; नव नव सुरे सुरे—नए-नए स्वरों में।

4. आंधारे—अन्धकार में; ज्वलिछे—प्रज्वलित हो रहा है, चमक रहा है; पाथारे—सागर में; होस ने—मत हो; दिशेहारा—दिग्भ्रान्त; हये—हो कर; बन्ध...गान—गान बन्द न करना; करि तोलो—कर लो; टुटिया—तोड़ कर; शोभन—शोभायुक्त, सुन्दर; भालोबासा—प्यार; चलिया येयो—चले जाना; भरिया...बुके—हृदय में सदा भर रखो; ताँहारि—उन्हीं की।

5. उद्यत—प्रवृत्त; सबार सङ्गे—सभी के साथ; बन्ध—बन्धन; नन्दित—आनन्दित।

6. ये...नमि—तुम-जिस-किसी ने मुझे सुख दिया है, उन्हींका परिचय दिया है, मैं सबको नमस्कार करता हूं; बेसेछ भालो—प्यार किया है; ज्वेलेछ—जलाया है, प्रज्वलित किया है; ताँहारि—उन्हीं का; आलो—आलोक, प्रदीप; पेयेछि—पाया है; काछे—निकट; एसेछे—आया है; आछे—विद्यमान है; एनेछे— ले आया है; गियेछे छेड़े—छोड़ कर गया है; टेनेछे...पाने—उन्हीं की ओर खींचा है; जानि ·· मानि—मैं जानूं या न जानूं; मानूं या न मानूं; मेलि—खोल कर; निखिले—जगत् में; ताँरि—उन्हीं का।

7. यखन—जब; शुकाये याय—सूख जाय; एसो—आओ; लुकाये याय—छिप जाय; ढाके—ढक ले; चारि धार—चारों ओर; आपनारे.. कृपण—अपने को कृपण बना; कोणे—कोने में; पड़े थाके—पड़ा रहे; दुयार खुलिया—द्वार खोल कर; धुलाय—धूल से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कराना; **सोना...श्राला**—(हम लोगों की) सम्पूर्ण चिन्ताएँ सोना हो जाएँगी (श्रौर) श्रन्धकार, प्रकाश हो जायगा।

19. **एइ...मने**—जो मेरे मन के भीतर थी (वह) इसी शरत् के प्रकाश के कमल-वन में वाहर हो कर विहार करती है; **तारि...माझे**—उसी का सोने का कंकरण आज प्रभात की किरणों में बजता है; **हाश्रोयाय...क्षणे**—हवा में (उसका) आँचल काँपता है और क्षण-क्षण छाया फैलाता है; **श्राकुल ...तले**—चंचल केशों के परिमल में शेफाली के वन की उदासीन हवा पेड़ के नीचे पड़ी रहती है; **हृदय ...दुलाय**—हृदय के भीतर (वह) हृदय को श्रान्दोलित करती है; **बाहिरे...भुलाय**—बाहर वह जगत् को मुग्ध करती है; **श्राजि...गगने**—श्राज उसने श्रपनी श्राँखों की चितवन को नील श्राकाश में प्रसारित कर दिया है।

20. **तोमार...ढाका**—तुम्हारी श्राँखें क्यों ढँकी हुई हैं; **हिमेर...श्राँका**—कुहासे का सघन घूंघट धूमिल रंग से श्रंकित है; **सन्ध्या...कुयाशाते**—तुम्हारे हाथ के सान्ध्य-दीप को कुहरे से मलिन देखता हूं; **माखा**—सिक्त; **भरे दिले**—भर दिया; **दिगङ्गनार...दाने**—दिग्वधुश्रों का श्राँगन श्राज तुम्हारे दान से पूर्ण है; **श्रापन...पेते**—श्रपने दान की श्रोट में श्रासन बिछा कर तुम क्यों (छिपी) रहीं; **श्रापनाके...राखा**—श्रपने को इस प्रकार कैसा तुम्हारा छिपा रखना है।

21. **गगनेर दीपगुलिरे**—श्राकाश के दीपकों को; **हेमन्तिका...घिरे**—हेमन्तिका ने श्रंचल से घेर कर छिपा लिया; **घरे...श्रालो**—घर-घर संदेश भेजा, दीपावली में दीप जलाश्रो; **साजाश्रो**—सजाश्रो; **श्रालोय**—श्रालोक से; **धरित्रीरे**—पृथ्वी को; **शून्य...बागान**—फूल का बाग इस समय रीता है; **दोयेल**—(एक पक्षी); **गाहेना**—गाते नहीं; **याय**—जाता है; **याक**—जाय; **कालो**—काला; **शुनाश्रो**—सुनाश्रो; **देवतारा...मेये**—देवगण श्राज प्रतीक्षा कर रहे हैं—पृथ्वी के पुत्र-पुत्रियाँ, जागो; **श्रालोय...यामिनीरे**—रात्रि को श्रालोक से जगाश्रो; **एल...फुरालो**—श्रन्धकार श्राया, दिन समाप्त हो गया; **तामसीरे**—श्रन्धकारमयी को।

22. **शीतेर...डाले**—शीतकालीन हवा का नर्तन इस श्राँवले की डाल-डाल में लगा; **पातागुलि ...ताले**—पत्तियों को सिहरा कर (सिहरन पैदा कर) ताल-ताल पर (उस नर्तन ने) झरा दिया; **उड़िये...शेषे**—उड़ा देने के मतवालेपन ने श्रा कर श्रन्त में उसे कंगाल बना दिया; **तखन...श्रन्तराले**—उस समय उसके फल की बहार श्रौर श्रन्तराल में (छिपी) नहीं रही; **शून्य...वेला**—शून्य (रिक्त) करके भर देना (ही) जिसका खेल है, उसी के लिए (उसीकी प्रतीक्षा में) मैं सब समय बैठा रहा; **शीतेर...डेके**—शीत का स्पर्श रह-रह कर संभवतः पुकार-पुकार जाता है; **सब...सकाले**—सब कुछ खो देने का मेरा समय कब किस प्रभात में होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

23. **कोरो...तारे**—उसे दु:खित न करो; **विड़म्बित**—वंचित; **आजि...खुलियो**—आज हृदय-दल खोलना; **आजि...भुलियो**—आज अपना-पराया भूल जाना; **एइ**—इस; **तव...तुलियो**—अपने गंध को तरंगित करना; **एइ...भारे**—इस बाहर की दुनिया में दिशा भूल कर राशि-राशि माधुरी बिखेर देना; **एकि...बाजे**—वन में यह कैसी निविड़ वेदना है (जो) आज पल्लव-पल्लव में कसक रही है; **दूरे...साजे**—दूर आकाश में किसका पथ निहारती हुई आज व्याकुल वसुन्धरा सज रही है; **मोर...लागिछे**—मेरे प्राणों में दक्षिणवायु लग रही है; **कारे...मागिछे**—द्वार-द्वार पर हाथ से आघात कर किसकी याचना कर रही है; **एइ...जागिछे**—सुगन्धि से विह्वल यह रात्रि किसके चरणों में धरणी-तल पर जाग रही है; **तव...कारे**—किसके लिये तुम्हारा (यह) गम्भीर आह्वान है।

24. **फागुन...पाताय**—वन-वन, डाल-डाल, फूल-फूल, पत्ती-पत्ती में फाल्गुन (का स्पर्श) लगा है; **आड़ाले**—अन्तराल में; **कोणे-कोणे**—कोने-कोने में; **रङे...आकाश**—विभिन्न रंगों से आकाश रंग गया; **निखिल**—समस्त विश्व; **येन**—जैसे; **मर्मरे**—मर्मर करता है; **हेरो**—देखो; **करे**—करता है; **हासिर...खने**—उसकी हँसी के आघात से (आकाश) और चुप नहीं रह पाता, क्षण-क्षण काँप-काँप उठता है; **वातास...परिचय रे**—समस्त वन में पवन दौड़ लगा रहा है, फूलों का परिचय नहीं जानता; **ताइ...जने**—संभवत: इसीलिये बारबार कुञ्ज के द्वार-द्वार, जन-जन से पूछता फिर रहा है।

25. **बड़ो...प्राणे**—बड़ी व्यथा के समान तुम मेरे प्राणों में कसक उठे हो; **मन...जाने**—मन कैसा करता है मन ही मन, इसे मन ही जानता है; **तोमारे...ध'रे**—रात दिन तुम्हें हृदय में रखे हुए हूँ; **चेये...पाने**—भर-आँख (तुम्हारे) मुख की ओर निहारता रहता हूं; **बड़ो**—बड़ी; **बड़ो...लागि**—तुम्हारे लिये बड़ी दयनीय (विनीत) कामना है; **बड़ो...जागि**—बड़े सुख, बड़े दु:ख, बड़े अनुराग से (तुम्हारे लिये) जागा हुआ हूं; **ए जन्मेर...हबार**—जो कुछ होना था वह इस जन्म भर के लिये हो गया; **भेसे...टाने**—मृत्यु के खिंचाव से मन-प्राण बह गए हैं।

26. **दे...से...**तुमलोग पढ़ दो (मुझे पढ़ कर सुना दो), आज उसने कौनसी बात लिखी है; **तार...एसे**—दूर से उसकी वाणी की पारस-मणि मेरे प्राणों को आ कर छुए; **शस्य....घ्रानि**—अन्न वाले खेत का गन्ध वह (मेरे इस) एकान्त घर में ला दे; **क्लान्त...केशे**—थकित गति से चलने वाली बटोही-हवा मेरे खुले केशों में लगे; **नील...मने**—नीले आकाश के सुर को ले कर मेरे एकान्त मन में बजावे; **बरन**—वर्ण, रंग; **मेलुक**—प्रसारित कर दे; **डोबार**—डूबने की; **राङा**—लाल; **बेलाय**—वेला में; **छड़ाब...खेलाय**—रंगों के खेल में प्राणों को बिखेर दूंगा; **आपन...कोणे**—अपने-आप आँखों के कोनों में; **अश्रु...भेसे**—आँसुओं की झलक तिर उठेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

27 **आमार...गो**—मेरे प्राण जो चाहते हैं तुम वही हो, अजी, तुम वही हो; **तोमा...गो**—इस संसार में तुम्हें छोड़ कर मेरा और कोई नहीं है, कुछ नहीं है; **तुमि...याओ**— अगर तुम सुख नहीं पाओ (तो) जाओ, सुख की खोज में जाओ; **आमि...गो**—मैंने तुम्हें हृदय के भीतर पाया है, (अब) और कुछ नहीं चाहती; **आमि...वास**—मैं तुम्हारे ही विरह में विलीन रहूंगी, तुम्हीं में वास करूँगी; **यदि...आस**—यदि और किसी को प्यार करो, यदि लौट कर न आओ; **तबे...पाइ गो**—ऐसा हो कि तब तुम जो चाहते हो वही पाओ, मैं (चाहे) जितना दुःख पाऊँ।

28. **तुमि...एखनि**—तुम अभी न जाना; **एखनो...रजनी**— अबी भी रात्रि (बाक़ी) है; **आँधारा**—अन्धकार पूर्ण; **बड़ो...दीप**—बड़ी साध से दीप जलाया था; **गाँथिनु माला**—माला गूँथी थी; **चिरदिने...दरशन**—हेबन्धु, बहुत दिनों में तुम्हारे दर्शन पाए; **आजि...पारे**—आज अकूल के पार जाऊँगी; **भासाब...तरणी**—जीवन की नौका प्रेम के समुद्र में बहा दूँगी।

29. **रोदन...आगे**—रुदन से भरा यह वसन्त (इसके) पहले शायद कभी नहीं आया; **मोर...रागे**—मेरी विरह वेदना किंशुक (पलास) के रक्तिम (लाल) रंग में रँग गई; **कुञ्जद्वारे...पत्रालिका**—कुञ्जद्वार पर वनमल्लिका नवीन पत्रालिका (कपोलों पर चित्ररचना अथवा किसलय-समष्टि) धारण कर सजी है; **सारा...जागे**—समस्त दिन-रात अनिमेष दृष्टि से वह (वनमल्लिका) किसकी वाट जोहती जाग रही है; **एकेला**—अकेला; **गाहे**—गाता है; **बुझि**—ऐसा लगता है जैसे; **कुञ्ज...चहे**—कुञ्जवन की मेरी सभी कलियाँ आवरण के बन्धन को छिन्न करना चाहती हैं; **आमि...बारे**— मैं इन प्राणों के रुद्ध द्वार पर बार-बार व्याकुल हाथों से आघात करती हूं; **देओया...लागे**—मन में यही व्यथा होती है कि अपने-आपको देना जो नहीं हुआ।

30. **मोर**—मेरे; **एइ...तीरे**—इस भारत के महामानव-सागर के तीर पर; **हेथाय...नर देवतारे**—यहाँ खड़े हो, दोनों बाँहें बढ़ा कर नर-देवता को नमस्कार करता हूं; **उदार...तारे**—उदार छन्दों में, परम आनन्द से उन्हीं की वन्दना करता हूं; **एइ ये**—यह जो; **धृत**—धारण किये हुए; **प्रान्तर**—तरुशून्य सुदूर पथ या मैदान; **हेथाय**—यहाँ; **हेरो**—दर्शन करो; **केह...धारा**—कोई नहीं जानता, किसके आह्वान पर कितने मनुष्यों की धारा; **दुर्वार...हारा**—दुर्दमनीय स्रोत में कहाँ से आई (और इस) समुद्र में खो गई; **हेया**—यहां; **पाठान**—पठान; **एक...लीन**—एक देह में लीन हो गए; **पश्चिमे...उपहार**—आज पश्चिम ने द्वार खोला है, वहाँ से सभी उपहार लाते हैं; **दिबे...फिरे**—देंगे और लेंगे, विलीन करेंगे और विलीन हो जायेंगे, लौट कर नहीं जाएँगे; **एसो**—आओ; **इंराज** (इसका उच्चारण इंग्राज है)—अंग्रेज; **खृस्टान**—ईसाई; **एसो...सबाकार**—आओ ब्राह्मण, मन को पवित्र कर सबका हाथ पकड़ो; **होक...भार**—अपमान का सब भार दूर हो; **मार...त्वरा**—मां के अभिषेक में शीघ्र आओ, आओ; **मंगल...भरा**—मंगलघट भरना जो नहीं हुआ; **सबार...नीरे**—सबके स्पर्श से पवित्र किए हुए तीर्थ-जल से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

31. **यदि...रे**—यदि तेरी पुकार सुन कोई न आवे तो अकेले चलो; **एकला**—अकेले; **यदि... कय**—यदि कोई बात न बोले; **यदि...भय**—यदि सभी मुख फिराए रहें, सभी भय करें; **तबे...रे**—तब प्राण खोल कर, (साहस से) मुँह खोल अपने मन की बात अकेला ही कह; **यदि...याय**—यदि सभी लौट जायें; **यदि...चाय**—दुर्गम पथ पर जाते समय कोई फिर कर न ताके; **तबे...रे**—तब पथ के काँटों को लहूलुहान पैरों तले तुम अकेले रौंदो; **आलो...धरे**—दीप (जलाए) न जले; **यदि...धरे**—यदि आंधी-पानी में, अंधेरी रात में घर के दरवाज़े बन्द हो जायें (सब लोग दरवाज़ा बन्द कर लें); **तबे...रे**—तब वज्राग्नि से अपनी छाती के पंजर को प्रज्वलित कर अकेले ही जलते रहो।

32. **कत**—कितने; **वितरिछ**—वितरण कर रही हो।

33. **ओ...माथा**—ओ मेरे देश की मिट्टी, तुम पर मस्तक टिकाता हूं; **तोमाते**—तुम में; **पाता**—फैला हुआ है; **तुमि...सने**—तुम मेरी देह में घुली-मिली हो; **तुमि...मने**—तुम मेरे मन-प्राण में समाई हो; **तोमार...गाँथा**—तुम्हारी वही श्यामवर्ण कोमल मूर्ति अन्तरतम में गुँथी हुई है; **तोमार...बुके**—तुम्हारी गोद में मेरा जन्म हुआ है, तुम्हारी छाती पर मेरी मृत्यु होगी; **तोमर...सुखे**—सुख, दुःख में तुम्हारे ऊपर ही मेरी क्रीड़ा होगी; **तुमि...दिले**—तुमने मुँह में अन्न दिया; **तुमि...जुड़ाइले**—तुमने शीतल जल से जुड़ा दिया (शीतल किया); **तुमि...माता**—तुम सब सहने वाली, सब वहन करने वाली, माता की माता जो हो; **अनेक...मा**—माँ, बहुत तुम्हारा खाया है, बहुत (तुम्हारा) लिया है; **तबु... दियेछि**—इतना होने पर भी यह नहीं जानता कि भला तुम्हें क्या दिया है; **आमार...काजे**—व्यर्थ के कामों में मेरा जन्म गया; **आमि...माझे**—मैंने घर (ही) के भीतर दिन काट दिया; **आमाय**—मुझे; **शक्ति दिले**—शक्ति दी।

34. **दिस...करे**—समय का विचार करते-करते व्यर्थ समय न काट दे (बिता दे); **की...हबे ना**—क्या रहेगा (और) क्या नहीं रहेगा, क्या होगा (और) क्या नहीं होगा; **हिसाबि**—हिसाबी; **ए... मिशाबि**—इस संशय के भीतर क्या अपनी दुश्चिन्ता को मिलाएगा; **येमन...पर्वते**—जैसे दुर्गम पर्वत से झरना उतरता है; **निर्भवनाय...पथे**—(वैसे ही) निश्चिन्त होकर अज्ञात पथ पर कूद जा; **जागबे ...माना**—जितनी ही तुझे बाधा मिलेगी, उतनी ही (तेरी) शक्ति जागेगी; **अजानाके...जाना**—अज्ञात को वश में कर तू अपना ज्ञात (परिचित) बना लेगा; **चलाय...भेरी**—(तेरे) हर चलने में (पद-पद पर) जय भेरी-बजेगी; **पायेर...देरि**—पैरों के वेग से ही रास्ता कट जाता है, (अब) और देर न कर।

35. **पारे**—उस पार; **तोमरा**—तुम (सब); **तोमादेर स्मरि**—तुम्हारा स्मरण करता हूं; **ज्वले गेल**—प्रदीप्त कर गए (तुम); **ये**—जो; **होक...हो तारि**—उसी की (उसकी); **बन्दीरे**—बन्दी को (बन्दियों को); **दिए गेले**—दे गए; **मुक्तिर**—मुक्ति की; **सत्येर वरमाले**—सत्य की वरमाला से; **साजाले**—सजा दी (तुमने); **रेखे गेले**—रख गए, छोड़ गए; **से**—वह।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

36. सबारे...आह्वान—सब का आह्वान करता हूं; एसो—आओ; हृदय...पाति—हृदय विछा दो; हेथांकार—यहाँ के; करुक—करें; तोमादेर—अपने; बिछाये...गान—गीत-गान विछा देना; सुन्दरेर...स्थान—'सुन्दर' के चरणपीठ-तले जहाँ कल्याण-दीप जलता है, वहाँ स्थान पाओगे।

37. ग्राम...भुलाय रे—ग्राम से होकर जाने वाला वह लाल मिट्टी का पथ मेरे मन को मुग्ध करता है; कार...रे—किसकी ओर हाथ बढ़ा कर मन धूलि में लोट जाता है; ओ ये...धरे—वह पग-पग पर पैरों को पकड़ कर मुझे घर से बाहर जो करता (ले जाता) है; ओ ये...चुलाय रे—वह मुझे काढ़ (निकाल)कर लिए जा रहा है, (न-जाने) किस चुल्हे में (लिए) जा रहा है (विनाश की ओर लिए जा रहा है); कोन्...देखाबे—किस मोड़ पर कौन-सा धन दिखाएगा; कोन्खान...ठेकाबे—किस जगह किस संकट में डाल देगा; कोथाय...रे—कहाँ जा कर अन्त मिलेगा (यह)सोचे नहीं सोचा जाता।

38. पुण्य—पवित्र; अङ्गन—आंगन; कर'—करो; बाजह—वजाओ; बल'—बोलो; एस'—आओ; नाश'—नष्ट करो; माझ'—में; राज'—विराजो।

39. हिंसाय...पृथ्वी—हिंसा से पृथ्वी उन्मत्त (है); तार—उसका; बन्ध—बन्धन; नूतन...प्राणी—जितने प्राणी हैं सब तुम्हारे नवीन जन्म के लिए कातर हैं; कर'—करो; आन'—लाओ; निष्यन्द—क्षरण; स्राव; चिरमधु निष्यन्द—चिरन्तन मधु का झरना; एस'—आओ; दाओ—दो; लाओ...भिक्षा—सबके अहंकार को भिक्षा-स्वरूप ग्रहण करो; लोक...शोक—सभी लोग (अथवा समस्त लोक) शोक भूल जायँ; खण्डन...मोह—मोह को तोड़ो; होक—हो; लभुक—लाभ करे, प्राप्त करे; परिल तिलक—तिलक लगाया।

40. नृत्येर—नृत्य की; ताले-ताले,—ताल-ताल पर, ताल के द्वारा; घुचाओ—मिटा दो, मेट दो; भाङाओ—तोड़ दो, तुड़वा दो; जागाओ—जगा दो; सुरेर—स्वर का; तोमार—तुम्हारे; परशे—स्पर्श से; सरसे—सरोवर में; युगे-युगे-काले-काले—प्रति युग में, प्रति काल में; सुरे-सुरे ताले-ताले—प्रति स्वर से, प्रति ताल के प्रभाव से; ढेउ—लहर; तुले दाओ—उठा दो; मातिए—मत्त बनाकर; भरुक—भरे; नृत्ये—नृत्य में; मुक्तिर—मुक्ति का; विश्व तनुते—विश्व-देह में; अणुते अणुते—प्रति अणु में; नाचेर—नृत्य के; दोलाय—हिंडोले में; बांधन—बन्धन; पराय—पहनता है (बन्धन में डालना है); खोलाय—खोलता है (बन्धन, मुक्त करता है); अन्त—अन्त में, अन्ततः; के—कौन; तार—उसका; भाविते—सोचने में (यह सोचकर); लागाया धंद—विभ्रम में पड़ जाना पड़ता है; नत्येर वशे—नृत्य के वश में होकर; हल—हो गए; घिरे—घेर कर; ज्योति मञ्जीरे—ज्योति के नूपुर में; बाजिले—बज उठे; नृत्येर—नृत्य की; प्राण वेदनाय—प्राणवेदना के वर; जागे चेतनाम—चेतना में जाग्रत होना है; हय—होता है; मोर संसारे—मेरे संसार में; जटाजाले—जटाजाल में; लोके-लोके—लोक-लोक में; घुरे एसेछि—फिर आया हूं; घूर्णिताले—घूर्णिताल से प्रेरित होकर; ओगो—हे; नाचेर—नृत्य का;

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

41. आमरा...दूत—हम लोग नवीन यौवन के ही दूत हैं; आमरा...भाङि—हम लोग बाड़ को तोड़ते हैं; आमरा...राङि—हम लोग अशोकवन के लाल नशे में रंजित होते हैं; झञ्झार...दिइ—तूफ़ान के वन्धन को (हम लोग) छिन्न-भिन्न कर देते हैं; आमरा...भुल—हम लोग भूल करते हैं; अगाध...कूल—अगाध जल में कूद जूझते हुए किनारा पाते हैं; येखाने...प्रस्तुत—जीवन-मरण की आँधी में, जहां (भी हमारी) पुकार होती है, हम लोग प्रस्तुत रहते हैं।

42. संकोचेर...अपमान—संकोच की कातरता अपने को ही अपमानित करना है; संकटेर...म्रियमाण—संकट की कल्पना से मरणापन्न न होना; मुक्त...भय—भय से मुक्त हो; आपना-माझे—अपने भीतर; दुर्बलेरे—दुर्बल की; हानो—विनष्ट करो; निजेरे...जानो—ऐसा हो कि अपने को दीन और नि:सहाय कभी न मानो; निजेर...संशय—अपने ऊपर निर्भर रहने में संदेह न रखो; यबे—जब; करिबे—करेगा; हये—हो कर, पण...प्राण—प्राणों की बाज़ी लगाना; दुहरू...परिचय—कठिन काम में अपना ही कठिन परिचय देना।

43. चक्र—पहिया; कभु—कभी; खनित्र—खन्ता, (मिट्टी खोदने का यंत्र); अन्त्र—अंतड़ी।

44. आजि...पाने—आज इस दिन के प्रथम गान में मेरा जीवन तुम्हारी ओर ही विकसित हो उठे; तोमार वाणीते—तुम्हारी वाणी में; दाय...दाने—तुम्हारे हाथों के दान से मन को अक्षय धन से भर देती है; ए...जागुक—इस शुभ लग्न में जागे; आनुक—लाए; या-किछु—जो कुछ; याहा-किछु—जो कुछ; नवीनेर...विलिन—नवीन के भीतर वह विलीन हो; धुये...स्नाने—जो कुछ पुराना (और) मलिन (है); नव-आलोक के स्नान से धुल जाय।

45. धर'...गान—निर्भय गान प्रारम्भ करो; होक—हो; लह'...'परे—उस अभिषेक को ललाट पर लो (ग्रहण करो); निक—(तुम्हारे प्राण) लें (ग्रहण करें); हते—से; निष्ठुर...सम्मान—कठिन संकट (तुम्हें) सम्मान दे; दु:खई—दु:ख ही; चल'—चलो, कर'—करो; हओ—होओ।

46. एसो—आओ; ('देवता' यहां संस्कृत के अनुसार स्त्रीलिंगवाचक भी है); ए भवन—इस गृह को; सबार—सब का; भरि—भर कर; शिखाओ—सिखाओ; करिते क्षमा—क्षमा करना; जागाये···मने—मन में जगा रखो; उपमा—दृष्टान्त; देहो—दो; वितरो—वितरण करो; पूरिया—पूर्ण करो; हबे—होगा; तोमारे...करि—तुम्हें वरण करके।

47. यह गान शान्तिनिकेतन में 'वृक्षरोपण' उत्सव के अवसर पर लगाये जाने वाले पौधों को संबोधन कर गाया जाता हैं। अब यह उत्सव रवीन्द्रनाथ की निधन-तिथि को मनाया जाता है। आय...अङ्गने—हम लोगों के आंगन में आयो; भङ्गिते—भंगिमा से; द्वारे...आय—द्वार पर ले आ; शाखाय-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाखाय—शाखा-शाखा में, तोदेर—तुम लोगों के; नाचुक—नाचे; सवितार—सूर्य का; आजि...ने—आज श्रावण की वर्षा में आशीर्वाद का स्पर्श लो; पड़ुक—पड़े; माथाय—माथे पर; पाताय-पाताय—पत्ती-पत्ती पर।

48. लागल...दोल—दोल (आन्दोलन, होली का स्पर्श) जो लगा है; राङा...पलाशे—अशोक, पलाश में राशी-राशी लाल हँसी (छाई) है; राङा—लाल, रंगीन; नेशा—नशा; मेशा—घुला-मिला; नवीन...हिल्लोल—नवीन कोंपलों को अरुण हिलोरा छू रहा है; वेणु वन...बातासे—दक्षिण पवन में बाँस का वन मर्मर करता है; प्रजापति...घासे—तृण-तृण पर तितलियां थिरक रही हैं; मउमाछि... वीणा—मधुमक्खियां फूलों से दक्षिणा (दान) की याचना करती-फिरती हैं, अपने परों से भिखारी की बीन बजाती हैं; गन्धे—गन्ध से; विभोल—विभोर।

49. ए—यह; आजि—आज; कौन घरे—किस घर में; खुले दिल—खोल दिया; प्राते—प्रातः काल में; ओठा—उगना, उदय; कार—किसका ? काहार—किसके ? अभिशेकेर तरे—अभिषेक के लिए; सोनार घटे—स्वर्णघट में; भरे—भरती है, भरकर, भरे हुई; बहि—लिए हुई; हल—हुई; आंधार—अंधकार; वने वने फुल फुटेछे—वन-वन में फूल खिले; दोले—डोल रहे हैं; पाता—पत्ते; हृदयेर माझे—हृदय में; गाँथा—ग्रन्थन; बहु युगेर उपहारे—अनेक युगों के उपहारों ने; करि निल—कर लिया; कारे—किसे ?; जीवने—जीवन में; घुचाया—मिटाता है, मेट रहा है।

50. कोन् आलोते—किस आलोक से; ज्वालिये—जला कर; धराय—पृथ्वी पर; आस—आते हो; ओगो—अजी ओ; एइ—इस; देखिया—देखकर; हास—हँसते हो; तुमि...जाने—कौन जानता है तुम किसकी खोज में सभी सुखों को आग लगा कर भटकते फिरते हो; एमन...क'रे—ऐसा व्याकुल बना कर; के...भालोबास—कौन तुम्हें रुलाता है—जिसे तुम प्यार करते हो; तोमार...नाई—तुम्हें कोई चिन्ता नहीं; के...ताइ—कौन है तुम्हारा संग-साथी यही मन में सोचता हूं; भुले—भूल कर; आनन्दे भास—आनन्द से बहते हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रथम पंक्ति की सूची

	पृष्ठ-संख्या
अन्तर मम विकशित करो	11
अयि भुवनमनोमोहिनी	117
आछे दुःख, आछे मृत्यु	26
आजि प्रणमि तोमारे	41
आजि मम मन चाहे जीवनबन्धुरे	1
आजि वसन्त जाग्रत द्वारे	77
आमरा नूतन यौवनेरइ दूत	164
आमारा बेंधेछि काशेर गुच्छ	57
आमार पराण याहा चाय	92
आय आमादेर अंगने	186
एइ शरत्-आलोर कमलवने	62
ए दिन आजि कोन् घरे	192
एसो नीपवने छायावीथितले	54
एसो हे गृहदेवता	182
ओ आमार देशेर माटि	120
ओइ आसनतलेर माटिर'परे	21
ओरे गृहवासी, खोल् द्वार खोल्	189
ओरे, नूतन युगेर भोरे	125
ओरे भाइ, फागुन लेगेछे वने वने	81
कोन् आलोते प्राणेर प्रदीप	196
ग्रामछाड़ा ओइ राङा माटिर पथ	135
जीवन यखन शुकाये याय	18
तुमि येयो ना एखनि	95
दारुण अग्निबाणे रे	44
दुःखेर तिमिरे यदि ज्वले	29
दे पड़े दे आमाय तोरा	88

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ-संख्या

नमो यन्त्र, नमो—यन्त्र	172
निबिड़ घन आँधारे ज्वलिछे ध्रुवतारा	9
नृत्येर तग्ले तग्ले	150
बड़ो वेदनार मतो बेजेछ तुमि	84
बादल-बाउल बाजाय रे एकतारा	51
भेंगेछ दुयार, एसेछ ज्योतिर्मय	37
मन्दिरे मम के आसिले हे	7
मरण सागर पारे तोमरा अमर	129
मातृमन्दिर-पुण्य-अंगन कर'	138
यदि तोर डाक शुने केउ ना आसे	110
ये-केह मोरे दियेछ सुख	14
ये ध्रुवपद दियेछ बाँधि विश्वताने	33
रोदनभरा ए वसन्त	98
शाङनगगने घोर घनघटा	47
शीतेर हाओयार लागल नाचन	74
शुभ कर्मपथे धर' निर्भय गान	179
संकोचेर विह्वलता निजेर अपमान	168
सबारे करि आह्वान	132
सुधासागरतीरे हे, एसेछे नरनारी	4
हाय हेमन्तलक्ष्मी, तोमार नयन केन ढाका	65
हिंसाय उन्मत्त पृथ्वि	143
हिमेर राते ओइ गगनेर दीपगुलिरे	70
हे चिरनूतन, आजि ए दिनेर प्रथम गाने	176
हे मोर चित्त, पुण्य तीर्थे जागो रे धीरे	102

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi